CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हि.२११५
१९३७

हयपति शिवाजी

VHP
ब्र.१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लौटानेकी
तिथि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छत्रपति शिवाजी

[ऐतिहासिक नाटक]

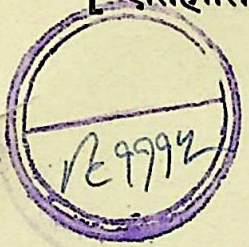

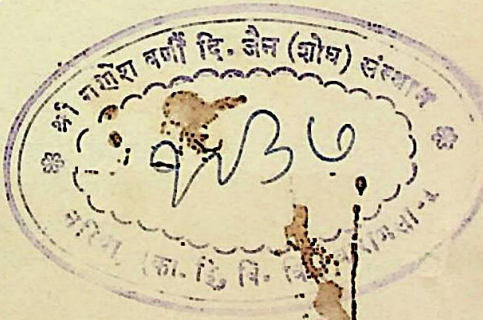

अक्षयवट त्रिपाठी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक व स्वत्वाधिकारी
मनवहालप्रसाद सर्राफ
बबुरी, वाराणसी

प्रथम संस्करण १९५८
द्वितीय संस्करण १९६६
मूल्य एक रुपया

मुद्रक
महावीर प्रेस
बी० २०/४४ भेलूपुर
वाराणसी–१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशकीय निवेदन

पुण्यश्लोक शिवाजीका जीवनवृत्त भारतीय इतिहासका एक गौरवमय अध्याय है, अतः स्वाधीन भारतमें इसकी पुनरावृत्तिका विभिन्नरूपमें होते रहना स्वभाविक ही समझा जाना चाहिये। वस्तुतः इसी दृष्टिसे श्रीमन्त भोंसलेके दिव्य जीवनको नटकीयरूपमें लेकर मेरा प्रकाशन यद्यपि आत्मसन्मानका विषय है, तथापि मेरी अत्युत्कट अभिलाषा है कि इस सांस्कृतिक पृष्ठभूमिके माध्यमसे अवतरित होनेवाले नाटककी अधिकाधिक आधिकारिक आलोचनायें हों। आजके युगमें इस प्रकारके नाटकोंका कितना महत्व है, इसे किसीसे कहने-सुननेकी कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती, क्योंकि इस प्रकाशनका उद्देश्य केवल व्यावसायिक दृष्टिकोणपर आधारित नहीं है; अतः पोषक साहित्यके नाते विवेकपूर्ण प्रतिभासम्पन्न समाजमें इस कृतिका समादर होगा, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।

जहाँतक आजकी कलाकृतियोंके मापदण्डकी परिधिका प्रश्न है; मेरा दृष्टिकोण तो इस विषयमें यही है, कि यह काव्य-भाषा श्रीमन्त भोंसलेके लोकत्तर जीवनसे स्वयं प्रकाशित होती हुई राष्ट्रीय चेतनाको प्रकाशके रूपमें परिणत करनेमें क्षम हो।

इस युगकी विचारधाराओंमें वहनेवाले, कलामर्मज्ञोंको सम्भव है यह नाटक अदृश्य शक्तियोंपर आवश्यकतासे अधिक विश्वास रखनेके कारण अरुचिकर जँचे, किंतु किसी भी रूपमें ऐसी विचारधाराको तिलाञ्जलि देना, इस नाटकके सिद्धान्तोंके विपरीत होता; अतः बाध्य होकर ऐतिहासिक तत्त्वोंका यथाशक्ति पोषण करतेहुये ऐसा करना आवश्यक हुआ है। इसीसे प्रकाशकीयरूपमें सुधीजनोंसे मेरा यही निवेदन है, कि सांस्कृतिक सामञ्जस्यकी नैसर्गिक भूमिकाके रूपमें अपने सामने आने वाले इस 'छत्रपति शिवाजी' को स्वीकार करें। नाटकके इस द्वितीय संस्करणके सम्बन्धमें मेरा यही कथन है, कि नये कलेवरके साथ ही इसमें कुछ परिवर्तन भी हुये हैं, जो सुधीजनोंसे क्षम्य होंगे। आशा है, प्रथम संस्करणके समान इसका भी नीर-क्षीर-विवेचक समादर करेंगे।

महावारुणी, श्रीसंवत् २०२२ विक्रमी

—मनवहालप्रसाद सर्राफ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पात्र-सूची

शाहजी भोंसले	शिवाजीके पिता
शिवाजी	भारतीय महाराष्ट्रमें हिन्दू-पद-पादशाहीके संस्थापक
शम्भाजी	शिवाजीके ज्येष्ठपुत्र
हीराजी फ़रजन्द	शिवाजीके सोतेले भाई
दादाजी कोणदेव	शाहजीकी पूनाकी जागीरके प्रबन्धक
समर्थ रामदास	शिवाजीके दीक्षागुरु
तानाजी मालसुरे	शिवाजीके प्रारम्भिक मावले सहयोगी
मोरोपन्त पिंगले पेशवा	अष्टप्रधानके अध्यक्ष
नीराजी रावजी	,, न्यायाधीश
रघुनाथ पन्त	,, पंडित-प्रधान
अणाजी दत्तो	,, कार्यालयाध्यक्ष
आवाजी सोनदेव	क्रमशः विभिन्न पदोंपर कार्य करनेवाले अर्थाध्यक्ष
भैरोजी नायक	शिवाजीके गुप्तचर विभागके कार्यकारी अध्यक्ष
अली आदिलशाह	बीजापुरका बादशाह
खवास खाँ	बीजापुरका प्रधानमंत्री
अफ़ज़ल खाँ	बीजापुरके वाई सूबेका सूबेदार
सैयद बांदा	अफ़ज़ल खाँका अङ्गरक्षक
औरङ्गज़ेब	दिल्लीका मुग़लसम्राट्
ज़फ़र खाँ	मुग़लसाम्राज्यका प्रधानमंत्री
शाइस्ता खाँ	औरङ्गज़ेबका मामा
मुमताज़ खाँ	शाइस्ता खाँका विशिष्ट सेनाधिकारी
फ़ौलाद खाँ	आगराका फ़ौजदार
जयसिंह तथा कुमार रामसिंह	अम्बरनरेश एवं राजकुमार
यशवन्त सिंह	जोधपुरनरेश
जीजाबाई	शिवाजीकी माता
सोयराबाई	शिवाजीकी राजमहिषी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छत्रपति शिवाजी

प्रथम अङ्क

प्रथम दृश्य

स्थान—पूनामें श्रीमन्त राजा शाहजी भोंसलेका राजभवन।

(श्रीमती जीजावाई-द्वारा अतिथिकी आरतीके पश्चात् सौम्य भावस्थ शाहजी अपरिचितरूपमें स्थित वैष्णव सन्त स्वामी रामदासजी, श्रीदादाजी कोणदेव, रानी जीजावाई तथा कुमार शिवाजीसे बातचीत कर रहे हैं। कलापियोंके कलरव भी बीच-बीचमें सुने जाते हैं।)

शाहजी—एक गृहस्थके लिए वह दिन भी धन्य ही होता है, जिस दिन उसके यहाँ प्राणिजगत्के जङ्गम तीर्थ सन्तोंके पदार्पण होते हैं। बीजापुरके सुल्तानी दरबारके कार्योंमें व्यस्त रहनेसे मेरे लिए; अपनी अमृतज्योतिसे अन्तरालको आलोकित करनेवाले इन प्रकाश-स्रष्टाओंके दर्शन प्रायः अलभ्य ही रहते हैं, यद्यपि जीवनका चरम लक्ष्य निर्वाण-विग्रह इनकी आराधनामें ही अन्तर्निहित रहता है।

जीजावाई—प्राणनाथ! हटाइये ऐसी मनसबदारीको, जिसमें फँसे रहनेसे और तो और वात्सल्यमुखर गुरुजनोंकी सेवाओंसे भी वञ्चित रहना पड़ता है।

शिवाजी—पूज्य पिताजी! सिंह अपने पुरुषार्थसे अभिभूत लक्ष्यका भोक्ता होता है, अतः जन्मना शास्ता हम सूर्य-कुलावतीर्ण मानवोंके लिये किसी विजातीय शासनकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधीनतामें रह, भौतिक सुखोपकरणोंका एकत्रीकरण ही एक मात्र उद्देश्य न समझा जाना चाहिए; जब कि गो-ब्राह्मणोंके वरद हस्त हमारी छत्रछायाके हेतु अग्रसर हो रहे हैं।

दादाजी—वत्स! ठीक कहते हो, तथापि इसके लिए कुहूके निविड़तम अन्धकारमें सौदामिनीके प्रकाशवत् अवसरकी प्रतीक्षा तो करनी ही होगी। मानवकी वर्तमान मनोवृत्ति एवं संस्कृति भूतपूर्व प्रभावोंका समन्वयात्मक परिणाम है, इससे अनभिज्ञ आजका समाज गोके जगद्धात्री रूपको हृदयङ्गम करनेमें भले ही असमर्थ हो, तथा ब्राह्मण सृष्टिके लिये दाता होकर जगतीपर अवतीर्ण होता है एवं राजा कालका कारण होता है; आजका भौतिकवाद इसे भी न समझ पाये; किन्तु तुम्हारे अभ्युदयके अनन्तर इसके स्पष्टीकरणकी आवश्यकता न रहेगी। वह दिन भी शीघ्र ही आनेवाला है, जिस दिन आर्य-संस्कृति-रक्षक विजय-नगर-साम्राज्यको ध्वंसित करनेके लिये एका करनेवालोंके वैभव तुम्हारे चरणोंमें लोटेंगे।

शाहजी—ब्रह्मनिष्ठ दादाजी! विश्वकी निर्मितिपर अपनी अमिट छाप रखनेवाले इस अमोघ आशीर्वादके प्रति यह एकनिष्ठ भोंसला परिवार चिरकृतज्ञ है।

सन्त—(श्रीराम जयश्रीरामकी समवेतध्वनिके पश्चात्) मैं भी श्रोत्रिय-मूर्धन्य दादाजीकी दैवी वाणीका समर्थन करता हूँ। राजन्! आप इस होनहार कुमारको अपना पुत्र मात्र न समझें, अपितु यह निश्चितरूपेण समझ लें कि जिस प्रकार श्रीदशरथ-कौशल्याने अधोक्षज श्रीरामका साक्षात्कारकर उन्हें प्राणि-जगत्को समर्पित किया, उसी प्रकार आप राजदम्पतिको भी इस संस्कृतिक तत्त्वदर्शीका भारत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सावित्रीके सम्मानार्थ समर्पण करना पड़ेगा। विश्वास रखो, इस नर-शार्दूलमें युगावतारके लक्ष्म स्पष्टतया विकसित होते दीख रहे हैं। (दिव्यदृष्टिसे शिवाजीको देखना तथा श्रीराम जयश्रीरामकी मिश्रितध्वनिकी पुनरावृत्ति)

दादाजी—सन्त-शिरोमणिने इस सम्बन्धमें जो भाव व्यक्त किये हैं, मैं भी इनका किञ्चिन्मात्र अनुभव करता रहा हूँ; क्योंकि चिरञ्जीवी शिवाने अपने अदम्य उत्साहसे बातकी बातमें शेरनीका दूध दुह इसकी पुष्टि कर दी है। इसीलिए मैंने पुस्तकों-द्वारा शिक्षणकी अपेक्षा आवतारिक वीर-गाथाओंके माध्यमसे ही इसकी शिक्षाको श्रेयस्कर समझा है; एवं क्षात्रवेदके व्यावहारिक ज्ञानकी प्राप्तिमें इसकी एकान्तनिष्ठाका ध्यान रख, मैंने इसे इसी ओर सर्वप्रथम अग्रसर किया है। अतः राजा साहब, इस विषयमें आपसे मेरा यही कहना है कि सन्त भगवान्के आदेशोंकी अक्षरशः पूर्ति की जाय।

शाहजी—तपोधन दादाजी! अग्रजन्मा-वर्गको ज्ञात होना चाहिए कि अपने पुत्रोंका ही नहीं, यदि सर्वस्वका इनके श्रीचरणोंमें समर्पण करना पड़े तो इसके लिये भी यह मानव बद्धपरिकर है।

सन्त—तपोंके फलके विधाता निर्विकल्पसमाधिस्थ आशुतोषने सतीस्वरूपा पार्वतीके प्राप्त्यर्थ वैश्वानरके आत्मप्रकाशमें स्थित हो स्वयं भी तपःसाधना की थी। अतः सर्वेश्वरके पदचिह्नोंपर चलनेवाले शिवाको भी युग-युगान्तरसे चली आती परम्पराको गौरवान्वित करनेके हेतु अनादि शक्तिकी उपासना करनी होगी।

दादाजी—मैं भी सन्तप्रवरकी वेदगर्भा भारतीको हृदयङ्गम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करते हुए असीम आनन्दका अनुभव कर रहा हूँ। (अनिमेष दृष्टिसे अन्तरिक्षमें देखते हुए) लोकसंग्रहियोंकी परम्परासे जगत्के कार्यकलापको सम्पन्न करनेवाले हे स्वराट्! तुम्हारी जय हो। तुम्हीं पार्वती हो, तुम्हीं परमेश्वर!

जीजाबाई—चिरञ्जीवी शिवामें भवानीकी उपासनाकी जो नैसर्गिक प्रवृत्ति है, उसमें सन्तोंके प्रोत्साहनसे नवचेतनाका सञ्चार हो रहा है, जो हमारे विपुल सांस्कृतिक जीवनके लिए आत्मश्लाघाका हेतु है।

शाहजी—प्रिये! कल्याण-कल्पद्रुमके संवर्धनार्थ मन्त्रद्रष्टाओंकी अक्षुण्ण परम्परामें सन्निविष्ट वीतरागोंकी अभ्यर्थनाका यह मङ्गलमय उपहार है। (उपस्थितों-द्वारा भक्तिभावसे गीत गायी जाती है।)

गीत

श्रीराम तुम्हारा नाम प्रभो! है, प्रभा-प्रसारण काम,
कहीं नहीं स्थल वह न तुम्हारा, जहाँ वन्द्य हो धाम!
जल-अलिप्त पुष्करपलाशवद्भव-पयोधिमें स्थित अकाम,
ज्योतिर्मय-महिमा-रत योगी, करते हैं समाधि-विश्राम।
जगन्मूलमें निहित द्वन्द्वसे रहित सत्यका भान;
होनेसे हो जाता है, ब्रह्माण्ड-सूत्रका ज्ञान।
कर्म-दग्ध जिससे सक्रिय होते हैं अन्य-समान,
वे अचिन्त्यमहिमान किन्तु होते हैं मुक्त जहान।
जीवनकी पूर्ण इकाईमें नैराश्य-शून्य उनके विलीन,
उनकी उदात्त-गति-विधियोंमें, होती हैं संस्कृतियाँ तल्लीन;
पाती हैं उनमें समाधान शङ्कायें वाङ्मयकी शालीन,
होते हैं उनके पास पहुँच, कापाय धवल अगणितकालीन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्राह्मी स्थिति उनकी होती है, हैं वे आत्माराम,
दृश्य विश्वमें परिणतके अर्चक वे हैं अविराम।
अनायास उनके अच्युत-सूचित होते हैं काम,
आगे बढ़ो धर्म-पथ-शोधन-हित ले हरिका नाम।

(गाते गाते सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

द्वितीय दृश्य

स्थान—तुलजापुरमें भोंसला वंशकी कुलदेवता भवानीके मन्दिरका अन्तरङ्ग।

(रानी जीजाबाई एवं कुमार शिवाजी परस्पर बातें कर रहे हैं।)

जीजाबाई—क्रान्तिकारी शिवा! आज वासन्त नवरात्रकी सुषमामयी नवमी इसी अर्धरात्रिमें प्रवृत्त हो रही है, जिसमें महामाया भवानी सिद्धिदात्रीके रूपमें उन तपःपूत भक्तोंपर अनुग्रह करेंगी, जिन्होंने मानवताकी चिरसञ्चित धरोहरके सुरक्षार्थ अपने ऐहिक सुख-साधनोंको उनके पवित्र चरण-कमलोंमें सन्निहित कर दिया है। अतः आज मेरी जन्म-जन्मान्तरकी कल्याण-सङ्कल्पमयी साधना तुम्हारे कीर्ति-कलेवरको अजर-अमर करनेके हेतु तुममें समाविष्ट होनेवाली है, सावधान!

शिवाजी—(माताके चरणोंमें शिर रखते हुये) माँ! मैं तुम्हारे वरदानसे अनुगृहीत हूँ।

जीजाबाई—(शिवाजीके शिरपर दाहिना हाथ फेरती हुई) चिरन्तन सत्यके प्रकाशस्तम्भके रूपमें तुम्हारा यशःशरीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिरञ्जीवी हो शिवा ! आजकी मध्यरात्रिसे लेकर कलके मध्याह्न तकका अवसर हमारे पुष्कल सांस्कृतिक जीवनका परम मधुरिमामय अनुच्छेद है। आत्मानुभूति-विभोर विभावरीकी इस पुण्यमयी वेलामें सिद्धिज्योत्स्नाका नभोमण्डलपर प्रस्फुटन, एवं आगामी मध्याह्नमें कौशल्यानन्दवर्धन मायातीत श्रीरामके वसुओंकी अजस्र वर्षा करने वाले दिव्य जन्मका वधावा; इन दोनोंकी यहाँ सन्धि होने वाली है, अतः सिद्धिमयीकी पुलकित गोदसे तुम्हारे प्रकट होनेके एकान्तप्रतीक्षार्थ मैं यहाँसे प्रस्थित होना चाहती हूँ। (चलनेका उपक्रम करती हैं।)

शिवाजी—ठहरो माँ ! अब तक मैं तुम्हारी प्राञ्जल भाषाका रहस्य न समझ पाया।

जीजाबाई—वत्स, भागवती रहस्योंके अपनेमें प्रस्फुटनके बाद ही तुम्हारी शङ्काका निराकरण हो सकेगा। कैवल्यविग्रह गुरुजनोंमें असीम श्रद्धा रख, वर्षाधिक्यसे की गई तुम्हारी आराधनाकी फलदात्री सर्वमङ्गला प्रत्यक्ष होने ही वाली हैं; सावधान ! (प्रस्थान)

शिवाजी—(स्वगत) सिद्धिपीठकी महिमा भी अनिर्वचनीय ही होती है; इसीसे तो हृदयग्रन्थिभेत्ता नारायणको भी मानव कलेवरमें पधारनेपर इस जागतिक मर्यादाका पालन आवश्यक होता है। (मूर्तिकी ओर देख हाथ जोड़कर) सिद्धिदायिनि ! मुझे भी सार्वजनीन कार्योंके निष्पत्त्यर्थ तुम्हारे लोकोत्तर प्रसादकी नितान्त आवश्यकता है। (ध्यानस्थ रहनेके बाद अङ्गन्यास-करन्यासादि आवश्यक विधियोंकी निष्पत्तिके साथ ही विनियोगोपरान्त शिवाजी दुर्गासप्तशतीके वीजमन्त्रका सप्रणव मानस जप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करते हुये पुनः ध्यानावस्थित हो जाते हैं; एवं कुछ देर बाद सिद्धासनस्थ भोंसलाकुमारको दिगन्तव्यापी प्रकाशके साथ ही गम्भीर ध्वनि सुनाई पड़ती है, तथा सिद्धिदात्री इनकी सहसा खुली अञ्जलिमें खड्ग प्रदानकर अन्तर्धान हो जाती ;हैं एवं चेतना-शक्तिके तिरोधानके साथ ही 'जीवनमें सफल हो' इस अशरीरी वाणीको चौंककर सुननेके बाद सरजा शिवाजी पूर्वावस्थामें पुनः लक्षित होते हुए भी प्रभातकालीन सूर्यप्रकाशवत् आभासे आभासित दीखते हैं। इस अदृष्टपूर्वावस्थामें सहसा होनेवाली श्रीरामजन्मोपलक्षित प्रभातकालीन गीतको सुनती जीजाबाई अन्य व्यक्तियोंके साथ यहाँ त्वरितगतिसे प्रविष्ट होती हैं।)

जीजाबाई—जात ! आत्मनिग्रहियोंके समान तुम अपनेमें जिस असीम आनन्दका अनुभव कर रहे हो, वह वर्णनातीत है। भगवती देवकीने अपनी विदेहचेतनासे वासुदेवका साक्षात्कारकर अपनेमें सन्निहित जिस महाप्रजावती सत्ताका अनुभव किया होगा, आज मैं इस स्थितिमें तुम्हें पाकर उसी सम्मानका आत्मानुभव कर रही हूँ। शक्तिपुत्र ! आज भवानीकी दिव्यकुक्षिसे स्वर्णिमरश्मिरञ्जित खड्गके साथ तुम्हारा पुनर्जन्म हुआ है और गान्धर्व वेद विभिन्न वाद्यों के सम्मिलित स्वरसे मिश्रित कलरव-द्वारा इसकी सूचना सहृदय प्राणिसमष्टिमें प्रसारित कर रहे हैं।

गीत

हे सत्य-सनातन-धर्म-रूप ! नीलांवर है जिनका प्रसार,
पाते हैं जिसपर निगमागम-मर्मज्ञ मनीषी कर विचार,
उस भव्य रूपका भक्तोंको दर्शन देनेको वार-वार,
आते हो वसुधापर मानव वन, विश्वात्मन् ! हे निर्विकार !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे ज्ञानाश्रित-विभवोद्रेकोत्तर-विघटित-तमो-व्यूहपर पार !
अगणित भव-बन्धन मुक्त हुये, जप नाम तुम्हारा शिवाधार ।
तुम रूप-रूपमें व्यक्त नित्य हो आर्षतत्त्व-बोधानुसार,
कितने पर इसको जान सके ? करना होगा इसपर विचार ।
अन्यायोंसे जन-जीवनका, करते हैं जो सक्रियोद्धार,
सच्चिदानन्द-सन्दोह उन्हींमें करते हैं स्व-तन्त्र-सञ्चार ;
युग-युगसे सञ्चित संस्कृतिका, करनेको तथा यथार्थ प्रचार,
उनमें वे भास्वर होते हैं, गीर्वाण-कलार्चित-कलाकार ।

शिवाजी—क्या आज्ञा है माँ !

जीजाबाई—शिवा ! इस पुनीत पर्वपर विश्वम्भराके लोकोत्तर धामसे सखड्ग तुम्हें अवतीर्ण देख मैं यही अनुभव कर रही हूँ कि जगत्का अवतरण एवं अनावरण कल्याण-दर्शनकी परिष्कृतिमें ही पर्यवस्थित है, अतः सर्वस्वामिनीकी अभ्यर्थना करते हुए अपने स्थानीय राजभवनके लिये प्रस्थान विधान-सङ्गत होगा ।

शिवाजी—निःश्रेयसात्मक तुम्हारा आदेश शिरोधार्य है माँ !

(शिष्टाचार-प्रदर्शनोपरान्त सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

तृतीय दृश्य

स्थान—शिवनेरी दुर्गके पासकी एक वाटिका ।

(रानी जीजाबाई कुमार शिवाजीके जन्म स्थानमें स्थित 'शिवाई' भवानीके दर्शनार्थ प्रस्थानके पूर्व श्री दादाजी कोणदेव शिवाजी तथा तानाजी मालसुरेसे बातें कर रही हैं ।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीजाबाई—पूज्य दादाजी ! श्रीमन्तने आपके साथ मुझे तथा चिरञ्जीवी शिवाको अपने अनुचरों सहित इसलिये बीजापुरसे पूना भेज दिया है, कि कहीं युवक शिवाके कारण उन्हें सुल्तानी दरबारसे झगड़ा मोल लेना न पड़ जाय। अवश्य ही उन्होंने आपके बड़े अन्तेवासीसे ऐसी आशङ्का न होती देख, उसे अपने पास ही रख लिया है।

दादाजी—सौभाग्यवती जीजा ! इस सम्बन्धमें मैंने भी सुना था, किन्तु किसी तथ्य तक न पहुँच सका, क्योंकि मुझे राजा साहबको उनकी जागीरके आय-व्यय-सम्बन्धी विवरणके बतानेमें व्यस्त रहनेसे इधर ध्यान देनेका अवसर ही न मिला।

जीजाबाई—मान्य दादाजी, मुरार पन्त तथा मीर जुमला जैसे सरदारोंके भगीरथ प्रयत्नसे गोकशी बन्द करने व दरबारके आम रास्तेपर स्थित कसाईखानोंके शहरके दक्षिणी हिस्सेमें ले जानेके शाही फ़रमानके जारी होनेपर भी, वहाँके एक शरारती कसाईको जनाकीर्ण राजमार्गपर गोवधकी हिमाक़त करते देख, शिवाको बाध्य हो उसकी गर्दन उड़ा देनी पड़ी; जिससे वहाँ बड़ा मज़हबी जनून मचा। लेकिन सुल्तानें बीजापुरके यहाँ उसकी वेवाके आरज़ू करने पर, उन्होंने मृतकके दफ़नानेके लिये चार हूण व उसके गुज़ारेकी ख़ातिर ताज़िन्दगी रोज एक सेर रोटी देनेका हुक्म देकर इस होहल्लेको वहीं तय कर दिया; किन्तु लक्षणकी पहचान रोगके निराकरणका वास्तविक उपाय नहीं, अतः विचारणीय तो इसका समुचित समाधान है।

शिवाजी—तपोमूर्ति दादाजी ! मैंने तथा मेरे मावले बन्धुओंके नेता तानाजीने तथा वहाँ अनुपस्थित एसाजी कङ्क तथा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाजी पाडलकरने आपके कृपाकटाक्षसे अनुप्राणित हो इस महाराष्ट्रमें ऐसे शासनकी स्थापना करनेकी ठान ली है, जिसमें किसीकी भी धार्मिक मान्यताओंपर ठेस न लगेगी। इसके साथ ही मुट्ठीभर सामन्तों व व्यापारियोंके हाथोंमें ही सुखसाधनोंके सूत्र न रहने देकर सर्वसाधारणमें भी उनका वितरण किया जायगा, जिसके संसिद्धयर्थ गो-ब्राह्मणोंके अहर्निशके आशीर्वचन हमारे प्रेरणास्रोत होंगे।

दादाजी—चिरञ्जीवी शिवा, आयुष्मन् ताना तथा सञ्जया जीजा! इसके लिये अपने त्याग एवं तपः साधनोंसे लोक-वन्द्य ब्राह्मणवर्ग सदासे अग्रणी रहा है और इसीमें मेरी भी चरितार्थता है।

जीजावाई—वन्दनीय दादाजी! प्राचेतसपरम्पराको अलंकृत करनेवाले ब्राह्मणोंकी ऋतसाधनाका मूर्तरूप ही तो जगत्-का रसायन है। (शिवाजी तथा तानाजीकी ओर ध्यानसे देख) शिवा एवं ताना! इस सम्बन्धमें हमारा जो आदर्श है, उसे हमारे पूर्वज व्यक्त कर चुके हैं और उसके संसि-द्ध्यर्थ दादाजी सरीखे आप्तोंसे आध्यात्मिक प्रेरणायें भी मिलती रहीं, तो उसका दर्शन मध्याह्नके सूर्यप्रकाशवत् अवश्यम्भावी है।

दादाजी—हाँ, संसृतिके वरदान कालिदासने 'इमां भारत-सावित्रीं हिमवद्विन्ध्यकुण्डलाम्। महीमेकातपत्र-स्थां राज-सिंहः प्रशास्तु नः'॥-इस अमरतत्त्वका सिंहनाद करके हमारी सुप्त भावनाओंको भी जागरूक कर दिया है। (शिवजीकी ओर देख) सौम्य! महाकविकी इस सूक्तिको अनूदित करनेवाला वीरचेता कवि निकट भविष्यमें ही अवतीर्ण होगा और हमारे पुनर्जन्मके सिद्धान्तानुसार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रियदर्शी अशोक जैसे सम्राटोंके अवतरण भी अवश्य-म्भावी हैं। इसीसे तो उस वरेण्य युगके सौष्ठवसे प्रभावित प्रभञ्जन आज भी हमें अभिनव स्फूर्ति दे रहा है, एवं ये माधवी लतायें व आम्र-मञ्जरियाँ पक्षियोंके द्वारा हमें इससे आश्वस्त कर रही हैं।

जीजाबाई—श्रद्धेय दादाजी! आप्तोंकी कामधुक् वाणीकी पद्धतिसे-जिसे भोंसलावंशके कुलपुरोहित पूज्य प्रभाकरजी महोपाध्याय कभी वैखरी भाषामें व्यक्त भी कर चुके हैं; मैं इतना जान चुकी हूँ कि महाराष्ट्रमें तो स्वाधीनताका उदय होगा ही। जान पड़ता है, अपने नामसे उल्लापित शिवाके इस जन्मस्थानसे ही माता भवानी अन्तर्वृत्तिप्रधान व्यक्तियोंको इसका सन्देश दे रही हैं। (सहसा नेपथ्यसे शङ्खध्वनि का होना)

दादाजी—शङ्खध्वनि तथा पुष्पोंकी सुरभि इसकी स्वीकृति दे रही है जीजा!

जीजाबाई—अजातशत्रु दादाजी! आप जैसे ज्ञानवृद्ध अपनी अतीन्द्रिय शक्तिसे भविष्यका साक्षात्कार करते हैं, किन्तु मेरे जैसे प्राणियोंका भविष्य अनुमानपर आधारित होता है। मेरी धारणानुसार शिया-सुन्नियोंके बद्धमूल विवाद एवं मुग़लोंके गत्यवरोधक, घरेलू लड़ाई-झगड़े भी अंशतः हमारी उद्देश्य सिद्धिमें सहायक होंगे; यद्यपि हमारी प्रवृत्ति निरन्तर शक्ति-सञ्चय तथा इसके यथावसर-उपयोगमें ही विश्वास रखती है।

शिवाजी—किन्तु माँ! उदात्तवृत्त विप्रोंका अनुग्रह ही हमारी संकल्प-सिद्धिका सर्वश्रेष्ठ उपकरण है, जिसका हमारे कर्तव्य-निष्णात मावले बन्धु भी प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तानाजी—क्या इसमें भी सन्देहके लिए कहीं स्थान हो सकता है श्रीमन्त ?

शिवाजी—कदापि नहीं !

जीजाबाई—अपने जन्मसे मातृभूमिको आह्लादित करनेवाले बालको ! मुझे तुम्हारे गुरुप्रेरित सदुद्देश्यके सिद्ध्यर्थ आत्म-समर्पणके दृढ़ निश्चयपर पूर्ण विश्वास है और यही मनोरथ-प्राप्तिका मूलाधार भी है। (सहसा तानाजी द्वारा प्रदत्त एक प्रस्तरखण्डपर उत्कीर्ण वाक्य पढ़ने लगती हैं।) आप्त-काम दादाजी, यह शिलाखण्ड भी आलंकरिक भाषामें इसीकी पुनरावृत्ति कर रहा है। इस पर खुदा है—'मनुष्य चन्द्रमाको पहले सीमित देखता है, किन्तु देखते देखते ही वह पूर्ण हो जाता है और उसके प्रकाशपुञ्जसे आलोकित जगत् अपनेमें असीम आनन्दका अनुभव करता है। यही फलश्रुति हिमांशुरूपी शिवासे भी सम्बद्ध होगी'।

दादाजी—प्राणिजगत्की सर्वस्वीकृत आकांक्षा सुख, इसे सहज ही उपलब्ध हो, यही सर्जनोन्मुख मृडानीको अभीष्ट भी है। अतः अपनी सद्भावनाओं तथा कर्त्तृत्वशक्तिसे मानव सर्वदा उन्नतिपथपर अग्रसर होता रहे, यही मानवको भवानीका सर्वोत्तम आदेश होगा।

(वाद्योंके साथ नेपथ्यसे होती भवानीकी जयध्वनिको सुनते ही सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुर्थ दृश्य

स्थान—कल्याण दुर्गके सामनेका सजा हुआ शिविर।

(श्रीमन्त शिवाजीके आगमनकी प्रतीक्षामें उल्लासमयी मुद्रामें खड़े आवाजी सोनदेव तथा अणाजी दत्तो परस्पर बातें कर रहे हैं।)

आवाजी—अणाजी! देखते हो, श्रीमन्त भोंसलेने वीरव्रती मावलोंके सहयोगसे जुन्नार, तोरण, इन्द्रपुर, वारामती, लोहागढ़, रायरी, रायमाँची, काँकोडी; टोंग, टिकोणा, धूरुप, कारी एवं कल्याणादि दुर्गों तथा इनसे संरक्षित विशाल भूभागपर एकाधिकारकर समस्त कोंकणपर ही अपनी विजय-वैजयन्ती नहीं फहरा दी है; प्रत्युत राजगढ़में फिरङ्गोजी नरसालाके द्वारा दृढ़ क़िलेबन्दी करा एवं वीजापुर जाते मन्थरगति शाही खजानेको स्वाधीनकर मुहम्मद आदिलशाहकी नींद व भूख भी हराम कर दी है।

अणाजी—हमारे कुमारकल्प सेनानी भोंसलेकी गगनके पटल पर मुस्कराती उषासदृशी वाणीमें वह आकर्षण है, जो अनायास ही विवेकशील देशभक्तोंको स्वाभिमुख कर लेता है और मैं तो देख रहा हूँ कि उनके हृदयग्राही व्यवहारसे विरोधियोंके अन्तरालमें भी उनके प्रति आस्था हुये बिना नहीं रह सकती। अवश्य ही इस सफलतामें अन्य उपकरणोंके अतिरिक्त श्रीमन्तको भगवान् रोहिदेश्वरका श्रेयस्कर आश्रय भी प्राप्त हुआ है।

आवाजी—किन्तु मैंने मानवताके वरदान सीसौदिया-कुलचूड़ामणिके स्थानीय सेनापतिकी हैसियतसे इस अभियानमें मुल्ला अहमदकी पुत्रवधू माता गौहरवानूको वन्दी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वना, प्रजापतिके दिव्यतेजसे आविर्भूत महती देवताका अपमान किया है।

अणाजी—विजेताकी नैतिकता युद्ध-सामग्रियोंमें ही स्त्रीरत्नकी भी गणना करनेको वाध्य होती है।

आवाजी—फिर भी क्या हमारी यह धृष्टता निष्कर्षद्रष्टा श्रीमन्तके लिए क्षम्य होगी?

अणाजी—हमारे लिए भले ही इस प्रश्नका उत्तर न में हो, किन्तु उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभाको अवैध हस्तक्षेप एवं सैनिक अधिनियमके दूरङ्गम अर्थसे अवगत होते देर न लगेगी। इसके अतिरिक्त आचरणकी पवित्रता भी मानवकी ऐसी विशेषता है, जो अनायास संयमी व्यक्तिके समक्ष उसकी मर्यादा नहीं नष्ट होने देती। वस्तुतः हमारे त्याग, संयम एवं दृढ़ स्वामिभक्तिने ही तो श्रीमन्तको अपनी ओर आकृष्ट किया है, आप इसे न भूलें!

आवाजी—(नेपथ्यसे होनेवाली भवानी, माताजी एवं श्रीमन्त-भोंसले की जय-ध्वनि सुनते ही) अणाजी! श्रीमन्त यहाँ पधारना ही चाहते हैं, अतः स्वागत-सम्भारोंसे समृद्ध कला-मर्मज्ञ अपने सङ्गीतसे उनके अर्चनार्थ प्रस्तुत हों, तथा यहाँ उपस्थित सैनिक, अभिवादनके लिए आवश्यक उपकरणोंसे संयुक्त हो जाँय। (मोरोपन्त पिङ्गले तथा नीराजी रावजी आदिकोंके साथ श्रीमन्तके सन्निकट आते-आते सैनिक अभिवादन एवं स्वागत-गान प्रारम्भ होता है।)

स्वागत-गान।

हे वीर-शिरोमणि! आओ।
स्वतन्त्रताके तरुण कलेवर, मानवताके मानसरोवर;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्तिमती वाणीके निर्झर, मातृभूमिके हृत्तन्त्री-स्वर;
राष्ट्रियवृत्ति जगाओ ॥ हे वीर० ॥
गौरवमय अतीत-मन्दिरपर, रत्न-कलश हैं जिनके जौहर;
दृश्य जगत्में उन्हें अग्रसर, करनेको प्रभुत्व-तन्मयकर;
त्याग-प्रभा चमकाओ ॥ हे वीर० ॥
चाणक्य-चन्द्र अनुभूति लिये, स्कन्द-प्रसेन-वसु-वृत्त लिये;
उदयन-समुद्र-उत्साह लिये, जय-हर्ष-भोज-नैपुण्य लिये;
हृदय-स्थित क्षात्र जगाओ ॥ हे वीर० ॥
शङ्कर-रामानुज-ज्ञान लिये, विज्ञान आर्यभट्टादि लिये;
कवि कालिदासकी कला लिये, जाग्रत जीवन-सौन्दर्य लिये;
सांस्कृतिक रश्मि छिटकाओ ॥ हे वीर० ॥
शक-जन्मजात बर्बरताका, कर लोप हुआ चालू शाका;
विध्वंस करो दानवताका, नूतन हो फिर चमके शाका
इतिहास नवीन बनाओ ॥ हे वीर० ॥

शिवाजी—(सिंहासनासीन हो स्वागत-स्वीकारके पश्चात् उत्थित हो) मातृभूमिके सैनिको ! माता भवानीने हमें जिस पवित्रतम कार्यके संसिद्ध्यर्थ इस महामङ्गलमयी कर्मभूमिपर अवतरित किया है, उनके सम्मुख हममें से न कोई बड़ा है न छोटा, अपितु जिस प्रकार भगवान् जातवेदाके वर्चस्के प्रदीप्त होनेपर उनके लिए समर्पित सभी पदार्थ एकमात्र तेजोमय हो जाते हैं, उसी प्रकार अधिकारभेदसे व्यवस्थार्थ किसीके सिंहासनासीन होनेसे तथा किसीके द्वारस्थ होनेपर भी हम सभी समान हैं। वस्तुतः देखना तो इस संदर्भमें हमें यही है कि हमने इस अभियानमें कोई ऐसा कार्य तो नहीं किया है, जिससे सृष्टिकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शाश्वत परम्पराका विघात हुआ हो, क्योंकि इसी कर्त्तव्या-कर्त्तव्यके विवेचनमें हमारी सफलताका बीज अन्तर्निहित है। (आवाजीको ध्यानसे देख) आवाजी! तुम अपनी इस सफलताके उपहारस्वरूप कल्याणके दुर्गाध्यक्ष नियुक्त किये जाते हो।

आवाजी—(अलङ्करण प्राप्तकर सबके साथ ही श्रीमन्तके प्रति आभार प्रदर्शित करते हुये) प्रभो! कल्याणके भूतपूर्व दुर्गपाल मुल्ला अहमदकी पुत्र-वधू माता गौहरबानू भग-दड़के समय अन्य सामग्रियोंके समान ही हमारे सैनिकोंके हाथ आ गई हैं, अतः हमारा अपराध क्षम्य समझा जाय।

शिवाजी—कल्याणके दुर्गाध्यक्ष! राजतन्त्रको गृहतन्त्रमें परिणत करनेकी नीतिपर आधारित हमारी घोषित युद्ध-नियमावली इसके विरुद्ध है, तथापि शीघ्रातिशीघ्र उन्हें ससम्मान अपने सम्बन्धियोंके पास पहुँचानेकी समुचित व्यवस्था की जाय। आवाजी! मैं माता गौहरबानूको अपनी जन्मदात्रीके समान समझ उनके दर्शनार्थ एवं आशीर्वाद प्राप्त करनेकी अभिलाषासे यथाशीघ्र यहाँसे प्रस्थित होना चाहता हूँ।

आवाजी—श्रीमन्तकी महती आज्ञा शिरोधार्य है।

शिवाजी—अच्छा चलो, (नेपथ्यसे होती गीतकी आवाज़ सुन चौंककर) ठहरो।

गीत

जगमग ज्योति जगे!
अन्तरालमें चमक रही, ज्योतिस्पथ-व्याप रही,
जिसके प्रभावसे आलोकित हैं, ग्रहगण सहित मही,
वह विभु-ज्योति जगे ॥ जग० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चैतन्य-प्राप्ति होती जिससे, सर्वस्व सुलभ होते जिससे,
कर्मोपदेश-ज्ञानोपदेश श्रुतिगत सार्थक होते जिससे,
वह प्रभु-ज्योति जगे ॥ जग० ॥

(सहसा एक दिव्य मानवका साक्षात्कार तथा
यों कहते हुये तिरोधान)

दिव्य मानव—शिवा ! मातृजातिके प्रति होनेवाले तुम्हारे इस व्यवहारसे विश्वात्मा तृप्त हो रहे हैं। तुमने अपने इस पुनीत कार्यसे सृष्टिके लिये वह आदर्श उपस्थित किया है, जो मानवताकी प्रगतिका सदैवके लिये प्रेरणास्रोत बना रहेगा, केवल चित्तौड़की पद्मिनी जैसी अपरिमित महासतियोंके जौहर ही नहीं; रामायण एवं महाभारतके सम्पूर्ण आख्यान भी तुम्हारे इस व्यवहारकी ओर श्रद्धाभरी दृष्टिसे देख रहे हैं। मनुष्योंकी तो गणना ही नहीं, स्वयं गायत्री महामन्त्रके द्रष्टा भगवान् विश्वामित्र तक, जिस आकर्षणसे अपनेको न बचा सके, वहीं तुम्हारी चित्तवृत्तिका सनक-सनन्दन-सनातन एवं सनत्कुमार जैसे देव्य महर्षियोंके समान निश्चल रहना असम्भावित घटना है। भारतके इस उपेक्षित अञ्चलमें होनेवाले चरित्रबलका यह प्रकाश स्वराट्की लोकोत्तर विभूतियोंमें तुम्हारी गणना करनेको सचेष्ट है।

(आलोक)

[पट-परिवर्तन]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पञ्चम दृश्य

स्थान—बीजापुर-दुर्गमें सुल्तान अली आदिलशाहका मन्त्रणा-गृह।

(बादशाह, प्रधान मन्त्री ख़वासखाँ तथा नवाब अफ़ज़ल खाँसे चिन्तित मुद्रामें स्थित हो विचार-विमर्श कर रहे हैं।)

बादशाह—अपनी मसनदकी सलामतीकी ख़ातिर अपने ख़न्दानके क़त्ल व शुमाली हिन्दोस्तानपर अपने शिकञ्जेकी मज़बूतीमें मशगूल ज़ालिम औरङ्गज़ेबसे चन्दरोजकी ख़ातिर तो सल्तनतको ज़रूर राहत मिली है, मगर वग़ैर तम्बीह बीजापुरी इलाके हड़पते जानेवाले शिवाजीके ख़ुराफ़ाती कारनामोंसे तो नाकों दम आ गई है। क्या किया जाय हिन्दोस्तानमें हम अहलेतशा तो यों ही कम तायदादमें आबाद हैं, फिर भी इतने छिट-फुट हैं, कि इन्हें इकट्ठाकर दुश्मनोंसे जमकर लोहा लिया ही नहीं जा सकता। फ़ारस यहाँसे इतनी अधिक दूर है कि वहाँकी मदद रोज-बरोज बदलनेवाली यहाँ की हालतमें हमें नहीं मिल सकती। दर असल सल्तनते बहमनीका पाँच टुकड़ोंमें तकसीम होना आज हमारे लिये आफ़तका बाअस हो रहा है।

ख़वास खाँ—कहा नहीं जा सकता कि बीजापुर व गोलकुण्डा की शिया सल्तनतें कब तक सलामत रह सकेंगी। अहमदनगरकी निजामशाहीके ख़ातमेकेबाद ही मैंने तो सोच लिया था, कि अब इन दोनों सल्तनतोंका मुग़लोंकी चपेटोंसे अधिक अरसे तक बचे रहना मुमकिन नहीं है, लेकिन आज तो शिवाजीका अपने ऊपर मड़राने लगना और भी मुसीबतकी बात हो गई है। हमारे लिये यह समझना भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दानिशमन्दी न होंगी कि वह अपने वापके इशारेपर अपनी आलीशान खुदसर हुकूमत क़ायम करनेकी कोशिशें कर रहा है, वल्कि किसी भी अक़्लमन्दसे यह छिपा नहीं है कि सुन्नियोंके सदर औरङ्गज़ेवसे भी आगे वढ़कर समूचे जनूवी हिन्दोस्तानके तानाशाह वननेकी ख़ातिर वह उधार खाये वैठा है।

वादशाह—अपनेको कर्नाटकका खुदसर राजा समझने-वाला उसका वालिद शाहजी भी उस खूँख़ारसे किसी क़दर कम ख़तरनाक नहीं है, अव्वाजानने शाहजीको सीधे तल-वारके घाट न उतारकर, चार साल तक नज़रवन्दीमें रख, शाहजाखाँ वग़ैरहकी जामिन व वादशाह शाहजहाँ के दवावमें आकर उसे वेदाग़ रिहा करनेकी जो भूल की, उसका नतीजा आज मुझे भुगतना पड़ रहा है। असलियत तो यह है कि अगर शाहजीको क़ैद करानेवाले वाजी घोर-पड़े वग़ैरहके जैसा चौकन्ना रहा गया होता, तो जावलीके प्रतापगढ़में शिवाजीको क़िलेवन्दी करानेका मौका ही न मिल पाता।

ज़वासखाँ—वादशाह सलामत, निजामशाहीके ख़ातमेके वाद जव शिवाजीका वालिद शाहजी आदिलशाही दरवारमें पनाह पानेकी ग़रज़से आया था, तो सुल्तानेमरहूमने सोचा होगा, कि वह आदिलशाही सल्तनतमें मानिन्द अहमद-नगरके दरवारके वफ़ादार होकर अपनी ज़िन्दगी वसर करेगा, इसीसे उन्होंने इसे ज़रूरतसे ज़्यादा तरजीह दी, उसीका नतीजा प्रतापगढ़की क़िलेवन्दीको भी समझना चाहिये और आज तो यह हालत है, कि जव तक यह क़िला सर नहीं कर लिया जाता, उधरसे हमारे लिये हमेशाकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ख़तिर ख़तरा पैदा हो गया है। शिवाजीसे तो घुल-मिलक
उसपर वार करनेवाले खूँख़ार उसके हम कौमोंकी अप
पास आज भी कमी नहीं है, लेकिन किया क्या जाव
कामयाब नहीं हो पाते, लिहाज़ा अब तो हमारे लिये फ़
नवाब बहादुर जनाब अफ़ज़लख़ाँ साहबका ही भरोसा

अफ़ज़ल ख़ाँ—बादशाह सलामत व वज़ीरे आज़म! आज
आप लोगोंको मुझपर भले ही कुछ शक़ हो, लेकिन मेरी
हज़रत बड़ीसाहिबा सब कुछ जानती हैं। लिहाज़ा
ख़ुदाकी फ़ज़ल हुई तो परतापगढ़में ही बदक़िस्मत शि
जीकी मजार भी बनेगी। (बाँये अङ्गोंका फड़कना।)

ख़वास ख़ाँ—नवाब साहब! मगर आसार अच्छे नज़र
आते। अगर ख़ुदाको यही मंज़ूर होता तो वज़रिये सुल
मरहूम उसे क़त्ल करनेकी ग़रज़से भेजा गया व
श्यामराज, मोरे सरदारकी मुक़म्मल इमदाद होते
भी अपने फ़नमें हर्गिज़ नाक़ामयाब न हुआ होता!

अफ़ज़ल ख़ाँ—(मुस्कराती मूछोंपर ताव देते हुये) मेरे
जवाँमर्द इसकी मुतलक़ परवाह नहीं किया करते। ख़ु
तरफ़से इन्सानको इसीलिए ताक़त अता फ़रमाई गई है
वह अपनी सीना-जोरीके खल्क़में तहलका मचाता फि
इसके साथ ही हमें यह हर्गिज़ न भूलना चाहिए
क़ामयाबीका तुख्म अक्सर मायूसीके पर्देसे पोशीदा
करता है।

ख़वास ख़ाँ—नवाब साहब! मुझे आपकी ताक़त व आ
अन्देशीपर एतमाद है। ख़ुदाकी रहमतसे फ़ौजी
नकेल सँभाले शिवाजीके पेशवा राजेकरके वज़रिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खाँके लश्कर शिकस्त होकर बरखास्त किये जानेसे, हमारी ताक़तका सिक्का भी मराठा रैयतपर जम गया है।

बादशाह—या अल्लाह, इस नाचीज़ इन्सानकी इज्ज़त बचानेकी खातिर नवाब अफ़ज़लके बाजुओंमें अपनी अजीमुश्शान ताक़त अताकर!

ख़वास खाँ—हुज़ूर, इस मामलेके मुतल्लिक मेरी यही अर्ज़ है कि हिम्मते मर्द, मरदे ख़ुदा।

अफ़ज़ल खाँ—बादशाह सलामत! वज़ीरे आज़म बिल्कुल सही फ़रमा रहे हैं। मैं जानता हूँ कि शिवाजी दग़ाबाज दर्जा अव्वल है और उसे अपने बेजाफनसे रोकना दुश्वार है, फिर भी आप इस ओरसे बिल्कुल बेफ़िक्र रहें। मैं यहाँ उसे सिर्फ़ क़ैद करके ही नहीं लाऊँगा, बल्कि जैसा कि मैंने परसों भरे दरबारमें बयान किया है, अगर उसे ख़ुद उसके अपने ही घोड़ेपर कसकर शाही ख़िदमतमें न हाज़िर किया तो मेरा नाम फिर अब्दुल्ला हो जायगा। मैं तुलजापुर व पण्ढरपुरमें जाकर हिन्दुओंके बुतखानोंको तोड़ उन्हें ज़मींदोज़ कर दूँगा और देखूँगा कि कौन-सा बानिये कुफ़्फार हमारी बाग़ मोड़ता है। हाँ, इसी वक्त उसकी गैबी ताक़तका भी इम्तहान हो जायगा।

ख़वास खाँ—नवाब साहब, आपपर सल्तनतको नाज़ है। ख़ुदा आपको अपनी मक़सदमें कामयाबी बख्शे।

बादशाह—नवाब साहब! हम शिवाजीके सर हो जानेपर यह महसूस करते हुए चैनकी बंशी बजायेंगे कि हमारी आँखोंका काँटा हमसे ओझल हो गया।

ख़वास खाँ—जहाँपनाह इसे बखूबी समझ लें कि मराठे हों या मुग़ल; अगर वे बीजापुरको हज़म करना ही चाहते हैं, तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वे बखुशी सामने आवें, लेकिन वे इसे अपने सोनोंपर दा
कर लें कि वे यहाँकी ज़मींके ज़र्रे-ज़र्रेको सरफ़रोशोंके
तमन्ना लिए इन्सानोंके ताज़े लहूसे सादाब करके ही यह
पनप सकते हैं।

अफ़ज़ल ख़ाँ—वज़ीरे आज़म! कहावत है कि बरसनेवा
बादल अक्सर गरजते नहीं, लिहाज़ा फ़िलहाल मैं आप
कुछ न कह फ़क़त् यही अर्ज़ करना चाहता हूँ कि अ
चूहोंकी बिलोंमें पानी न भर दिया तो, अफ़ज़ल मुँह दिखने
ख़ातिर लौटकर फिर बीजापुर न आवेगा।

बादशाह—(कड़ककर) आज मैं यह महसूसकर अपने
क़िस्मतमन्द समझता हूँ कि अपने रोशन होनेके लि
मानिन्द ही ख्वाजा महमूद गावान जैसे रहनुमाओं
इमदाद आज भी आदिलशाही हुकूमतको हासिल
कौन है, जो आप जैसे दिलेरोंके जीते जी अपनी
गुम्बदसे फ़ख़्रे जहाँ इस सल्तनतको आँख तक दिखा स

(अल्लाहो अकबरका नारा लगाते सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

छठाँ दृश्य

स्थान—बाईमें नवाब अफ़ज़ल ख़ाँके महलके सामने
निर्मित शिविरका बाहरी भाग।

(शाह मुबारक अली औलियाके रूपमें परिवर्तित श्री
शिवाजीके गुप्तचर विभागका प्रमुख व्यक्ति भैरोजी ना
नवाबके अङ्गरक्षक सैयद बाँदासे बात-चीतकर रहा है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाँदा—कहिये शाह साहब ! इस वक्त आपका यहाँ किस मक़सदमें आना हुआ है और आप वज़रिये बन्दगाने ख़ुदा किस मरतबेसे याद किये जाते हैं। मुझे तो लोग सैयद वाँदाके नाससे जानते हैं।

मुबारक—सैयद साहब ! हम फ़कीरोंको ख़ुदाकी इबादत व दीने इस्लामकी ख़िदमतके सिवा और कौन सी ऐसी हाजत है, जो इधर-उधर भटकते फिरें ? लोग इस नाचीज इन्सानको शाह मुबारक अली औलियाके नामसे याद किया करते हैं।

वाँदा—शाह साहब ! मेरे जैसे सिपाहियोंको आप जैसोंसे अक्सर दो ख़्वाहिशें रहती हैं। पहली करामातोंकी चश्मदीदीकी और दूसरी दीने इस्लामकी तरक्क़ीकी ख़ातिर अमलमें लाये जानेवाले तौर-तरीकोंके जाननेकी !

मुबारक—सैयद साहब, इसे दुनियाँ मानती है कि हुज़ूर-ख़ुदाकी ओरसे मूसा, दाऊद व ईसा अम्बिया अलैहिस्सलामके मानिन्द माजज़ोंके साथ नहीं वारिद हुये थे, फिर भी मावूदके आख़ीरी नबी होनेसे सल्लल्लाहो अलेहे ओसल्लम समुन्दरमें बानिख्वत बुल्बुलों मानिन्द मोतीके अफ़ज़ल महसूस किये जाते हैं, लिहाज़ा कलामे पाकपर ईमान लानेवालोंको करामातोंके चक्करमें पड़ ख्याली पुलाव पकानेकी कतई ज़रूरत नहीं है।

वाँदा—लेकिन शाह साहब, एक तरक्क़ीपसन्द मुजावरकी दुनियावी मुरादें सिर्फ़ इन बातोंसे तो पूरी नहीं हो सकतीं।

मुबारक—सैयद साहब ! मेरी समझसे हर मुसल्मानको हर-मानेमें अपनेको मुजाहिद समझ परहेज़गारीसे जिन्दगी बसर करनी चाहिये, न कि करामातोंके नकाबके पीछे पड़,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ख़ुदादाद चीजोंपर हावी होना व बहिश्तकी राहमें काँटे बिछा उनमें उलझना। इन्शाअल्लाह! (फलक़में देखते ही एक दरख़्तसे इलायचीके ताज़े फलोंका गिरना)

वाँदा—(साश्चर्य) सुभान अल्लाह, शाह साहब! अल्लाह ताला ने अज़ुमने इस्लामकी वहबूदीकी ख़ातिर ही तो आप जैसे रहनुमाओंको अता किया है। बमेहरबानी आप नवाब बहादुर जनाब अफ़ज़ल खाँ साहबके यहाँ तशरीफ़ ले चलें।

(दोनोंका ड्योढीदर द्वारा विज्ञापित नवाबके पास जा यथास्थान स्थित होना)

अफ़ज़ल ख़ाँ—शाह साहब! मैं मीनाजी जैसे शातिर डकैत सदर शिवाजी नामके सरपुस्त इन्सानको पकड़ उसे शाह दरबारमें हाज़िर करनेकी ग़रजसे अरसेसे यहाँ पड़ा मगर अबतक कामयाबी नहीं हासिल हुई। ग़र्चे इबादतगाहोंकी शकलमें इस्तेमालमें आनेवाले क़ाफिरोंके बहुत मन्दिर ज़मींदोज़ किये जा चुके हैं।

सुबारक—आमीन, इल्लामको वहबूदीकी ख़ातिर ताउम्र कोशिश करते रहना हर एक दीनदारका फर्ज़ है; मगर हम फ़क़ीरों पास दुआके सिवा और है ही क्या?

अफ़ज़ल ख़ाँ—तुम फ़क़ीरोंकी अचूक दुआओंमें ही तो सब इ है। महबूबे इलाही शेख निजामुद्दीन औलियाकी दुआ ही तो जाहोहश्मत सल्तनते बहमनी छिपी थी? ग़रीबनेवाज ख्वाजा मुईनुद्दीन साहब ही तो ज़हूरमें आनेवा हिन्दोस्तानकी ग़ोरी सल्तनतकी ख़ातिर ख़ुदाकी मे हासिल करनेवाले थे?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुबारक—इन्शा अल्लाह, शिवाजीसे उसके मकानमें हर्गिज न मिलना, बल्कि अपनी फ़ौजसे घिरे अपने शामियानेमें मिलना, क्योंकि हमदर्दीके जामेसे पोशीदा दुश्मनके घरमें क़दम रखना या उसे छोटा समझना अपनेको धोका देना है। लिहाज़ा अगर वह तुमसे मिल सके तो फ़ौरन उसे इस कदरसे पकड़ उसके पेटमें तलवार घुसेड़नेकी तदबीर करना, जिससे डरकर वह तुरत इस्लाम क़बूल कर ले।

अफ़ज़ल खाँ—मैं भी अभी तो यही सोचता हूँ शाह साहब!

मुबारक—हुई ग़ल्तियोंकी ज़िक्रसे नाराज़ तो न होगे?

अफ़ज़ल खाँ—हर्गिज नहीं; फ़ायदेमन्द दवायें अक्सर कड़वी ही होती हैं।

मुबारक—एक ही सवालको कई तरीक़ोंसे हल करनेका माहिर उस्ताद अपने शागिर्दके बार-बार उसके पाये तक़मीलके गुरके पूछते रहनेपर भी उससे नाराज़ न हो खुश होता है। यही बात काफ़िरोंके इबादतगाहोंके तोड़ने या उन्हें क़त्ल करनेकी निस्बत भी लागू होती है। हमारे नबीने आमतौरपर मिल्लतके तरीक़ेको अख्तियारकर इस्लामका डङ्का आलममें बजवाया है। लिहाज़ा यह समझकर कि जहाँमें न ईंट-मसालोंकी कमी है न इन्सानोंकी, हङ्गामा मचानेकी नहीं, बल्कि दिलो-दिमाग़को तब्दील करनेकी कोशिशें करो।

अफ़ज़ल खां—हुई ग़लियोंके लिये माफ़ी दी जाय शाहसाहब!

मुबारक—इंशा अल्लाह, नवाब साहब! इस्लाम जादू-टोनेका सब्ज़बाग़ नहीं, बल्कि वह आसान रास्ता है, जिससे कमसे कम दिक्कते गवारा किये बिहिश्तमें पनाह मिलती है। इस लिये ग़ुस्सेमें आकर हर्गिज ऐसे काम न करने चाहिये,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनसे अपनी व अपनी क़ौमकी बेइज़्ज़ती हो। शेरे ख़ुदाने एक मर्तबा एक मुलज़िमको सज़ा देनेकी गरज़से म्यानसे शमशीर निकाली ही थी, कि उसके ज़रिये अपनी तौहीन होनेसे ग़ुस्सा आते ही तलवार इसलिए म्यानमें वापस लेनी पड़ी, कि ऐसी हालतमें मुझसे ग़ैर इन्साफ़ी न हो जाय।

अफ़ज़ल खाँ—लेकिन उल्टा दरया तो बहाया नहीं जा सकता?

मुबारक—बेशक, फिर भी आइन्दाके लिये होशियार तो हुआ ही जा सकता है। इस्लामी तवारीख़के पन्ने उलटो। शफ़ीउल्मुज़नबीनने यहूदीके घर खाना खाकर व दीदारे काबामें सङ्ग अस्वदको बोसा देनेकी रस्म जारी रख बजुज़ तफ़ाक़ हमें दक़ियानूसीसे ऊपर उठनेका सबक़ सिखाया है।

अफ़ज़ल खाँ—शाह साहब! आपकी तक़दीरसे मुझे बड़ी राहत मिली है, इसलिये क्या आप कुछ अरसेतक यहाँ रुककर मुझे बेहतरीन नसीहतें न देंगे?

मुबारक—नवाब साहब, हम नीले आसमानके अजीमुश्शान शामियानेके नीचे ख़ुदासे अता हुई हरी घासोंके गलीचों-वाली ज़मींपर बैठ माबूदकी इबादत करनेवालोंकी मज-बूरियाँ आप ख़ुद ही समझ सकते हैं, अल्लाहो अकबर!

अफ़ज़लखां—शाहकी मौजमें मुश्तहक़ होने या दस्तन्दाजीकी जुर्रत ही किसमें है, अल्लाहो अकबर!

बांदा—(नवाबसे विदा हो साथ आते हुए मुबारकसे) आपको छोड़ते मुझे अज़हद तक़लीफ़ महसूस हो रही है शाह साहब!

मुबारक—आबे रवाँके मानिन्द हम फ़क़ीरोंसे लौ लगाना तुम जैसे फ़ौजी इन्सानकी जिस्मानी व रूहानी कमज़ोरी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समझी जायगी। हमें वज़रिये इबादत ख़ुदाका हुक्म बजाना पड़ता है और तुम जैसोंको अपनी जिस्मानी तक़ातसे मुल्ककी हिफ़ाजतका काम ख़ासतौर से जब्बार ख़ुदाकी ओरसे सौंपा गया है। चुनांचे उसकी रज़ामें ही हमारी रज़ामन्दी है।

बाँदा—हमें आपकी ख़िदमतमें हाज़िर होनेका फिर कब मौक़ा मिलेगा?

मुबारक—एक नाचीज़ इन्सानकी ख़िदमतके चक्करमें न पड़ उस ख़ुदाके करामाती क़दमोंके सिज़दे में अपनेको निसार कर दो; सूरज और चाँद जिसकी रोशनीसे हमेशा ख़ल्क को रोशन कहते रहते है, जिसका आलीशान तख्त हमेशा की ख़ातिर असली क़लामे मज़ीदको लौहे महफ़ूज़से महफ़ूज़ रखता है, बादल आवे हयातकी बारिशकर ख़ल्क़को ख़ूराक पहुँचाते हैं और ज़मीं व आसमाँ जिसकी इनायतसे अपने राग़ हम फ़क़ीरोंपर नाज़िल करते हैं।

(अल्लाहो अकबरका नारा लगाते दोनोंका
विपरीत दिशासे प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

सप्तम दृश्य

स्थान—प्रतापगढ़में दुर्गका प्रमुख चतुष्पथ।

(श्रीमन्त शिवाजी अफ़ज़ल खाँसे मिलनेसे पूर्व माता जीजा बाईके आशीर्वाद लेने तथा बालसखा तानाजीसे भावी कार्य क्रमकी रूपरेखाके निर्देशनमें व्यस्ता दीखते हैं।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीजाबाई—सरजा शिवा! माता भवानीके वरदानसे विजय-लक्ष्मीके साथ प्रत्यावर्तित हो अपनी संस्कृतिको आह्लादित करो। आज मैं धनञ्जयकी माता कुन्तीके समान वीर प्रसविनीका पद पाञ्चजन्यके अन्तर्नाद सुनतीहुई ग्रहण करूँगी। (शिवाजी के मस्तकपर तिलक करने व माला पिन्हानेके पश्चात् आरती उतारते समय सहसा बायेंसे दायें उड़ते मयूर तथा नीलकण्ठको देख) यह देखो, सुधास्नात विजयश्री तुम्हारे वरणार्थ उतावली हो रही है।

शिवाजी— (पक्षियोंकी ओर देख) जिनपर आप्तोंका अनुग्रह होता है वह सर्वत्र ही विजयी होता है माँ! वस्तुतः इस जनपदका हस्तलाघव आज इन्हींके प्रसादसे उत्तरी व दक्षिणी इस्लामी सल्तनतोंके मध्य कल्पलतावत् अपनी राजसत्ता स्थापित करनेमें समर्थ हो सका है। (अन्य विश्वस्तोंकी ओर देख तानाजीसे) बन्धु तानाजी! यथा-स्थान-स्थित अश्वारोही सेनाध्यक्ष नेताजी पालकर अपने सहयोगी रघुनाथ बल्लालके साथ, खाँके धराशायी होते ही क़िलेसे बिगुल बजते-बजते, पहाड़ी में छिपी छापामार वाहिनी समेत बीजापुरी सेनापर टूट पड़ेंगे। एवं दुर्गसे एक बारगी पाँच तोपोंके गरजते ही पेशवा मोरोपन्त, त्र्यंबक भास्करके सहयोगसे जावली घाटियोंमें छिपी पृतनाके साथ खाँके बेटे फ़ज़ल मुहम्मदके निर्देशनमें वामपार्श्वसे आगे बढ़ती फ़ौजपर अचानक धावा बोल देंगे। देखो प्रतोलीकी रक्षापंक्ति सुदृढ़ रहे।

तानाजी—श्रीमन्त! इसके साथ ही वह योजना भी पूर्ण हो चली है, जिसके अन्तर्गत इस अनुकूल स्थितिसे लाभ उठा-कर अणाजी दत्तोके नेतृत्वमें पन्हालाको हस्तगत करनेकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बात चली थी। वस्तुतः अपने इतने सहयोगियोंके यथा-स्थान सन्नद्ध होनेके साथ ही अपने वाग्मी प्रतिनिधि गोपीनाथ पन्तकी दौत्य कर्म-पटुतासे खाँके दीवान कृष्णा-जीका हमारी वास्तविकताके आँकनेमें अक्षम होना हमें स्वर्णावसर देता है। अतः श्रद्धारूपा माताजी एवं राज परिवारके अन्य सदस्य शिविरमें होनेवाले मल्लयुद्धको दुर्गसे साह्लाद देख सकें, इसके व्यवस्थार्थ मैं सन्नद्ध हो गया हूँ, ऐसा मेरा आत्मविश्वास है।

शिवाजी—(सूर्यको नमस्कारकर) बन्धुवर, दैवज्ञोंके आदेशा-नुसार मांसल खाँसे मल्लयुद्धका शुभ मुहूर्त आ ही पहुँचा है; अतः कुलगुरु भगवान् विवस्वान् वैनतेय गतिसे काद-बिनीका भेदनकर हमारे पथ-प्रदर्शक हो रहे हैं। (दो अङ्ग-रक्षकोंसे संयुक्त श्रीमन्त दुर्गकी सीढ़ियोंसे नीचे उतरते हैं।)

प्रास्थानिक गीत

सुर-सेनानी कार्तिकेयके शौर्य दीखते तुममें हैं,
रण-चण्डीकी रण-विभूतियाँ, ज्वलित वह्निवत् तुममें हैं,
पुर-विघात-सन्नद्ध पिनाकी, सगण दीखते तुममें हैं,
वृत्त-विघातक शक्र वज्रधर सङ्ग मरुद्गण तुममें हैं।
नर-सिंह शक्तियुत हैं वधार्थ दैत्याधिराजके तुममें ही,
रामत्रय साङ्गोपाङ्ग सार्थ भास्वर होते हैं तुममें ही,
कुन्तीकी गौरव-गाथाके, गाण्डीव-प्रथित-यश तुममें ही,
हैं वासुदेवके कर्म-योग प्रतिबिंबित होते तुममें ही।
पुष्पमित्र-विक्रम-अशोक-पुलकेशि-यज्ञश्री तुममें हैं,
बप्पा-कुम्भा-साँगा-प्रताप-गोहिल-हमीर पुरु तुममें हैं,
पीड़ित गो-द्विज, देवी-देवोंके अन्तर्हित बल तुममें हैं,
जीजाकी गुरु-प्रेरित प्रवृत्तियाँ, शाह-दृष्टियाँ तुममें हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकत्र शक्तियाँ जभी हुईं, जयलक्ष्मी थी लालायित हो,
दौड़ी आती आलिङ्गनको, इस राष्ट्रपुरुषके पास अहो !
जाओ विजय-श्रीवरण-हेतु, जिससे देवत्व समादृत हो,
हो इतस्ततः कल्याण, जिष्णुवत् रवि-कुल-पथ-मङ्गलमय हो !

[पट-परिवर्तन]

अष्टम दृश्य

स्थान—प्रतापगढ़-शिविर।

(मदोन्मत्त मुद्रामें स्थित मखमली वस्त्रधारी भीमकाय अफ़ज़ल ख़ाँ सैयद वादाँसे बातें कर रहा है।)

अफ़ज़ल-ख़ाँ—बहादुर, मुझे मजबूरन् तुम्हें शामियानेसे बाहर जानेकी इजाजत देनी पड़ रही है, क्योंकि बज़रिये एक ग़लाम उस अजलके शिकारका अभी अभी पैग़ाम आया है कि आपके इस मुहाफ़िज़से मुझे ख़ौफ़ मालूम होता है, लिहाज़ा मुलाक़ातके वक्त इसका साथमें रहना मुझे नापसन्द है।

चाँदा—हुजूर ! मुझे उस शैतानसे बड़े ख़तरेका अन्देशा है, इसलिये वक़्ते ज़रूरत शमशीरके जौहर दिखलानेकी ख़ातिर मेरा साथमें रहना ज़रूरी समझा जाय।

अफ़ज़ल ख़ाँ—जाओ, लेकिन शामियानेके पीछे छिपे अपने हथियारबन्द हमराहियोंके साथ मेरी एक आवाज़पर दुश्मनपर टूट पड़ो।

चाँदा—हुजूरके हुक्मके मुताबिक मैं मय अपने जवाँमर्दोंके वक़्ते ज़रूरतका इन्तज़ार कर रहा हूँ। (प्रस्थान)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुलाम—(सहसा बाअदब सामने आकर) हुज़ूर ! शिवाजी अपने मुहाफ़िज़ोंके साथ ख़िदमतमें हाज़िर होनेकी ग़रज़से सदर दरवाज़े पर खड़े हैं।

अफ़ज़ल खाँ—उसे जल्दसे जल्द यहाँ तलब किया जाय।

(गुलामका प्रस्थान एवं शिवाजीका आगमन)

अफ़ज़ल खाँ—(घूरकर देखते हुये) तुम्हारे जैसे एक अदने किसानके छोकरेके पास इस शान-शौक़तसे शामियानेको सजानेकी ख़ातिर कहाँसे ज़र व ज़रूरी सरो सामान हासिल किये गये ?

शिवाजी—(सदर्प) यह मेरा काम है, न कि तुम्हारे जैसे यतीमोंका ! जान पड़ता है, नवाब बनाये जानेपर भी भठियारपनेकी बू अबतक नहीं गई; इसलिये तुम्हारी ज़िन्दगीकी शाममें तुम्हारे ज़िगरकी सफाई करना मेरे लिए सवाबी काम होगा।

(खाँ आपेसे बाहर हो बाँयें हाथसे शिवाजीकी गर्दन पकड़ अपनी काँखमें दबा, पेटमें तलवार घुसेड़नेका असफल प्रयत्न करता है, किन्तु इतनेमें ही श्रीमन्त द्वारा समर्थश्रीके स्मरण किये जाते ही, छुटकारा तथा नवाबके पेटमें वघनख घुसेड़ना व पीठके मर्मस्थलमें बिच्छू भोंकना सम्भव होता है। यद्यपि खाँ की 'दौड़ों' की कातर ध्वनि सुन बाँदा अपने जवाँमर्दों-समेत तलवार भाँजता व 'सित-मगरने गज़ब ढा दिया' कह चिल्लाता शामियानेमें आता है; किन्तु इससे पहले ही खाँ-द्वारा अपने केसरिया उष्णीश-वेष्टित विशवी शिरत्राणपर तलवारका वार होते ही, दो-दो तलवार लिये अपने एक अङ्गरक्षककी असि खींच, श्रीमन्त द्वारा खाँ की गर्दनपर जमाई जाते ही नवाब धराशायी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीखता है, तथापि लड़ता-झगड़ता बाँदा शवको खींचते हुए बाहर ले जाता है। यद्यपि नेपथ्यसे होती 'हर हर महादेव'की ध्वनिके प्रतिरोधमें अल्लाहो अकबरकी आवाज़ सुनी जाती है, फिर भी विगुलकी ध्वनि व तोपोंकी गड़गड़ाहटके साथ होती भवानीकी जयध्वनि सबको आक्रान्त कर लेती है।)

[पटाक्षेप]

द्वितीय अङ्क

प्रथम दृश्य

स्थान—दिल्लीके लाल क़िलेमें सम्राट् औरङ्गज़ेबका मन्त्रणागृह।

(बादशाह, प्रधान मन्त्री ज़फ़र ख़ाँ, नवाब शाइस्ता ख़ाँ तथा प्रमुख सेनाधिकारी मुमताज ख़ाँसे विचार-विमर्श कर रहे हैं।)

औरङ्गज़ेब—सल्तनते मुग़लियाके रहनुमाओ! हमेशासे मेरी दिली ख़्वाहिश रही है कि एक दीनदारके मानिन्द ताजिन्दगी कोशिशें करता रहूँ कि हिन्दोस्तानपर रोज़ेहश्र तक ख़ातिर अहले सुन्नतकी सल्तनत क़ायम रहे व यहाँ वाशिन्दगान हमारी आलीशान विरादरीमें बख़ुशी दाखिल होनेमें इज्ज़त महसूस करें; मगर मुझे उस पहाड़ी चूहेकी वजहसे अपनी मक़सदके पूरी होनेकी क़तई उम्मीद नहीं है। क्या इस्लामकी तूफ़ानी शमशीर म्यानमें ही छिपी रहेगी!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज़फ़र ख़ाँ—जहाँपनाह, जैसे सूरजकी रोशनी किसीके फैलाये नहीं फैलती, वैसे ही अगर दीने इस्लाममें मानिन्द खुर्शीद के कोई ताक़त है, तो वह हिन्दोस्तान ही नहीं, समूचे खल्कको अपना लेगा। ऊँच-नीचकी ग़लतफ़हमीसे सैकड़ों क़िस्मोंमें तक़सील हिन्दुओंको मुसलमान बनानेकी ख़ातिर हमें उनके पीछे छुरे व तलवारें लेकर परेशान रहनेकी क़तई ज़रूरत नहीं है; क्योंकि सिर्फ़ ग्यारहसौकी तादादमें यहाँ आये हमारे काफ़िलेकी करोड़ोंमें तब्दीली इसकी बेमिशाल नज़ीर है।

औरङ्गजेब—किसी हद तक मैं भी तो यही महसूस करता हूँ, और इसकी ख़ातिर जहाँ जयसिंह व यशवन्तकी सदारतमें हजारों राजाओं व अमीरो उमराको ऊँचे ओहदोंपर बहाल किया गया है, वहीं दूसरी ओरसे यहाँके बाशिन्दगान क़िस्मके कुफ़्फ़ारको डरा-धमका कर भी मुसलमान बनाया जा रहा है, व कुफ़्रके क़िलोंके मानिन्द उनके बुतख़ानोंको मटियामेट करनेकी ख़ातिर तरह-तरहकी पाबन्दियाँ लगाई जा रही हैं; फिर भी लड़खड़ाते कुफ़्फ़ार हमारी तलवार-की धनी जमातमें धड़ल्लेसे दाख़िल होते नहीं नज़र आते।

मुमताज़ ख़ाँ—हुजूरे आला, शमशीरकी करामातने ही तो हमारे ख़िलाफ़तके कारवाँको जहाँपर अपना सिक्का ज़माने-में इमदाद दी थी। लिहाज़ा यमीनुद्दौला महमूद गज़नवीके मानिन्द क़ाफ़िरोंके ख़िलाफ़ हमें ज़िहादका नारा बुलन्द करना चाहिये।

शाइस्ता ख़ाँ—(दाढ़ीपर हाथ फेरते हुये) हिन्दू शमशीरसे नावाक़िफ़ नहीं होते मुमताज ! हाँ, वे अपने ऊपर तल-वारके वार होनेके बाद ही बदलेकी ग़रज़से इसे इस्तेमालमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लाते हैं। उम्रके लिहाज़से तुम मेरे बेटोंके मानिन्द हो, लिहाज़ा अमीनुल खिलअत महमूदकी ओर न देख, मसयलके हलकी ख़ातिर तुम मुझसे अपनी आनपर मिटने-वाले हिन्दुओंपर तलवार चलानेका इल्म सीखो। जहाँपनाहके परदादा शाहनशाह अकबर इस फनके कितने बड़े माहिर थे उसे दुनियाँ जानती है। दीने इलाहीके जरिये जिस हिकमतसे उन्होंने समूचे हिन्दूको इस्लामी तहजीब सिखलानेकी कोशिश की वह तो अपना कहीं सानी हीं नहीं रखती।

मुमताज खाँ—जनाब नवाब साहबकी रायके मुताबिक हमें यह हर्गिज न भूलना चाहिए कि हमारी कामयाबी हमेशा काफ़िरोंको काफ़िरोंसे लड़ाते रहने में ही है, बशर्ते हर मुसलमान इत्तहादे मिल्लतकी ख़ातिर बज़रिये ख़ुदा हिन्दुस्तानकी चप्पे-चप्पे ज़मींको अपने हक़में इन्तख़ाब हुआ समझें।

औरङ्गजेब—मगर यही तो मुश्किल है कि इस्लामकी ख़ातिर भी हम एक नहीं हो पाते। मैंने बड़ी कोशिशें कीं कि बीजापुर व गोलकुण्डाके नवाबान सल्तनते मुग़लियाके हर क़िस्मकी मातहदी क़बूलकर पूरे हिन्दोस्तानपर इस्लामी हुकूमत क़ायम करनेमें हमारा हाथ बँटायें, लेकिन ये अहले तशा तो बुततुवाफ़ोंसे भी ज्यादा ख़तरनाक हैं (आवेशसे) चाहे कुछ भी हो, हम उमरके पैरोकार इन शियोंको हिन्दोस्तानसे उखाड़कर ही दम लेंगे। वाह रहते तो हैं ये शैतान हमारे दायरेमें, मगर इनकी नज़ अतका तख्त इस्लामकी नङ्गी तलवारके घाट उतरे पा सियोंके आतिशे बहरामके मानिन्द फारसमें रहता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज़फ़र खाँ—बादशाह सलामत, सब कुछ करते हुये हम ऐसे जायज तौर तरीक़े अख्तियार करें, जिनसे किसीको यह पता तक न चले कि हुकूमत अपने यहाँ बनिस्बत औरोंके सुन्नियोंको तरजीह देती है।

औरङ्गजेब—वज़ीरे आज़मको मालूम होना चाहिए कि सल्तनतने अमन व इन्साफ़की ख़ातिर बहुतेरे सुन्नियोंको भी तलवारके घाट उतार दिया है। लिहाज़ा कुफ़्फ़ार अपने ऊपर की गई सख्तियोंके बाबत चिल्लपों मचायें तो यह उनकी नादानी है। मैं उनके इबादतगाहोंको ज़मींदोज़ा करवा रहा हूँ, व उनके मठोंको गिरवाकर उनके महन्तों और अहलकारों तक को सजायें दिलवा रहा हूँ, वह सिर्फ़ इसलिए कि इनकी जहालियतसे मुल्कमें बदइन्तज़ामी फैल रही है। अकसर कहीं-कहीं छोटे मेकदारके मन्दिर मठों तकमें उनके शिबैत शराब पीकर खूबसूरत नौजवान लड़कियोंसे अय्याशी कर ख़ुदाकी हुक्म अदूलीके साथ ही ज़नाके बाज़ार गर्म कर रहे हैं, इसलिये इस बुतशिकन सल्तनतके लिये क़ुफ्रके इन क़िलोंका ढहा देना लाज़िम हो रहा है, व ज़नाके ज़िन्दे पुतको नाच-गानके सरो सामानका दफ़नाना सियासती मसला हो रहे हैं।

ज़फ़र खाँ—आलीजाह, आख़िर इसमें दस्तन्दाज़ शिवाजीको शिकस्त करने व समूचे जनूबी हिन्दोस्तानपर इस सल्तनतकी क़ब्ज़ाबहालीकी ख़ातिर किसकी सदारतमें काम करनेसे कामयाबी मिलेगी, इस वक़्त तो यही मसला हमारे सामने है।

औरङ्गजेब—वज़ीरे आज़म, मैं आपकी राय तहेदिलसे पसन्द करता हूँ और यह भी महसूस करता हूँ कि जनाब मामू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साहब गोलकुण्डापर हमलेके वक़्त हमारे साथ ही कामयाब होनेसे जनूबमें अज़हद कामयाब होंगे।

मुमताज़ ख़ाँ—हुज़ूरे आली, मैं तो सल्तनतकी ख़ातिर वुज़ुर्ग दिमाग़ नवाब साहबको ख़ुदाकी देन ही समझता हूँ; लेकिन इसके साथ ही मेरी नाक़िस अक़्लमें यह भी जँचता है कि नवाब साहबके साथ किसी ज़बर्दस्त हिन्दू राजाको भी जनूबमें भेजना लाज़िम होगा, ताकि हिन्दू अहलकारोंको यह ज़िक्र करनेका मौक़ा न मिले कि जहाँपनाह हमारी वनिस्वत अहले हदीसों और उनमेंसे भी हमरिश्तोंको तरजीह देते हैं।

औरङ्गज़ेब—मुमताज़! इसे मैं भी वख़ूबी समझता हूँ। इसीलिए मैंने यशवन्तको भी अमीरुल उमरा सिपहसालारे आज़म नवाब बहादुर जनाब मामू साहबके साथ उधर भेजनेका इरादा कर लिया है। वह क़ाबिले यक़ीन भले ही न हो लेकिन उसकी बहादुरीका क़ायल तो हमें होना ही पड़ेगा लिहाज़ा अगर ख़ुदाकी फ़ज़ल हुई तो वह मानिन्द भालेके अपना फ़र्ज़ अदा करेगा।

ज़फ़र ख़ाँ—मैं दुश्मनोंके दुश्मनको अपनी ढाल बनानेके माहिर नवाब साहबको जनूबी सूबेदार बनाये जानेपर मुबारक़बाद देता हूँ।

औरङ्गज़ेब—मैं भी इसकी ताईद करते हुए जनाब मामूसाहबसे उम्मीद रखता हूँ कि आप एक हफ़्तेके अन्दर ही मय यशवन्त व मुमताज़ वग़ैरहके उधर तशरीफ़ ले जायेंगे। वहाँ आप जब जैसी ज़रूरत समझें, तब तैसे ही तौर-तरीक़े इस्तेमालमें लायेंगे। मगर उस पहाड़ी चूहेसे अपनी हिफ़ाज़त करते हुए उसे शिकस्त देना आपका पहला काम होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिया नवाबों, फिरङ्गियों व इस्लामी मुल्कोंके सौदागरों व ठिकानेदारोंपर भी मानिन्द ख़िराज वसूलीके आपको कड़ी नज़र रखनी होनी। पस आप जैसे दिमाग़दार बुज़ुर्ग से मुझे इसकी निस्बत और नहीं कहना है।

मुमताज़ ख़ाँ—अगर मौलाकी मर्ज़ी हुई तो हम जनाब नवाब बहादुरकी सदारतमें आगे बढ़कर उस पहाड़ी चूहेके बिलमें पानी भर देंगे, क्योंकि हमें अपने दीनेपनाहकी ख़ुदापरस्ती-पर नाज़ है।

औरङ्गज़ेब—मुझे अपने दीनदार हमराहियोंपर फ़ख्र है।

शाइस्ता ख़ाँ—अल्लाहताला सल्तनते मुग़लियाकी ताक़तें बढ़ाते रहनेकी ख़ातिर हमारी जमात व शाहनशाहकी हमेशा इमदाद करता रहे।

औरङ्गज़ेब—उस पाक परवरदिगारके फ़रमानसे ही इस हुकूमत के तमाम काम हो रहे हैं, वर्ना एक नाचीज़ इन्सानमें इतनी ताक़त कहाँ जो इस जाहोहश्मत सल्तनतका बेड़ा पार लगा सके। (तस्बीह घुमाते बादशाहके साथ अल्लाहो अकबरका नारा लगाते सबका प्रस्थान।)

[पट-परिवर्तन]

द्वितीय दृश्य

स्थान—बीजापुरमें सुल्तान अली आदिलशाहका मन्त्रणा गृह। (उदास मुद्रामें स्थित बादशाह प्रधानमन्त्री ख़वास ख़ाँसे बातें कर रहे हैं)।

बादशाह—दुनियाँमें हमेशाकी ख़ातिर किसीकी तक़दीर एक-सी बुलन्द नहीं रहा करती, फिर भी वह ख़ुशनुमा इन्सान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बड़ी क़िस्मतवाला समझा जाता है, जो मुफ़लिसके घर पैदा होकर, अमीरीसे गुज़रता बहिश्तमें पनाह पाता है। ऐ रब्बेजलील! तेरी क़ुदरतकी शिफ़त तो यही है कि जो आफ़ताब सवेरेसे दोपहरतक अपनी हैरत अंगेज़ क़िस्मत-पर नाज़ करता रहता है, रातकी काली चादरसे ढक जानेपर किसीकी याददाश्तपर भी नहीं चढ़ पाता। उफ़, ख़ुदाकी खिलक़तमें न कोई शाह है न गदा, बल्कि सभी, वे चाहे इन्सान हों या हैवान या और कुछ, उस बाजीगर-की तिलस्मी छड़ीके इशारे मानिन्द भेड़ोंके क़यामतकी ओर बढ़ते चले जा रहे हैं, जो क़यामतकी भी क़यामत है।

ख़वास ख़ाँ—हुज़ूर! पानीके बुलबुलोंके मानिन्द दुनियाँकी तमन्नायें ज़िगरके समुन्दरमें उठती व डूबती रहती हैं, मगर अक़्लमन्द इनकी परवाह नहीं किया करते। दर-असल आला इन्सान तो वही है जो उगते व डूबते वक़्तके सूरजके मानिन्द हमेशा एक-सा नज़र आता है।

बादशाह—इसे समझते हुए तो ख़ामोश होना ही पड़ता है, लेकिन भाई अफ़ज़लकी ताक़त, बाँदाकी शमशीर चन्द्रराव मोरे व बाजी घोरपड़े जैसे मनसबदारोंकी जुदाइयाँ क्या भूलने लायक़ वाक़यातें हैं? उफ़, बेजान ज़रो-ज़मींके टुकड़ोंके लिए जानो-मालकी बरबादीका नाम ही कामयाबी है? या इलाही! इससे दरकिनार रहनेकी ख़ातिर इस इन्सानपर तेरी मेहर व करम हो।

ख़वास ख़ाँ—अफ़सोस कि ख़ुदाको हमारा दुश्मनोंसे पहले दोस्तोंसे आगाह होना मंज़ूर न था, वर्ना रुस्तमी जमान व सलावते जङ्ग बनाये गये सिंही जौहर हमारी राहके रोड़े न बन पाते। मैं महसूस करता हूँ कि पन्हालाकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हारने हमारी ताक़तका पर्दाफ़ाश कर दिया है। मुझे यह भी मालूम है कि आपके हुकूमतकी बागडोर सँभालते ही शाही अम्माको हजकी सूझी, फिर भी ख़ुदाका शुक्र है कि जहाँ-पनाह यूसुफ़ आदिलशाहकी शमशीर अभी भी हमारे हाथोंमें है और मल्का चाँद बीबीकी नज़ीर हमारे सामने है।

बादशाह—(बातें अनसुनी कर) आज मैं जलीलुल्क़द्र आदिल-शाही मसनदपर बैठा अपनी बदनसीबीपर तरस खा रहा हूँ। आज मुझमें मुग़लों व मराठोंसे जमकर लोहा लेनेकी ताक़त नहीं। अपने ख़ञ्जरपर इतरानेवाला इन्सान! तू कर्बलाके शहीदोंको मद्दे नज़र रख इन्सानियतका सबक़ सीख़!

ख़वास ख़ाँ—अफ़सोस कि जो राजा शाहजी हुकूमतकी एक आवाज़पर अपना सर हथेलीपर लिये फिरते थे, वे ही आज अपनेको कर्नाटक व तञ्जौरके खुदमुख़्तार समझ हमसे मिलनेमें तौहीन समझते हैं। बेटेके सिताराबुलन्दी के साथ ही उनके दिमाग़का पारा भी आसमान चूमने लगा है तो फिर हम अपने बिरादराने रिसालेको ही क्यों न मुहय्या करें।

(सहसा एक ग़ुलामका आकर कोर्निस अदा करना)

बादशाह—क्या है?

ग़ुलाम—जहाँपनाह! राजा शाहजी शाही ख़िदमतमें हाजिर होना चाहते हैं।

ख़वास ख़ाँ—मुल्तानुल्मशायक शेख़जिलानी हमारे दस्तगीर हों।

बादशाह—(इशारेसे इसकी ताईदकर ग़ुलामसे) जाओ, बाइ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्जत यहाँ आनेकी इत्तला करो। (ग़ुलामका प्रस्थान, शाहजी का आनमन)।

शाहजी—(बादशाह द्वारा दायें बैठाये जाते हुये) बादशाह सलामत.....!

बादशाह—आप मुझे बादशाह न कह इन्सान कहकर पुकारें क्योंकि मुझे मसनदकी बनिस्बत आपकी गोद ही भली जँचती है और इन्सानियतका दर्जा इस चन्दरोज़ा बा शाहतसे ऊँचा है।

शाहजी—इसे मैं भी महसूस करता हूँ।

बादशाह—मेरी समझसे बादशाहतका मतलब होता है; खल्क़ तमाम ख़ुराफ़ातोंकी पेटारी व ख़ुद ख़ुदा बननेकी दि ख्वाहिश, जिनसे मुझे सख्त नफ़रत हो रही है। रा साहब ! आपको यह तो मालूम ही होगा कि नज़ूरे सिता मरहूम दाराशिकोहसे अच्छा जानकी जिगरी दोस्ती थी ?

शाहजी—काश, कट्टरता व तङ्गदिलीसे ऊपर उठा सूफ़ी द औरङ्गज़ेबका शिकार न होकर आज हमारे बीच होता !

बादशाह—अफ़सोस, ख़ुदाको शबके अँधेरेमें चाँदनीका दि काना मंज़ूर न था, फिर भी क्या इससे हम यह न समझ सकते कि दुनियाँमें मतलब ही लड़ा करते हैं कि मज़हब या ग़ैर बिरादराने ताल्लुक़ात।

शाहजी—आख़िर इसके मुतल्लिक़ मुझसे चाहते क्या हो ? शा

बादशाह—यही कि आप जाकर शिवाजीको समझावें कि आपसी लड़ाई-झगड़ोंको तर्क कर मुग़लोंको आगे बढ़ रोकें। हमारे रश्मो-रिवाज़से वाक़िफ़ होनेसे आप मानना ही होगा, कि कहनेको बीजापुर व गोलकुण्डा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सल्तनतें भले ही शियोंकी हों, लेकिन ये कुनवापरस्त न होकर ज़म्हूरिया हैं, लिहाज़ा अगर इनका ख़ातमा हुआ तो भोंसला-औलादको फ़क़त् सल्तनते मुग़लियाकी क़ैदमें ही न सड़ना होगा, बल्कि उसकी तलवारके घाट उतरनेको मजबूर होना पड़ेगा ! इसीसे मैं तो कहता हूँ कि शिवाजी यहाँ आकर बहैसियत वज़ीरेआज़म बीजापुरकी बागडोर सँभालें, क्योंकि आपको मालूम होना चाहिये कि शायर फ़िरदौसीने ज़रके लोभमें आकर महमूद ग़ज़नवीकी तारीफ़में शाहनामा लिख डाला, लेकिन मुल्कमें ऐसे हिन्दुओंकी कमी नहीं है, जो औरङ्गज़ेबकी तारीफ़में शाह-नामेसे बड़ी किताब बिला ज़रके लिये लिख डालें ! फिर भी अगर शिवाजीको यह मंज़ूर न हो, तो समझौतेकी शर्तोंके अलफ़ाज़ तो आपको मालूम ही हैं ?

ख़वास ख़ाँ—राजा साहब ! इन्सानियतके नशेमें लुढ़कनेवाले हुमायूँने बहन कर्मवतीकी राखीकी कर्ज़ अदायगीकी ख़ातिर भागती हुई सल्तनते मुग़लियाको, इमाम हुसैनके पैरोकारोंकी इमदादसे, जिन मुहब्बतकी ज़ञ्जीरोंसे जक-ड़नेमें कामयाबी हासिलकी थी; रहमदिलीसे हाथ धोकर नमाज़ी बना औरङ्गज़ेब उन्हें तोड़ चुका है। ऐसी हालत-में आप ख़ुद महसूस करें कि किस रास्तेके अख़्तियार करनेसे हमपर ख़ुदाकी मेहर होगी ?

शाहजी—सरजा शिवाजी मेरे कहनेमें नहीं है। फिर भी यक़ीन रखो, मैं तीर्थयात्रा करते हुये उसके यहाँ जाकर महीनों ठहरूँगा और उससे इसका वादा कराऊँगा कि मेरे जीते जी बीजापुरपर आँच न आने पावे। लेकिन बावजूद उधर जानेके मैं आज ही यह एलान करता हूँ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि जब तक इस भोंसलेके हाथमें तलवार है, मुग़ल बीजापुरमें क़दम नहीं रख सकते, फिर भी अगर उन बेढङ्गी रफ़्तारवालोंको, अपनी ताक़त पर नाज़ है, तो हम भी उन्हें यह बतला देंगे कि हमारी तूफ़ानी तलवारोंमें कितना पानी है !

(तलवारें उँचीकर सल्तनते बीजापुर ज़िन्दाबादका नारा लगाते सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

तृतीय दृश्य

स्थान—पन्हाला दुर्गकी एक वाटिका ।

(नेपथ्यसे होती गीत सुननेके बाद श्रद्धालु शाहजी, रानी जीजाबाई तथा राजकुमार शिवाजीसे बातें कर रहे हैं ।)

गीत

सृष्टि-स्थिति-लय-कर्त्री माँ की जय हो, माँ ! रण-भेरी—
सदाचारकी जयोद्घोषिणी, बजे निरन्तर तेरी ।
संयोग-वियोगोंमें ममत्त्वकी, बननेवाली चेरी,—
वासना हटे, क्षात्रोदयसे रक्षित हो संस्कृति-फेरी ।
उज्वल अतीतकी स्मृतिसे संबल, सुप्रभात-कङ्कणवाली;
भारत सावित्री व्यक्त भावसे, शिवा-भवानी-स्मृतिवाली;
ब्रह्माण्ड-विदित शंशित-विक्रम पुत्रोंसे अर्चित पद-वाली,
जय हो तेरी हे अंब ! सदा, जय हो तेरी खप्परवाली !

शाहजी—वत्स ! अनेक ऐसी बातें होती हैं, जिनका मूल्याङ्कन की दृष्टिसे सबपर प्रकट होना उचित नहीं होता, इसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैंने कल तुम्हें इस लता-वितानमें मन्त्रणाके हेतु आदेश दिया था।

शिवाजी—पूज्य पिताजी! क्या इस गरीयसी तीर्थयात्रामें सम्मिलित श्रद्धामयी माताजी एवं स्नेहास्पद व्यङ्कोजीसे भी यह मन्त्रणा गोप्य है, जो यहाँ उपस्थित न हो सके?

जीजाबाई—मन्त्र अपडक्षीण कहा गया है, अतः मैं तो चाहती हूँ, कि प्राणनाथ मुझे भी यहाँसे प्रस्थित होनेका आदेश दें।

शाहजी—नहीं प्रिये! तुम्हारा तो भोंसला परिवारमें सम्मिलित होना ही इस महाराष्ट्रपर एकाधिकारार्थ हुआ है, जिसके उपलक्षणरूप कल्याणसे गोवा-पूर्व तकका कोकण प्रदेश तथा भीमासे वर्धातकका घटमाला प्रदेश; मय चाकणसे भीमा तक व पुरन्दरसे कल्याणतककी जागीरके अपने हो चुके हैं। यदि कर्नाटक व तञ्जौरकी जागीरों व यहाँके पचास हजार पैदल व सात हजार घुड़सवारों व दुर्गादि स्थल एवं जलीय उपकरणोंको भी धनधान्यके साथ इसमें जोड़ दिया जाय, तो हमारी दृढ़स्थिति किसे न आतङ्कित कर देगी!

जीजाबाई—इसीसे तो पुर्तगालियों जैसे विदेशियोंकी भी आकांक्षायें धूमिल पड़ गई हैं और इन बैरियोंने बेकार समझ लागत मूल्यपर अपने जलदस्युता करनेवाले पोत व अन्य युद्ध सामग्रियाँ हमें देना प्रारम्भ कर दिया है।

शाहजी—शिवा! आज यह भी सर्वविदित है, कि हमारे प्राणोंके ग्राहक तथा तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राताके वधके कारण नराधम अफ़ज़लकी मज़ारपर कालचक्रका उन्मत्त अट्टहास हो रहा है।

शिवाजी—उस कहानीमात्र शेष नरपिशचके भूलुण्ठित शिरके न्यासपर निर्मित प्रतापगढ़का अफ़ज़ल बुर्ज भले ही काँकेरी-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की रणस्थलीका प्रतिशोध हो, परन्तु रक्ततर्पित अग्रज तथा
इस पन्हालाके गौरव वीर बाजीप्रभुसे फिर कभी भेंट
हो सकेगी, पिताजी ?

जीजाबाई—आर्यपुत्र ! पामर अफ़ज़लके शिर काटनेवाले शम्भू
जी कावजीको सामने देखते हुए भी, क्षत्राणियोंके लि
प्रयुक्त बीरसू शब्द मुझे भयावह प्रतीत हो रहा है, जिसमें
मेरी गति अवरुद्ध हो रही हैं। आज मैं अपनेको गहन
विजनमें धधकते वज्रानलके समीप देख रही हूँ।

शाहजी—प्रिये ! व्यामोहसे दूर हो, अपनी नैसर्गिक स्थितिमें
प्राप्त करो। अपने मृत्युञ्जय कुलकी उस इतिहास-गाथाको
देखो, जिसकी प्रेरणासे अमृतनाभि पद्मनाने उदयोन्मुख
उदयके रक्षार्थ, अपने एकमात्र लालको महाकालको समर्
र्पितकर, ध्रुववत् अपने पदको अन्तरिक्षस्थ कर लि
है। इसी वीरव्रती कुलकी पद्मावती एवं कर्मवती जै
महासतियोंने हँसते हुए युद्धोंके अजेय युद्ध-कुण्डोंके साक्ष
बने अपने पति-पुत्रोंकी आरतियाँ उतार हुतभुक्के तृप्त
आत्मसमर्पणकर अपनेको हिरण्यगर्भकी वरेण्य सन्त
सिद्ध कर दिया है।

जीजाबाई—प्राणनाथ ! तुम्हारी प्रेरणासे अनुप्राणित हो, अ
मैं अपनेमें ही उक्त महादेवियोंका आत्मानुसन्धान कर र
हूँ। (ध्यानमग्न हो जाती हैं।)

शाहजी—प्रभविष्णु शिवा ! अपने त्रैलोक्य-पावन सूर्यकुल
उस बलिदानी गाथा पर ध्यान दो; बप्पा, गोहिल, कुम
साँगा, प्रतापादिके गौरवगान जिसके अध्याय हैं। आ
ष्मन् ! उद्भव-विकाश एवं संहार नियतिके शाश्वत सिद्धा
हैं, जिनसे जागरूक हो, जीवनकी पूर्ण इकाईमें समावि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

.CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एकलिङ्गके दीवाने सैनिक सन्मार्ग पर बलिदान होना सम्मानका विषय समझते हैं, न कि विषादका ! लो इस तुलजा खड्गके साथ मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, कि तुम्हारा वर्चस् सीसौदिया कुलका कीर्तिमान बने।

(शिवाजी खड्गको सिरसे लगाते हैं।)

जीजाबाई—वत्स ! अपने पुण्यश्लोक पिताकी इस यथार्थ भाषाको हृदयङ्गमकर उस अन्तरिक्षस्थ देवपुरुषकी दीक्षाको कार्यरूपमें परिणत करो, जिसने अपने ही लगाये वृक्षसे एक फल तोड़नेके कारण, श्रीमन्त भोंसलेके अनुशासन-भङ्गके प्रायश्चित्त स्वरूप अपना दक्षिण हस्त आजीवन खुला रख, नैतिकताके स्तरकी पराकाष्ठा कर दी है।

शिवाजी—माँ! मैं पूज्य पिताजीके उपदेशको हृदयङ्गमकर अपने चिरप्रकाशसे स्पन्दित उस ब्रह्मर्षिके आदर्शोंको मूर्तरूप देनेको दृढ़प्रतिज्ञ हूँ !

शाहजी—शिवा ! वाह्यशक्तिके विकाशार्थ अन्तर्वर्ती बल आवश्य होता है। अतः उदारचेता दादाजीकी शैलीसे विश्वस्त होनेके कारण, तुमसे मेरा कहना है कि अब तुम मेरे जीवन पर्यन्त बीजापुरपर चड़ाई न करना, और हो सके तो उध्वस्त आदिलशाह व त्रस्त कुतुबशाहसे मिलकर मुग़लोंके विरुद्ध संयुक्त मोर्चा बनाना !

शिवाजी—मैं इसके लिए प्रतिश्रुत हूँ पिताजी !

जीजाबाई—अनुशासन-प्रियताके साथ ही परिस्थितियाँ भी हमें ऐसा करनेको बाध्य करती हैं; क्योंकि राज्यका राजनीतिक विकाश उसकी आर्थिक दृढ़ता एवं अतिमानवोंपर निर्भर रहता है। अतः हमारी तलवारें इन रियासतोंके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिए सप्तजिह्वकी लपलपाती जिह्वायें न बन, शरच्चन्द्र-मरीचिवत् सुखदायिनी हों।

शिवाजी—यही होगा माँ! सांसारिक वात्याचक्र इस सम्बन्धमें मुझे नियति-पथसे विरत न कर सकेंगे!

शाहजी—मेरी यह तीर्थ-यात्रा सर्वतोभावेन सफल हुई। कुल-देवी तुलजा भवानीके दर्शनके साथ ही शिवाके सफल-तार्थ मानीगई एक लाखके सोनेसे वङ्गलोरमें बनी मूर्ति उन्हें समर्पित हो गई। शिङ्गनापुरमें श्री महादेवजीकी पूजा व श्रद्धेय पिताजीकी समाधिकी अभ्यर्थता व सत्सम्बन्धी दान-पुण्य भी हो गये। पण्ढरपुरमें विठोवा व खण्डोवाकी झाँकी भी मिली। जेजरीमें तो तुम सकुटुम्ब सपेशवा मुझसे मिले ही गये थे।

शिवाजी—नियुक्ति एवं निर्माणके सम्बन्धमें आपकी क्या विचारधारा है पिताजी?

शाहजी—तुम्हारे ब्राह्मण रघुनाथ बल्लालके इस पन्हालाके दुर्ग-पाल बनानेके कार्यसे तथा प्रतापगढ़में भवानीके नवनिर्मित मन्दिरकी वास्तुकला एवं चन्द्रमयूखवत् मुखरित चित्राङ्कनको देख बड़ी प्रसन्नता हुई। राजगढ़की अपेक्षा रायरीको रायगढ़का नाम देकर आबाजी सोनदेव-द्वारा राजधानी बनवानेकी तत्परता आकर्षक जँची। देखो, चलते समय मैं इसे फिर दोहराता हूँ कि आदिलशाह तुम्हें पहले कहे जिलोंके साथ, सात लाख वार्षिक देते रहेंगे व और तुम्हारे सचेष्ट प्रतिनिधि श्यामजी नामक पड़े बीजापुरमें अधिष्ठित होंगे।

शिवाजी—पिताजी! आपकी सभी आज्ञायें शिरोधार्य हैं किन्तु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपके द्वारा प्रभुकी थाती इस समृद्ध राज्यकी सत्ताका त्याग चिन्त्य है।

जीजाबाई—इस सांस्कृतिक राज्यकी परिधि प्राणनाथकी ऋतम्भरा प्रज्ञासे संरक्षणकी अपेक्षा रखती है, यद्यपि इसे शिवाके असाधारण समारम्भ तथा व्यवस्थित दृष्टि-कोणपर विश्वास है।

शाहजी—मुझे यहाँ रहनेमें कोई आपत्ति नहीं है किन्तु तुम लोगों के हितार्थ ही मेरा दक्षिणमें रहना अत्याश्यक है। शिवा! मेरे बाद अपने वैमात्र व्यङ्कोजीसे औरस बन्धु जैसा वर्तना तथा विमातासे माता जैसा। मैं चाहे जहाँ कहीं भी रहूँ, तुम्हारे जैसे शक-प्रवर्तक आत्मजको राष्ट्रिय चेतनाका प्रहरी बना अजर अमर हो गया हूँ। (प्राचीसे सूर्योदयके साथ नेपथ्य-गीत तथा प्रकाशपुञ्जका अवतरण)

गीत

जीवन-ज्योति जगाओ, देव! चिरजीवन ज्योति जगाओ!
वसुन्धराके अञ्चलसे, भ्रम-तमोराशि विलगाओ;
तमसावृत बुद्धि-परिष्कृतिको, उद्गीथ पुनीत सुनाओ,
अन्वय-व्यतिरेक-विशिष्ट पुराणी सृष्टि-हृदय हुलसाओ;
तापत्रय-शान्ति कराओ ॥ जीवन० ॥
जानराज्यके हेतु समन्वय नीति-महत्त्व जँचाओ,
ऊँघ रही शाश्वती प्रकृतिका नैतिक सत्त्व बढ़ाओ;
शाश्वत-जीवन-प्राप्ति-हेतु, मानस-व्यामोह-हटाओ,
अध्यात्म-भूति-बिखराओ ॥ जीवन० ॥

[पट-परिवर्तन]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुर्थ दृश्य

स्थान—चाकण-दुर्गमें नवाब शाइस्ता ख़ाँका मन्त्रणा-कक्ष। (नवाब, महाराज यशवन्त सिंह तथा मुमताज़ ख़ाँसे बातें कर रहे हैं।)

शाइस्ता ख़ाँ—आप लोगोंकी जवाँमर्दीसे शिवाजीका कल्याणका क़िला हमारे क़ब्ज़ेमें आ गया है, व इसके सिवा उसके और भी कई छोटे-मोटे क़िले हमारे हाथ आ गये हैं, लेकिन यह तयशुदा बात है कि अगर इस चाकणकी फ़तहके मानिन्द ही फिरङ्गोजी नरसालासे मुहिम लेना पड़ा, तो मराठोंके सामने ठहरना हँसी-ठट्ठा न होगा, क्योंकि इसमें हमारे क़रीबन् पौने तीन सौ जवान काम आये और लगभग ६ सौ ज़ख्मी हुये व बहुत सी दौलत व लड़ाईके सरो समान बरबाद हुये।

मुमताज़ ख़ाँ—हुज़ूर, आजसे चन्दरोज़ पहले जब सल्तनतके फ़रमाबरदारोंने सरकारी ख़िदमतमें अर्ज़की थी, कि सदरमें आनेवाले ख़ज़ानेके बज़रिये शिवाजीके छापा-मारों लूट लिये जानेका अन्देशा है, तो हुज़ूर उनपर बेतरह बिगड़, उन्हें लानत देते चूड़ियाँ पहनाने लगे व उन्हें चिढ़ानेकी ग़रज़से अपनी क़ुमक़के साथ उदयराज देश-मुखकी बीबी रानी बागिनको उधर भेजा, लेकिन उसकी बहादुरीमें कोई शक़ न होने पर भी इसका जो अञ्जाम हुआ वह सभीको मालूम ही है। लेकिन क्या अब भी शिवाजी-की फ़राख़दिली व जवाँमर्दीमें शक़ो सुबहेकी गुञ्जाइश है, जबकि उसने लड़ाईके सरे मैदानमें रानी बागिनको क़ैद करके भी, उसे बाइज़्ज़त उसके शौहरके पास भेजवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिया व बहादुर केशर सिंहकी बूढ़ी अम्माँ व नौजवान बेटीको क़िलेकी बुर्जसे पकड़ीजानेपर भी उन्हें शाही मर्तबेके साथ उनके सूबा राजपूताना भेजवा दिया ?

शाइस्ता ख़ाँ—या ख़ुदा ! अगर बादशाह अपनी दरियादिलीसे विरादरें वतन हिन्दुओंके दिलो दिमाग़पर क़ाबिज़ हो हो पाते ! वाक़ई हिन्दू कैसी दिलेर क़ौम है, इसे कहने सुनने की क़तई जरूरत नहीं है, और न यही कहनेकी हाजत है कि वह अपने बचनेकी कोई सूरत न देख, सीधे बहादुरों-की मौत मरना जानती है। दुश्मन चाहे ग़ैर हों या हम क़ौम, क्योंकि हमारे परवलगढ़के ईमानदार सदर केशर-सिंह व उसके हमराहियोंकी बीवियों तकने अपने ख़ाबि-न्दोंकी शिवाजीके मुक़ाबलेमें रश्के जहाँ शहादतसे भी पहले जौहरकी आगमें जलकर इसकी बेमिसाल नज़ीर क़ायम कर दी है। भला ऐसी दिलेर क़ौमपर उसकी मर्ज़ीके खिलाफ़ कौन हाबी हो सकता है ?

मुमताज खां—काश, मिल्लतकी नींवपर खड़ी इस्लामी तहज़ीब दीने पनाहको यह समझा पाती !

शाइस्ता ख़ां—बादशाह अपनेको सुन्नते नबीका पाबन्द कहते नहीं अघाते, फिर भी किसीपर यक़ीन करना नहीं जानते ! उन्हें न तो मुसल्मान मातहदपर यक़ीन है न किसी हिन्दू ओहदेदारपर ! यही नहीं, उनके लिए अपने शाहज़ादे तक क़ाबिले इतमीनान नहीं हैं; अफ़सोस ! एक ज़माना बादशाह अकबरका था; जब हिन्दुओंकी तो कोई बात ही नहीं, दस्तूर मेहरजी राना जैसे पारसी आलिमों तकको बाइज़्ज़त अपने मजहबी वसूल समझानेकी ख़ातिर फतेहपुर सीकरीके इबादतख़ानेमें बुलाया जाता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

था और आजकी हालत यह है कि गैर सुन्नी आलिमकी सायासे भी नफ़रत की जाती है।

मुमताज़ खां—हुज़ूर! यही तो वजह हैं, जिससे हुक़ूमतमें चारों तरफ़से बग़ावतकी आवाज़ें बुलन्द हो रही हैं और ऐरे ग़ैरे तक ख़ुदसर होनेकी फ़िराक़में हैं। तुर्रा तो यह है, कि अपने ख़र्चसे मस्जिदें बनवाकर व लड़ाइके अय्यामें पाई गई क़ुरान शरीफ़की क़िताबें मुसल्मानोंके पास भेजवाकर शिवाजी इन्हे भी अपना रहा है। यही नहीं, बहुतेरे मुहद्दिस तो उसके रायदेहन्दा तक बन चुके हैं।

शाइस्ता खां—फ़िक़्रेपरस्त बादशाहने अगर वफ़ादारों व क़ाबिलोंकी क़द्रदानी जानी ही नहीं, तो इसके लिए हम क्या करें? जानते हो, शिवाजीसे नाराज़ होकर हमारी ख़िदमतमें आया उसका गुमाश्ता शम्भूजीकावजी पूरे हिन्दोस्तानपर सल्तनते मुग़लियाका झण्डा फ़हरा देता, अगर उसे तरजीह दी गई होती; क्योंकि लश्करसे घोड़ेके पैर पकड़, मानिन्द जोड़ीके उसे फेरनेवाले इन्सानकी तस्वीर तक इन आँखोंने न देखी थी; मगर किया क्या जाय, यहाँ ऐसे शानदार इन्सानोंको यहाँ मौतके घाट उतरना पड़ता है!

यशवन्त सिंह—चाहे जो भी हुज़ूर, हम तो अपनेको सल्तनत-पर क़ुर्बानकर चुके हैं।

शाइस्ता खां—काश, मराठे भी मानिन्द आपके इस सल्तनतके मातहद बन पाते!

ग़ुलाम—(सहसा सामने आकर एक पत्र नवाबको देते हुये) हुज़ूरका ख़त पढ़नेके बाद यह ख़त मेरे हाथ देते हुए शिवाजीने कहा कि मैं नवाब साहबका शुक्रग़ुज़ार हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शाइस्ता खाँ—(पत्रको देख, यशवन्तसिंहको देते हुये) ख़तके हुरूफ़ तो निहायत ख़ूबसूरत हैं; लेकिन देखना तो वह है कि इसके मतलबमें भी दानिशमन्दी है या नहीं ! ख़त तो संसकिरत ज़बानमें लिखा है। कहिये महाराजा साहब ! आप तो इस ज़बानको बख़ूबी समझ लेते होंगे ?

यशवन्त सिंह—(ख़तके मज़मूनको देखते ही अन्यमनस्क हो चिन्तित मुद्रामें) हुज़ूर, मैं कुछ संस्कृत तो ज़रूर समझ लेता हूँ लेकिन···· !

शाइस्ता खाँ—फिर लेकिन क्या ?

यशवन्त सिंह—यही कि इसका मतलब बहुत बुरा होता है।

शाइस्ता खाँ—इससे क्या हुआ ? आप पसोपेशमें न पड़ मुझे इसे बख़ूबी समझावें।

यशवन्त सिंह—हुज़ूरने शिवाजीको नज़रमें लिखा कोई ख़त भेजा था, जिसके जवाबमें उसने लिखा है कि मैं बन्दर ही नहीं, बल्कि शाखामृगोंका बानी हनूमान् हूँ और जिस तरह उन्होंने अपनी क़ुमक़के साथ श्रीरामचन्द्रजीको रावण-की लङ्काको मटियामेट करनेमें मुक़म्मल इमदाद दी थी, उसी तरह मैं भी बज़रिये अपने छापामारों शिवा-महेश्वर-की रज़ाकी ख़ातिर नवाब बहादुरको तहस नहस करनेसे हर्गिज़ बाज़ न आऊँगा।

मुमताज़ खाँ—सपनोंके खल्क़में सैर करनेवाले उस शैतानका यह एक शिग़ाफ़ा है। वर्ना हमारे जीते जी हमारे मालिक-की तौहीन करनेकी उसमें जुर्रात कहाँ ?

शाइस्ता खाँ—(ग़ुलामसे) जाओ, इस ख़तके जवाबमें उस जङ्गली इन्सानसे ज़बानी तौरपर कहलवा दो, कि अबसे नवाब साहब तुम्हारे बापके पूनाके महलमें ही अपना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सदर मुक़ाम बनावेंगे। चुनाँचे अगर तुममें हिम्मत हो; तो एक जवाँ मर्दकी तरह सामने आकर या जैसे भी हो सके, नवाबकी ताक़त आजमालो।

ग़ुलाम—हुज़ूरके हुक्मकी तामीलकी ख़ातिर यह ख़ादिम आज ही यह पैग़ाम राजगढ़ भेजवा देगा। (प्रस्थान)

यशवन्त सिंह—हुज़ूर, उस शख़्सके ज़रिये की गई आपकी तौहीन सल्तनते मुग़लियाकी बेअदबी है।

शाइस्ता ख़ाँ—महाराजा साहब! हमें इसपर ठण्ढे दिमाग़से ग़ौर करना होगा। ख़ैर, अपनी अमलदारीमें होनेवाली मराठों-की राहजनीके जवाब देनेकी ख़ातिर आप अपनी फ़ौज हरवक्त तैयार रखें और मुमताज, तुम भी अपनी व अपने हमराहियोंकी क़ुमक़के साथ दुश्मनपर अचानक धावा बोल, उसे नेश्तनाबूद करनेकी ख़ातिर हमेशा मुस्तैद रहो।

यशवन्त सिंह व मुमताज़ ख़ाँ—(म्यानसे अपनी-अपनी तल-वारें खींच ऊँची करते हुये) हम सल्तनते मुग़लियाके वफ़ादार ओहदेदारान इसके लिये हमेशा तैयार हैं और वक्त़े ज़रूरत दुश्मनको बतला देंगे कि हमारी तलवारोंमें कितना पानी है।

शाइस्ता ख़ाँ—शाबास, मुझे आप लोगोंकी ताक़त व फ़रमाबर-दारीपर नाज़ है। ख़ुदा सल्तनते मुग़लियाको सलामत रखे।

(सल्तनते मुग़लिया ज़िन्दाबादका नारा लगाते सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पञ्चम दृश्य

स्थान—पूनामें मुग़लों-द्वारा अधिकृत राजा शाहजीका राज-प्रासाद।

(अपने शयनागारमें सोताहुआ शाइस्ता ख़ाँ हरमकी बेगमों व लौंड़ियोंकी 'कुप्फ़ार कुप्फ़ारकी' चीत्कार सुनते ही उठ, हाथमें बल्लम लेकर महलमें दाख़िलहुए डाकुओंकी तलाश करता है; कि इतने ही में सदल शिवाजीका ग़ुलामों-समेत नवाबसे मुकाबला होता है और सहसा 'ख़ुदा हाफ़िज़' कहते ढकेलेहुए ख़ाँके धरती पर गिरते ही श्रीमन्त अपनी तलवारसे नवाबका दाहिना अँगूठा काट चेतावनी देते चलते बनते हैं।)

शिवाजी—तूँ अच्छी तरहसे देख ले, मैं ही शिवाजी हूँ। अगर तूँ जल्दसे-जल्द अपनी कुमक़के साथ यहाँसे नहीं भाग जाता, तो मय तेरे ख़ान्दानके तेरा नामोनिशान तक मिटा दिया जायगा। जा बन्दरोंके बानीके मुतल्लिक़ अपने अह-सानफ़रामोश बादशाहसे मुक़म्मिल तौरपर इज़हार करनेसे बाज़ न आना। (चलतेबने शिवाजीको शाही फ़ौजके जवान घेर लेते हैं, परन्तु बाहर खड़े अपने रक्षित सैनिकों-के सहयोगसे ख़तरे के बाजे सुनतेहुए श्रीमन्त नगरसे बाहर चले जाते हैं। आहत ख़ाँ भृत्यों द्वारा बिस्तरेपर लिटा दिया जाता है। इसी कोलाहलमें कराहताहुआ नवाब आक्रमकों-द्वारा अन्य व्यक्तियोंसहित अपने लड़के-की हत्याके ग़मसे रात बिता, शिर नीचाकर सामने बैठे यशवन्तसिंहकी बातें सुनता है।)

यशवन्त सिंह—हुज़ूर! गुज़री रातमें उस क़ातिल मराठेकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शाही महलपर की गई डाकेजनीकी बात सुन मैं तो भौंचक्का रह गया। हुजूरके शाहज़ादे अब्दुलफ़तह ख़ाँकी उन दुश्मनोंके हाथ मारे जानेकी तक़लीफ दिलको जलानेवाली वह आग है, जो ताज़िन्दगी बुझाये नहीं बुझ सकती। हुजूर इस मुसीबतमें मुझे भी शरीक़ समझें। क्या किया जाय, इस रमज़ान पाक़में हुजूरके ऊपर इस बेमिशाल कहर की बिजलीका गिरना सल्तनतके हम सभी फ़रमाबदारोंकी बदक़िस्मती है!

शाइस्ता ख़ाँ—रातकी जिस बदसूरत घड़ीमें मेरे ऊपर यह मुसीबत आई थी, जान पड़ता है उस वक्त़ जनाब शाहंशाहकी ख़िदमतमें ही थे! जिस वक्त़ क़ाफ़िरोंने हमारे ऊपर हमला किया, हमने क़यास किया कि जनाब क़ातिलोंसे लड़तेहुये सीधे बिहिश्तको तशरीफ़ ले गये थे और अब ख़ुतबा पढ़नेकी ग़रज़से यहाँ वारिद हुये हैं। वाह, क्या मुज़ायका है। आफ़रीं है इस दूरन्देशीपर! मैंने जनूबकी सूबेदारी क़बूल करते वक्त़ यह ख़्वाबमें भी नहीं सोचा था कि मैं अपने चारों ओरसे दुश्मनोंसे घिरा हूँ। (ख़ाँका मारे ग़ुस्सेके मुँह ढक लेना व महाराजका चलते बनना।)

ग़ुलाम—(सहसा नवाबके पास आकर) हुजूर! मुमताज़ ख़ाँ ख़िदमतमें हाज़िर होना चाहते हैं।

शाइस्ता ख़ाँ—जाओ, उसे यहाँ भेज दो। (ग़ुलामका प्रस्थान तथा मुमताज़का आगमन)

मुमताज़ ख़ाँ—हुजूर, रातमें ख़ादिमने मुर्तज़ा ख़ाँ वगैरहकी फ़ौजोंके साथ दुश्मनोंका पीछा किया, मगर अँधेरे रास्तोंमें उन मूज़ियोंका पता तक न चला। ग़र्चे दरख़्तोंपर चिराग़ जल रहे थे व भागतेहुये मसाल भी नज़र आ रहे थे,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेकिन गिरते पड़ते सिपाहियोंको सङ्गीन चोटें लगनेके सिवा और कुछ हाथ न लगा। रानीमत हुई कि लेनेके देने नहीं पड़े!

शाइस्ता ख़ाँ—मुमताज़! चाहे फ़रिश्ते भी उसकी इमदादकी ख़ातिर ज़मींपर उतर आवें, लेकिन हमें उस ख़ौफ़नाक़ दुश्मनसे निपट ही लेना है। यहाँसे अभी अभी जानेवाला यशवन्त मेरी समझसे उससे मिल गया हैं, वर्ना ग़ौर उसकी चश्मपोशीके हमपर उधरसे हमला न हो सकता।

मुमताज़ ख़ां—हुज़ूर! मेरा भी ऐसा ही ख़्याल है। हमें क़ाफ़िरों पर हर्गिज़ इतमीनान नहीं करना चाहिये। सो भी यशवन्त जैसेका, जो पहले दाराका हिमायती था; लेकिन उसके बुरे दिन आते ही जो मौजूदा बादशाहका फ़रमावदार बन गया।

शाइस्ता ख़ां—फिर भी इस हमलेमें शरीक़ होनेकी ख़ातिर जवानीतौरपर उससे कह तो ज़रूर ही देना।

मुमताज़ ख़ां—हुज़ूरके हुक़्मके तामीलको ख़ातिर यशवन्तसे मिल तावेदार लश्करोंको तय्यार होनेकी तम्बीह देने जाता है।

शाइस्ता ख़ां—ख़ुदा तुम्हें कामयाबी बख़्शे, अल्लाहो अकबर!

(नवाबसे बिदा हो कुछ आगे बढ़नेपर मुमताज़ ख़ां गाने की समाप्तिपर सहसा प्रकट होनेवाले औलिया बने भैरोजी नायकसे बातें करता है।)

गीत

तुम राम कहो, मैं ख़ुदा कहूँ, दर असल ग़रज़ अल्लाहसे है,
तुम धर्म कहो, मैं दीन कहूँ, मतलब तो उसीकी राहसे है;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0-In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं जिसको मस्जिद कहता हूँ, हिन्दूके लिए वह मन्दिर है;
क़ाबामें देखो या काशीमें, हुक्म खुदाई सबपर है।
मैं जिन्हें नमाँजें कहता हूँ, हिन्दूके लिए वह पूजन है,
फिर भी हुजूरके ज़ोरये ही, फ़रमाने इलाही रोशन है;
सिज्दा होता है एक खुदाको, वह माबूद जहाँका है,
जिसने समझा इसको दिलसे, दीने इस्लाम उसीका है।

मुमताज़ खां—पाक़ इस्लामकी इस हिदायतको मेरे कानोंतक पहुँचानेवाले आप कौन हैं ?

औलिया—बीजापुरी सुन्नत जमातके एक छोटेसे गिरोहका उस्ताद, शाह शेख़ अल्ताफ़ हुसैन औलिया !

मुमताज़ खां—शाह साहब ! सल्तनते मुग़लियाके दुश्मन शिवाजीको सर करनेमें आप हमें कौन-सी इमदाद देंगे ?

औलिया—इन्शा अल्लाह, हम फ़क़ीरोंके पास दुआके सिवा और है ही क्या ? क़ाफ़िरोंको इस्लामकी बैयतमें लाना सवाब है और चूँकि उन्हें अपने क़ब्ज़ेमें करना भी इसका एक ज़बर्दस्त ज़रिया है, लिहाज़ा यहाँ एक लमहा भी तमक्कुस न कर जाकर अभी अभी उसके क़िलेको घेर लो, खुदा हाफ़िज़ ! (औलियाका तिरोधान एवं मुमताज़का प्रस्थान)।

[पट-परिवर्तन]

●

छठाँ दृश्य

स्थान—कोण्डणा दुर्गका एक कँगूरा।

(श्रीमन्त शिवाजी, तानाजी तथा आवाजीसे प्रसन्न मुद्रामें बात-चीत कर रहे हैं।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवाजी—बन्धुओ ! प्रायः सभी यह कहते सुने जाते हैं कि भोंसलेने यह किया, वह किया; इसपर विजय पाई, उसपर विजय पायी, परन्तु मैं तो सदैव यही अनुभव करता रहता हूँ कि स्वयं दैवी शक्ति ही हमारे माध्यमसे इन राष्ट्रीय कार्योंको सुसम्पन्न कर रही है। अतः किसकी प्रशंसा की जाय और किसकी भर्त्सना !

तानाजी—भवानीका भ्रू-विलास ही तो जगत्के निखिल कार्योंकी प्रतिपत्ति एवं निष्पत्तिका हेतु है श्रीमन्त !

शिवाजी—फिर भी जानते ही हो, कि किसीने ख़ाँके कानों तक यह ख़बर पहुँचा दी, कि यशवन्त सिंह भोंसलेसे मिल गये हैं, किन्तु तुम्हें तो मालूम ही है न, कि कात्यायनीकी कृपासे ही ख़ाँपर अभियानकी योजनायें निर्णीत हुई थीं, भले ही महाराज यशवन्तसिंह हमसे सहानुभूति रखते हों।

आवाजी—इस रहस्यको न समझनेके कारण ही तो हतप्रभ ख़ाँ मय अपने उमङ्गभरे सरदारोंके चढ़ाई करके हमारे अर्धरात्रिवाले अभियानसे भी कहीं अधिक छके !

तानाजी—हाँ, ख़ाँ साहब अबतक रणबाँकुरे मावलोंको सिर्फ़ पेंड़-पहाड़ोंपर उछलने-कूदनेवाले असंयत बन्दर ही समझते थे और ग़ालिबन् इसीलिये हमारे प्रचण्डवेग नेता भोंसलेकी मर्दानगी देखनेको लालायित थे; लेकिन वे इतना तो ज़रूर ही समझ गये होंगे, कि और तो और, भोंसलेके तोपख़ाने तक, राजनीतिक तिलस्मोंसे भरे हैं। उनके सैनिक मानिन्द टिड्डीदलके ख़ुशी ख़ुर्रम हमारे इस क़िलेके पास आ डटे, लेकिन हमारी तोपोंसे मानिन्द ओलोंके बरसनेवाले गोलोंकी मारसे उन्हें उल्टे-सीधे पूने की राह पकड़ना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पड़ी। ताज्जुब तो यह है कि फ़क़त् एक गोलेने ख़ाँके हाथी फ़तहलश्करको सीधे विहिस्त पहुँचा दिया।

आवाजी—मगर अपने मनसूबे अरण्यरोदन सिद्ध होनेसे ख़ाँके लिये तो दिल्ली भी दूर होती जा रही है। शायद प्रतापराव गुर्जरने उसकी लम्बाई बढ़ाते जानेकी क़सम ले ली है।

तानाजी—सुना तो यहाँ तक जाता है कि निदाघसे सन्तप्त ख़ाँके निदानकी व्यवस्था तो दूर रहे; उसे ढ़ारस बँधानेवाले तक न मुयस्सर हुये। जनाव चले थे हमारे हेमकूट लूटकर सल्तनते मुग़लियाके क़िले तामीर कराने!

शिवाजी—हाँ, नेताजी पालकरकी अश्वारोही सेनाने प्रतापरावके नायकत्वमें मुग़लसेनाको जिस तरह हायतोवा करते पूने की ओर बेतहाशा भागनेको बाध्य किया; उससे जान पड़ता है कि भयभीत ख़ाँको दक्षिणकी सूबेदारी बड़ी मँहगी जँची।

तानाजी—नहीं श्रीमन्त; ख़ाँ बहादुर जब तक जीते रहेंगे, ये घटनायें तबतकके लिये मानिन्द सरदर्दके उन्हें परेशान करती रहेंगी।

आवाजी—अविनीत अफ़ज़ल ख़ाँके धराशायी होने व नीतिनिपुण शाइस्ता ख़ाँके अङ्ग-भङ्ग हो जानेसे, क्रमशः बीजापुर व मुग़ल-साम्राज्यके स्तम्भ टूटने लगे और सम्भवतः इनकी स्मृतियोंके अस्तित्वके लिये उन्हें वस्तुगत आधारकी भी आवश्यकता न पड़ेगी!

शिवाजी—किन्तु हमें यह कदापि न भूलना चाहिये कि अपने राष्ट्रकी स्वाधीनताके मार्गमें अभी हमारा पदार्पणमात्र है।

तानाजी—श्रीमन्त! अपने साध्यके संसिध्यर्थ भवानी हमें बलप्रदान करेंगी, क्योंकि हमारा संस्थान विभीषिका-ग्रस्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानवताके अभिशापोंके उन्मूलनमें संलग्न रहनेको कृत-सङ्कल्प है। सम्भवतः धर्म-व्यवस्थापक हमारे अनेक साधनोंमें अनैतिकताकी गन्ध भी पायेंगे, विशेषकर गुप्त-चरोंके रहस्योद्घाटन-कार्योंमें, तथापि सुखद भविष्यके निर्माणार्थ हम इनमें भी औचित्य देखनेको वाध्य हैं।

शिवाजी—सच है बन्धुवर! परन्तु इस सुखद भविष्यके लिये हमें अपने सगे-सम्बन्धियोंका ही नहीं, अपितु जीवन-सर्वस्वका भी बलिदान करना होगा।

तानाजी—श्रीमन्त! उद्दाम उफान अधिकार-सुखकी निःसारता-से हम अवगत हैं, अतः जो अवश्यम्भावी है उसके लिए चिन्ता ही कैसी? वस्तुतः इस जीवनका और कोई समुचित विकल्प भी तो नहीं है।

शिवाजी—यही हमारी राजनीतिका अवगुण्ठन-रहित सैनिक आदर्श है बन्धुवर, प्राणीके लिए जन्म और मरण अव-श्यम्भावी हैं, परन्तु यदि ये भागवती प्रेरणाके अनुकूल हों तो इनकी भी सार्थकता है। सच तो यह है कि क्षुद्र विला-सियोंके दीर्घकालीन जीवन हुतात्माओंके क्षणमात्रके जीवनके सामने नगण्य हैं।

आवाजी—हिंस्र प्राणियोंसे निरीह मानवताके उद्धारार्थ श्रीमन्तके नेतृत्वमें किये गये हमारे उत्सर्ग इसके साक्षी हैं, जिनसे हमारे भविष्यका स्मृति-पटल भी संबद्ध है।

तानाजी—मेरा भी ऐसा ही विश्वास है कि हमारे मस्तिष्कका सन्तुलन परिस्थितियोंके व्यतिक्रमसे प्रभावित न होगा।

शिवाजी—तो जन्मजात सुभटो! आवश्यकतानुसार हमारे रणकौशलमें सूत्रधारके चामत्कारिक प्रयोगोंके समान परिवर्तन दीखनेपर भी ध्यानतीर्थकी सङ्क्रातिमें स्थित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योगीके समान साध्यमें अक्षुण्णता ही दृष्टिगोचर होगी।

(नेपथ्यसे कोलाहल एवं सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

सप्तम दृश्य

स्थान—दिल्लीके लालक़िलेमें सम्राट् औरङ्गज़ेबका मन्त्रणा-कक्ष। (बादशाह महामात्य ज़फ़र ख़ाँ तथा मिर्ज़ा राजा जय सिंहसे विचार-विमर्श कर रहे हैं।)

औरङ्गज़ेब—मिर्ज़ासाहब! आज मानिन्द चाँदकी रोशनीके यह साफ़ ज़ाहिर हो गया है कि बग़ैर आपकी दिमाग़ी क़ूवत व शमशीरके और किसी इन्सानमें इतनी ताक़त नहीं, जो उस पहाड़ी चूहेको सर कर सके या किन्हीं भी जायज शर्तोंपर उसे यहाँ हाज़िर कर सके, लिहाज़ा इस ज़रूरी मसलेके पाये तक़मीलकी ख़ातिर सल्तनत आपकी ख़िदमत निहायत ज़रूरी समझती है।

जयसिंह—जहाँपनाह! सल्तनकी ख़िदमतमें ही मेरे सरके बाल सफ़ेद हुये हैं, इसलिये मैं इसकी ख़ातिर भी अपनी तरफ़से कुछ उठा न रखूँगा, लेकिन मुश्किल तो यह है कि उस फ़ितरती शख़्सको यह इतमीनान कैसे होगा, कि मुग़ल-दरबारमें हाज़िर होनेसे मेरा फ़ायदा होगा, इसके अलावा उसे हुज़ूरे आलाकी ज़बर्दस्त मुख़ालिफ़त करनेका डर भी तो है?

औरङ्गज़ेब—आख़िर इसी ज़रूरी मसलेके हलकी ख़ातिर तो नाकामयाब मामू साहबको वहाँसे हटाकर बङ्गाल भेजना पड़ा, व आपकी सदारतमें दिलेर व दाऊद हर मानीमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आलीशान शाही लश्करसे लैस होकर उधर जा रहे हैं और इसके साथ ही बज़रिये शाहमल ख़ां बीजापुरकी इमदाद भी तो आपको मिल ही रही हैं, फिर इस मामलेकी निस्बत आपको ज्यादा परेशान होनेका तो कोई सबब ही नहीं दीखता।

ज़फ़र ख़ां—मिर्ज़ासाहब, ज़िन्दगीके आख़िरी अय्याममें सल्तनतकी इतनी और ख़िदमत बजानेसे बाज़ न आयें। दरअसल इस मामलेके मुतल्लिक़ हमें देखना तो यही है कि नवाब व मिर्ज़ामेंसे किसका रङ्ग चोखा उतरता है और दिलेर व दाऊदमेंसे कौन मिर्ज़ा साहबके सरपर फ़तहका सेहरा बाँधता है!

औरङ्गज़ेब—ठीक कहते हैं वज़ीरे आज़म, मैंने कश्मीर जाते वक़्त ग़ुस्सेकी वजहसे नहीं, बल्कि इसलिये मामू साहबके बङ्गालकी सूबेदारीपर जाते हुये मिलना ज़रूरी न समझा, कि वे मेरे कड़े रुखका लिहाज़ रख वहांकी मातदिल आबोहवासे कामयाबीका फ़न हासिल कर लें। ख़ुदाका शुक्र है कि मेरा सोचना सच था, लिहाज़ा जनूबसे लौटनेपर यशवन्तके मुतल्लिक़ भी कोई ऐसी ही तदबीर अमलमें लाई जायगी।

ज़फ़र ख़ां—मगर मेरी समझसे तो मिर्ज़ा साहब ख़ुद ही हरफ़न माहिर हैं!

औरङ्गज़ेब—इसीसे तो जनूबी मसायलको सुलझानेकी ख़ातिर सल्तनतको इनकी सख़्त ज़रूरत महसूस हुई।

जयसिंह—ताहम इस मामलेमें मुझे हुज़ूरे आलाकी तालिबिल्मियत तो क़बूल करनी ही होगी!

औरङ्गज़ेब—इन्शा अल्लाह, पहले तो ख़ुद आपको वास्ते अपनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिफ़ाज़तमें हरवक्त चौकन्ना रहना होगा; इसके वाद वक़्ते ज़रूरत कुछ मराठे भले ही आपका साथ देते नज़र आयें, मगर उनका ज़्यादा यक़ीन करना मुनासिव न होगा। इसके सिवा वड़े पैमानेवाली आपकी फ़ौजके ज़रिये अपनी अमलदारीका वहुत सा हिस्सा निकल जाने से अगर वह शख़्स आपसे सुलह करना चाहे, तो आपको लाज़िम होगा कि अपने हाथमें तुलसीका पत्ता रख, उसके सामने क़सम खायेंगे कि शाही दरवारमें हाज़िर होनेपर तुम्हारे जानो-मालकी ज़िम्मेदारी मुझपर होगी व तुम राजा और तुम्हारा लड़का पँचहज़ारी वनाया जायगा।

जयसिंह—मैं भरसक ऐसी कोशिशें तो करूँगा ही, लेकिन उसका मेरे ऊपर यक़ीन करना भी तो मुश्किल ही है! भला वह ऐसा कर ख़ुदक़ुशी करेगा?

औरङ्गज़ेव—जहाँ चाह है, वहाँ राह है मिर्ज़ा साहव!

जयसिंह—आलीजाह! मैं हुज़ूरेआलाकी तालिविल्मियत क़वूल करते हुये भी यह अर्ज़ करना चाहता हूँ कि शिवाजी सिर्फ़ हिन्दुओंका ही नहीं, वल्कि समूचे जनूवी हिन्दोस्तानका अपनेको पैग़म्वर समझता है। सुनता हूँ कि एक दफ़ा वह पालकीमें वैठ, प्रवल-गढ़की निगरानी कर रहा था कि अचानक उसका दुशाला किसी दरख़्तकी टहनीमें उलझकर ज़मीनपर गिर पड़ा और वह वहीं उतरकर वहाँकी धरती खुदवाने लगा, जिससे वहाँ उसके हाथ एक वड़ा ख़ज़ाना लगा। उसके पास इसी क़दरकी और भी करामातें हैं, जिनसे जनूवी अहले तशा तो उसे हिन्दुओंसे भी कहीं ज़्यादा वड़ा मर्तवा देते हैं।

ज़फ़र ख़ाँ—मगर मिर्ज़ा साहव, आपका राजपूताना तो उसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपना पीर या पैग़म्बर समझनेकी ग़ुस्ताख़ी नहीं ही कर सकता। हदीसोंमें तरमीमकी बात सोचनेवाले व बज़रिये तवर्रा मज़हबी तअस्सुब फैलानेवाले मुनकिर व नकीरसे व वेफ़िक्र शियोंकी बात छोड़ें।

जयसिंह—राजपूतानेमें तो उसकी दाल नहीं ही गल सकती।

औरङ्गज़ेब—यही होना भी चाहिये मिर्ज़ा साहब, एक नाक़िस इन्सानको ख़ुदाका पैग़म्बर समझ लेना किसीभी दीनदारके लिये गुनाह है, क्योंकि हुज़ूरकी नबूअतके रोशन होनेके बाद दुनियाँमें अब कोई भी नबी आनेवाला नहीं है, फिर भी अगर कोई किसी बाज़ीगरके करिश्मोंको देख या किसी नजूमीकी बातें सच होती देख; उसे ख़ुदाका पैग़म्बर या नबी समझ ले तो यह उसकी नादानी है।

जयसिंह—इसे मैं भी समझता हूँ आलीजाह! मगर उसके चमत्कार तो हमें अचम्भेमें डाल ही देते हैं। सुनता हूँ कि वह कहींसे भी एकाएक ग़ायब हो जाता है, इसके सिवा यह भी पता चला है कि उसे किसी मर्तबेवाली भवानीके ज़रिये इल्हाम होता है।

औरङ्गज़ेब—सुनी सुनाई बातोंपर यक़ीन करना नासमझनी है। बेहतर होगा कि अगर उसे मेराज हुआ है, तो वह शाही दरबारमें हाज़िर होकर अपनी शिफ़ाते मलक़ूतीसे सैकड़ों इन्सानोंके देखते-देखते ग़ायब हों जाय।

ज़फ़रख़ाँ—ख़ुदाबन्द.....

औरङ्गज़ेब—इंशाअल्लाह, आजसे चन्दरोज़ पहले अरबके दो दीनदारोंने शाही दरबारमें हाज़िर होकर बयान किया था, कि हमने शाहनशाहे हिन्दको मदीना मुनौवरह में हुज़ूरकी मज़ार शरीफ़के अन्दर तशरीफ़ लेजानेके ख्वाब देखनेके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बादसे इनकी ख़िदमतमें रहकर अपनी ज़िन्दगी बसर करनेका अहद किया है। लिहाज़ा उन्हें शाही नौकरियोंपर बहाल करते हुये मैंने जो यह तक़रीर की कि ख़ुदाके आख़ीरी नबीके बरक़त दस्तकी मेरे सरपर सायाका होना ही, मेरे खल्क़के इन्सानोंमें अफ़ज़ल होनेका बाअस है; तो यहाँ समझा गया कि बादशाह उन्हें नौकरियोंपर बहालकर उनकी इन बातोंसे ख़ुद अपना फ़ायदा उठा रहे हैं, गर्चे यह दुनियाँकी सभी बुराइयोंके पुलिन्दे हैं। मगर आज मैं पाक परवरदिग़ारके फ़रमानके मुताबिक़ डङ्केकी आवाज़ यह कहे देता हूँ, कि वह पहाड़ी चूहा शाहीदरबारमें हाज़िर होगा और ऐन पचासवीं शाही साल-गिरहके रश्केजह जलसे पर !

ज़फ़र ख़ाँ—मुझे इसका यक़ीन है बअकबाले आली !

जयसिंह—मुझे इसकी उम्मीद है हुज़ूरे आली !

औरङ्गजेब—आप लोग अटकलबाजियाँ करते हैं, लेकिन मैं ख़ुदाकी फ़ज़लसे मानिन्द अब्दालके सब कुछ देखता रहता हूँ। कोई भी इन्सानियतका पुतला अब तक यह समझने में कामयाब नहीं हो सका है कि सब कुछ करतेहुए भी आपका बादशाह अज़ाब व सवाबकी क़ैदसे दर किनार है, इसीसे इसके कामोंकी नुक्ताचीनियाँ तो होती रहती हैं, लेकिन आप जैसे काबिल व सिने रासिदा अबसे इसे समझ लें; कि देखनेमें बुराइयाँ भले ही जान पड़ें, लेकिन आपका बादशाह जो कुछ भी कहता या करता है, ख़ुद ख़ुदा व उसके आख़ीरी नबीके फ़रमानके मुताबिक ही !

जयसिंह—हुज़ूरे आलाकी तक़रीरसे मेरी हिम्मत दुगुनी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो गई है, इसलिए मैं एक हफ़्तेके अन्दर ही जनूबी हिन्दकी ओर कूच करके सल्तनतकी फ़र्ज़-अदायगी कर दूँगा।

ज़फ़र खां—मुझे सल्तनतके वफ़ादारों व अपने शाहनशाहकी ख़ुदापरस्तीपर फ़ख्र है।

औरङ्गजेब—मुझे अपने ख़ुदापरस्त हमराहियोंपर नाज़ है। जनूबी अमलदारीमें जाकर मिर्ज़ा साहबको जो भी तौर तरीक़े इस्तेमालमें लाने पड़ेंगे, उनकी बार-बार ज़िक्र करनेकी मुझे क़तई ज़रूरत नहीं महसूस होती। ख़ुदा आपको अपनी मक़सदमें कामयाबी अता फ़रमावे। सुभान अल्लाह!

(घण्टेकी आवाज़ सुनते ही सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

अष्टम दृश्य

स्थान—पुरन्दरगढ़के सामने अलंकृत प्रशस्त शिविरका मन्त्रणा-कक्ष।

(मिर्ज़ा राजा जयसिंह, राजा शिवाजी तथा श्रीरघुनाथ पन्तसे बात-चीत कर रहे हैं।)

जयसिंह—राजा साहब! आपको समझना चाहिए कि श्री पन्तजी एवं करमाजी तथा स्वयं आपसे भी बार-बार राय-मशविरा हो जानेसे, भूमिगत एवं राजाकी समस्यायें हल होनेके कारण, यद्यपि मुग़लसाम्राज्य आपसे आश्वस्त है, तथापि पदविषयक निर्णयके लिए तो आपको आगरा जानेका कष्ट करना ही होगा।

रघुनाथ पन्त—महामान्य अम्बराधिपको ज्ञात होना चाहिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि श्रीमन्त भोंसले आनुवंशिक राजा हैं; अतः परस्पर औपचारिक वार्ताके पश्चात् सुदृढ़ समझौता हो जानेसे इनकी इतनी दूरकी यात्रा सुखद नहीं प्रतीत होती।

जयसिंह—पण्डित पन्तजी, मैं भी चारों ओरसे विपरीत परिस्थितियोंसे घिरे उसी राजस्थानका राजपूत हूँ, जहाँसे राजा शिवाजीके पूर्वज उर्मिल नर्मदासे भी दक्षिणके इस प्रदेशमें आये। अतः मैंने आगरा पहुँचनेपर जिस प्रकार शपथपूर्वक आप लोगोंकी सुरक्षाका भार अपने ऊपर लेकर यह स्पष्ट करदिया है, कि मेरे लिए आयुष्मान् रामसिंह व चिरञ्जीवी शिवाजीमें कोई अन्तर नहीं है, उसी प्रकार आपके राजपरिवारकी सुरक्षाका भार भी मैं निशीथकी इस इस पुण्यमयी वेलामें अपने ऊपर लेता हूँ।

शिवाजी—पितृतुल्य अम्बराधिपतिके आश्वासन मात्रसे यद्यपि भोंसल अपनेको सन्तुष्ट समझते हैं, तथापि जो कार्य आगरासे निष्पन्न होनेवाले हैं, यदि सम्राट्के प्रतिनिधिरूपमें आप यहीं सम्पन्न कर सकें, तो समय-श्रम एवं अर्थादिकोंकी अनायास ही बचत होगी। आशा है भयको मानसिक दुर्बलताकी संज्ञा देनेवाले गो-ब्राह्मणोंके प्रसादसे आप्यायित हमारे सूर्यकुलकी निष्कपट बातें सुननेके आप अभ्यस्त होंगे।

जयसिंह—यद्यपि हम यहाँ मुग़लसाम्राज्यके कर्मचारी हैं, तथापि सीसौदियाकुलतिलक! तुम्हारी प्रेरणासे इस अन्तरालमें सोता हुआ छात्र सदाको जाग उठा है। (भगवानका स्मरणकर) श्री लक्ष्मीनारायणजी! वर दो, कि अब फिर मुझे मुग़ल-दरबारमें न जाकर तुम्हारे विभ्राट् चरणों-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में विश्राम मिले। हृषीकेश! मुझे इस संकटकालीन स्थितिसे उबारो। (कण्ठावरोध)

रघुनाथ पन्त—मान्य अम्बरनरेश जब अपने लिए भगवानकी शरण चाहते हैं, तो हमें क्यों आगरा-दरबारमें प्रस्तुत होनेका आदेश देते हैं ?

जयसिंह—विप्रवंशावतंस! विधि-विडंबनावश केवल कर्तव्यकी प्रेरणासे! मुग़लसाम्राज्यके प्रतिनिधिके रूपमें मुझे चिरञ्जीवी शिवाजीको यह आश्वासन देनेका आदेश मिला है कि सपार्षद सम्राट् औरङ्गज़ेब आगरामें क्षत्रियकुल-गौरवसे समानताके स्तरपर मिलकर अपार हर्षित होंगे।

शिवाजी—पितृकल्प अम्बरराजको इस स्थितिमें देख मुझे तो रोमाञ्च हो उठा है। कितना दारुण विद्रूप है; इस विवशताका! (दीर्घ उच्छ्वास)

जयसिंह—सीसौदियाकुल-गौरव; यह तुम्हारी परम्परागत विभूति है। मैं तुम्हारे लोक-विश्रुत साहस या तुम्हारी असामान्य कुलमर्यादाकी अभ्यर्थना करूँ, यह मेरे जैसे प्रारब्धके वशी व्यक्तिके लिए अत्युक्ति होगी; तथापि मेरी इस जीर्णावस्थामें मनोभावोंके रोकनेकी सामर्थ्य नहीं। तुम जिस समय इस दुर्गकी चाभियाँ लेकर रणोन्मत्त दिलेरके पास पहुँचे थे, उस वक़्त अगर मैं वहाँ होता तो न जाने किस भूमिकामें होता। जीवटवाला दिलेर नहीं, अपितु उसके अन्तराल स्थित देवता वहाँ लास्य करती रही होगी!

रघुनाथ पन्त—कौन जाने श्रीमन्त भोंसलेके साक्षात्कारके बाद यही दशा शाहंनशाहकी भी न हो जाय ?

जयसिंह—ब्राह्मणोंका अखण्ड अनुभव ही तो हमारी त्रिपथगा-भारतीय संस्कृतिका चिरन्तन प्रवाह है। अतः रसपेशल एवं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्निग्ध पर्यन्यवत् समवर्ती तुम ब्राह्मणोंकी कृपासे यह कोई अप्रत्याशित घटना भी न होगी। मैं सच्ची बात कह रहा हूँ। जो प्रतिस्पर्धालु दिलेर-कुरैशी होनेसे अपनेको बड़ा समझनेवाले दाऊदसे बातकी बातमें अनबन होनेसे मुझे अपना मुरब्बी समझते हुए भी फटकारकर कहा करता था कि 'जबतक मैं पुरन्दरको फ़तह न कर लूँगा, किसीकी न सुनूँगा, वही शिवाजीके हाथसे इस क़िलेकी कुञ्जियोंकी झङ्कार सुनते ही आकर मुझसे कहने लगा, 'मैं तो उस शख़्सके मुलाहिजाके बाद ख़ुद ही इसका मुरीद हो गया हूँ, लिहाज़ा सल्तनत मुझसे उसकी ख़िलाफ़तकी उम्मीद न रखे, क्योंकि शिवाजी इन्सानियतका जौहर है।

शिवाजी—महाराज! दिलेर ख़ाँ वास्तविक अर्थोंमें दिलेर हैं, अतः उन जैसोंसे किसी भी प्रकारका सम्पर्क हमारे लिए गौरवका विषय है।

जयसिंह—इसीलिये तो आपसे मेरा आग्रह है कि चिरप्रतीक्षित आगरा दरबारमें आपकी उपस्थिति आपकी सुविचारित योजनाओंकी सिद्धिमें सर्वथा सहायक ही होगी, क्योंकि ऐसे अवसरपर वहाँ समस्त भारत एवं अन्य देशोंसे आये राजपुरुषोंसे आपका निकटतम सम्पर्क स्थापित होगा। हम दोनों एक ही सांस्कृतिक वेदिकापर स्थित हैं, तथापि परिस्थितिवश हममें शत्रुता होनेपर भी, हमें यह नहीं भूलना है कि जो मानवताका शत्रु है, वह हम दोनोंका दुश्मन है। अतः आप विश्वास रखें औरङ्गज़ेबके अत्याचारोंसे प्रताड़ित मेरा हृदय ही नहीं, रोम-रोम विद्रोही हो रहा है।

रघुनाथ पन्त—मानसरोवरमें कलहंसवत् अवगाहन करनेवाले स्वाभिमानी क्षत्रियोंके लिये यही उचित भी है, और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कवियोंमें विप्रतमको यही अभीष्ट भी है महाराज !

जयसिंह—किन्तु निर्मोकोंसे ढके इस जीर्ण कलेवरमें औरङ्गजेब-के विरुद्ध होनेवाले भारतव्यापी विप्लवमें भाग लेनेकी शक्ति कहाँ है पन्तजी ! अतः अब तो यही होना चाहिये कि आगामी पीढ़ीके नेता शिवाजी अपने बन्धु रामसिंहसे मिलकर पराधीनताकी आत्मग्लानिको स्वाधीनताके आह्लादमें परिणत करनेमें आपसे प्रेरणा प्राप्त करें।

रघुनाथ पन्त—यही होगा नरनाहर! ज्योतिर्मयी नीहारिका हमें आगराकी ओर आकर्षित कर रही है। इस मङ्गल सम्मि-लनसे प्रभावित हुआ क्षात्र आततायियोंसे हिमकिरीट भारतके रक्षार्थ चिरञ्जीवी हो।

शिवाजी—आगरामें एकत्र होनेवाले चेतना एवं स्फूर्तिसे भ्राज-मान विशाल भारतके दर्शनार्थ आपकी आज्ञा शिरोधार्य है महाराज !

जयसिंह—तथास्तु, रात्रि बीत रही है, अतः विश्राम करना चाहिये।

शिवाजी—जो आज्ञा। (सबका प्रस्थान)

[पटाक्षेप]

●

तृतीय अङ्क

प्रथम दृश्य

स्थान—रायगढ़में श्रीमन्त राजा शिवाजीका मन्त्रणाकक्ष (राजमाता जीजाबाई, मोरोपन्त पेशवा, तानाजी मालापुरे, नीराजी रावजी तथा अणाजी दत्तोसे विचार विमर्श करते हुये श्रीमन्त गम्भीरमुद्रामें दृष्टिगोचर हो रहे हैं।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवाजी—पूज्यतमा माताजी, तथा बन्धुओ ! दाक्षायणीकी प्रेरणा, निष्काम कर्मयोगी समर्थश्रीके आदेश एवं दैवज्ञोंकी भविष्यद्वाणियोंसे विश्वस्त हो; मैंने चिरञ्जीवी शम्भाजी, आपमेंसे कुछ लोगों व शास्त्रास्त्रों एवं रत्नादिसे समृद्ध डेढ़हजार सैनिकोंके साथ प्रायः आगरा जानेका निश्चय कर लिया है। अतः इस अनुपस्थितिमें प्रधान सेनापति प्रतापराव गुर्जर राजपरिवारका संरक्षण करेंगे, तथा पेशवा एवं आवाजी व अणाजीके साथ माताजीके परामर्शसे राजकीय प्रबन्ध सुचारु रूपसे सञ्चालित करेंगे।

मोरोपन्त—(आवाजी व अणाजीकी ओर देख, शिवाजीसे) श्रीमन्तकी महती आज्ञा शिरोधार्य है। भवानी इसके लिये हमें बल प्रदान करें।

अणाजी—कृपया श्रीमन्त हमें बतायेंगे, कि जीवनके चौराहेपर स्थित राजा जयसिंहजीने प्रथितविक्रमकी अनुपस्थितिमें राज्यमें किसी प्रकारकी अशान्ति न फैलने देनेका आश्वासन दिया है; अथवा मुग़ल-दरबारमें उपस्थित होनेपर वहाँ कोई भी दुर्घटना न होने देनेकी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले रखी है ?

शिवाजी—अवश्य, अम्बरनरेशने शपथ-पूर्वक शान्ति एवं सुरक्षापरक सभी बातें स्वीकार की हैं। यद्यपि यह सत्य है, कि युद्ध-द्वारा अर्जित अपने बीस क़िले मय खानदेश नासिक व त्र्यंबकके बहुमूल्य इलाक़ोंके उनको सौंपने पड़े हैं, तथापि कुछ धरतीके साथ केवल बारह दुर्गोंके अपने पास रहजानेपर भी, शाइस्ता खाँसे उनकी समता नहीं की जा सकती।

तानाजी—वीर-पुङ्गव ! अपने निखरे रूपसे अम्बराधिपतिको

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षत्रिय जानते हुये भी हम उनके औरङ्गजेबके अधीन होनेसे शङ्कित हैं। क्योंकि उसके समान विश्वासघाती एवं अपने कुलकी हत्यामें प्रवृत्त हेय व्यक्तिके वादेका मूल्य एक रद्दी काग़ज़के टुकड़ेसे अधिक कूतना निरी आत्मवञ्चना है। कृपया उससे बन्दी बनाये गये उसके पिता शाहजहाँ-द्वारा उसके प्रति व्यक्त इस नज़्मकी भावना-पर श्रीमन्त ध्यान दें—

ऐ पेसर, ईं अजब मुसलमानी, ज़िन्दा पेदरज़ व आब तरसानी।
आफ़रींवाद हिन्दुआँ सदबार, कि मुर्दरामीं देहन्दीय आब।

शिवाजी—बन्धुवर! इसे मैं भी समझता हूँ, तथापि चामुण्डा-की प्रेरणानुसार हमें आगरा जाना ही होगा। उनकी कृपासे बाधक ही साधक भी हो जाते हैं, अन्यथा बीजापुर-की नौकरीसे बर्खास्त सात सौ पठानोंका सैनिकजत्था इतनी तन्मयतासे इस राज्यकी सेवा न कर पाता। (कुछ सोचते हुये) हमारे रोम-रोमको सिहरानेवाला मुरारबाजी प्रभु-का महाबलिदान—जिसकी प्रेरणासे पुरन्दरगढ़ संग्राम द्वारा प्रत्यावर्तित न हो सका—हमें युद्धार्थ आह्वान कर रहा है, फिर भी हमें विश्वास रखना होगा कि इस धैर्यमें भी छलना न होकर प्रगतिकी रूपरेखा सक्रिय है।

अणाजी—श्रीमन्त, हम आपके आज्ञाकारी सैनिक हैं तथापि....

शिवाजी—तथापि कहकर रुक क्यों गये पह्नालाके विजेता! जानते हो, जो कटुसत्यसे आवृत हितार्थ हृदयङ्गम करने-का अभ्यस्त न हो, वह सेनापति हो या मूर्धाभिषिक्त, कदापि सफल मनोरथ नहीं हो सकता।

अणाजी—श्रीमन्तमें हमारी ही नहीं, हमारे संस्कृतिस्रोत अखण्ड भारतकी आकांक्षायें केन्द्रित हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवाजी—अखण्ड भारतीय परम्परा अर्वाचीन कल्पना नहीं, अकाट्य सत्यकी पोषिका है। अतः जिन्हें अपनी सांस्कृतिक मर्यादाओंका आत्मानुभव होगा, वे स्वयं ही आत्म-प्रेरणाओंसे अनुप्राणित हो इसके क्षितिजको आलोकित करने लगेंगे। मेरे जैसे इसके एक घटकका यह कथन किसीपर आक्रोश न समझा जाय कि क्षणिक आवेशमें आ राष्ट्रसेवा प्रवृत्त अपरिपक्व मस्तिष्कोंका भविष्य अन्धकारमय होता है।

मोरोपन्त—श्रीमन्त! यह सार्वभौम सिद्धान्त आजके मुग़ल-साम्राज्यके अप्रत्यूह प्रसारको देखते हुए विचारका विषय हो रहा है।

शिवाजी—पेशवा महोदय! जिनका नैतिक ह्रास हो रहा है, उनका पतन अवश्यम्भावी है! सह्याद्रिकी चट्टानोंसे टकरानेमें प्रयत्नशील औरङ्गज़ेबके विषयमें भावी इतिहास-कार लिखेंगे—औरङ्गज़ेबके मिथ्याचरण उसके साम्राज्यके विनाशक कीटाणुओंके पोषक थे, यद्यपि भभककर बुझने-वाले उसके साम्राज्य-दीपका घटाटोप सर्वाधिक था।

नीराजी—राष्ट्रिय सौभाग्यके कैवर्तक! औरङ्गज़ेबको भेजे गये एक पत्रकी स्मृति मुझे व्यथित कर रही है।

शिवाजी—हम सहर्ष इसे सुननेको प्रस्तुत हैं (सभी श्रीमन्तकी हाँ में हाँ मिलाते हैं।)

नीराजी—श्रीमन्तने सूरतके आखेटसे निवृत्त हो औरङ्गज़ेबको लिखा था—'मैंने तुम्हारे मामा शाइस्ता ख़ांको इधर आकर ऊधम मचानेकी सख्त सज़ा दे दी है, व तुम्हारे सूरतपर धावा बोल, तुम्हारे हिमायतियोंसे धन वसूलकर उन्हें भी नसीहत दे दी है। तुम्हें यह न भूलना चाहिये कि हम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिन्दुओंका इस भारतपर वही हक़ है, जो तुम मुसल्मानों-का अरबपर है। इसलिये तुम्हारे जैसे मुसल्मानोंके सिवा अन्य धर्मावलंबियोंके उपासनास्थलोंको नष्ट-भ्रष्ट करने वालोंको तो यहाँ रहनेका भी कोई हक़ नहीं है, फिर इधर तो तुम्हारे जैसे छक्के-पञ्जेवाले सुन्नियोंका कोई भी काम नहीं हैं, क्योंकि यह तो निजामशाही राज्य है, जिसका मैं पुश्तैनी वज़ीर होनेसे बसी हूँ'—मुझे मालूम है कि उसने इसका कोई भी जवाब नहीं दिया!

शिवाजी—तो क्या इससे यह समझा जाय कि वह इसके उपालम्भस्वरूप हमें आगरामें इसका उत्तर देगा? अच्छा तो यह होगा कि आप एवं रघुनाथ पन्तके नेतृत्वमें उधर चलनेवाला जत्था स्वयं ही उससे इसकी मांग करे।

तानाजी—कौन जाने, ऐसा करनेपर अपने कुकृत्योंसे भारत-व्यापी विद्रोहका प्रश्रयदाता मुग़लोंका धूमकेतु दोज़ख़की आगमें स्वयं ही न झुलस जाय?

अणाजी—(स्मित भावसे) उसके उपचारार्थ भिषगाचार्योंका सङ्गठन तो किया ही जा चुका है।

शिवाजी—लो, अपने साथ ही स्वयं तुमने ही ओरोंकी भी भ्रान्त धारणाओंको निर्मूल कर दिया।

तानाजी—सर्वस्वामिनीके अनुग्रहसे अत्याचारी औरङ्गज़ेबसे त्राण पानेके हेतु हमें दक्षिणा पथके समान ही विकेन्द्रित उत्तर भारतका सहयोग भी अनायास ही मिलनेवाला है, क्योंकि प्रतिक्रियाका यथावसर क्रियाशील होना स्वा-भाविक है। यतः उधरके सफल प्रस्थानके लिए समय कम ही रह गया है, अतः व्यावहार्य व्यवस्थाओंपर विचार करना अत्याश्यक है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवाजी—बन्धुवर! हम उधर चलनेवाले तो मार्गमें भी अपनी योजनायें निर्णीति करते रहेंगे। इस विषयसे सम्बन्धित माताजीके विचार हमारे लिये विशेषरूपसे श्रवणीय एवं मननीय हैं, जो अब तक ध्यानावस्थित भवानीके समान मौन हैं।

जीजाबाई—शिवा तथा यहाँ उपस्थित स्वाधीनताके अनन्य सैनिकों! तुम्हारा अनुराधामें आगराका प्रस्थान भवानीको अभीष्ट है, अत सङ्घर्षके इस नये मोड़में भी कल्याणदर्शन ही हमारा कर्तव्य है। विश्वास रखो, मुग़ल-साम्राज्य आसन्नविष्फोट ज्वालामुखीके मुँहपर अवस्थित है।

मोरो पन्त—इसीसे तो अपने संरक्षणार्थ तरुण आगरा सशक्त श्रीमन्तकी प्रतीक्षाकर रहा है। (नेपथ्यसे गीत सुनी जाती है।)

गीत

प्रलयङ्कर शङ्करकी जय हो, हों अवढरदानी।
आर्यवृत्तके विजय-हेतु, जन-मन-गण-सेनानी॥
तुमसे विनती है जगद्बीज! हे सृष्टि-तत्त्व-ज्ञानी!
वर दो, शिवोदयार्थ सङ्ग ले, स्कन्द-गणेश-भवानी॥

(श्रद्धालु भावमें स्थित सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

द्वितीय दृश्य

स्थान—आगरामें सम्राट् औरङ्गज़ेबकी पचासवीं वर्षगाँठके उपलक्षमें सुसज्जित दीवाने आम।

(क़लामे मज़ीदकी आयतें सुनाई पड़ते ही विशिष्ट भृत्य चिल्लाता है—'वा अदब वाजिहाज़ होशियार, दीने पनाह आलीजाह जनाब अबुल मुज़फ्फर मुईनुद्दीन मुहम्मद ज़िन्दापीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आलमगीर, जहाँपनाह शाहनशाहे हिन्द ग़ाज़ी; अपनी पचासवीं सालगिरहकी रौनक़से तख़्ते ताऊसको रोशनकर दीवाने आमकी इल्तज़ायें मञ्ज़ूर करनेकी ख़ातिर दरबार-में तशरीफ़ ला रहे हैं', इसके समाप्त होते-होते अङ्गरक्षकों व मुल्ला-मुफ़्तियोंके साथ बादशाहके दरबारमें आते ही अल्लाहो अकबर, शाहनशाहे हिन्द ग़ाज़ी ज़िन्दाबाद व सल्तनते मुग़लिया ज़िन्दाबाद आदिके नारोंसे आसमान गूँज उठता है। सादगीपसन्द बादशाह आजकी अपनी तड़क-भड़कसे दरबारको चकाचौंध करते-'ला इलाह इल्लिल्लाह, सुभान अल्लाह व दीने पनाह शाहनशाहे हिन्द ग़ाज़ीको पचासवीं वरसगाँठ मुबारक हो, के नारोंके बीच ज्योंही तख़्ते ताऊसपर आसीन हो, मलिक ज़फ़र खां एवं महाराज यशवन्त सिंहसे गुप्त बातें करते भेटें स्वीकार करने लगते हैं, श्रीमन्त भोसले अपने नववर्षीय पुत्र शम्भाजी एवं अनुचरोंसहित दरबारमें आनेपर अपने पूर्वप्रधानसेनापति नेताजी पालकर उर्फ़ बुल्ली खाँको यथा-वसर कार्यक्षम देख, कुमार रामसिंहके साथ दो भृत्यों द्वारा चाँदीकी दो थालियोंमें बहुमूल्य द्रव्य सम्राट्की भेंटके लिए भेजवाते हैं; किन्तु शिष्टाचार-विवर्जित बाद-शाह व्यङ्ग वाक्यों द्वारा श्रीमन्तको पास बुलाते हैं।)

औरङ्गजेब—आओ शिवाजी राजा! कहो ख़ैरियत तो है?

शिवाजी—भवानीकी कृपासे सब कुशल-मङ्गल है।

(बादशाहका भृत्यको, तख़्तके पास आये श्रीमन्तको पञ्चहज़ा-रियोंकी कतारमें खड़े करनेका सङ्केत व खड़ा किया जाना)

शिवाजी—(इधर-उधर देख, रामसिंहसे) राजकुमार! यह किस श्रेणीके सरदारोंका स्थान है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria; Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रामसिंह—पञ्चहजारियोंके लिये निश्चत तृतीय श्रेणीका श्रीमन्!

शिवाजी—आपके पिताकी बातोंपर विश्वास करनेका आज मुझे यह कटु फल प्राप्त हुआ है। आपको ज्ञात होना चाहिये कि मैं पुश्तैनी राजा हूँ और पञ्चहजारी मनसव तो मैंने स्वयं अपने अश्वारोही सेनाध्यक्षको दे रखा है। (अगल-बगल देखते हुये) मेरे आगेकी कतारमें यह कौन खड़ा है?

रामसिंह—उदयपुरके भीमासिंहके पुत्र रामसिंह सीसौदिया श्रीमन्! इन्हें पुरन्दरगढ़के घेरेमें वीरता प्रकट करनेके उपलक्षमें पञ्चहजारी बनाया गया है।

शिवाजी—(दरबारके नियमोंका उल्लङ्घन करतेहुये) यह सीसौदिया कुलका घोर अपमान है, जिस परम प्रतापी कुलने हिन्दूकुल-सूर्य साँगा तथा दृढ़प्रतिज्ञ प्रतापको उत्पन्न किया, उसी राष्ट्रोन्नायक कुलमें ऐसे पतित भी उत्पन्न हो गये हैं, जो पृष्ठपोषित इन विदेशी मुग़लोंकी साम्राज्यलिप्साके तृप्त्यर्थ अपने भाइयोंको सत्ताशून्य बनानेमें ही अपना अहोभाग्य समझते हैं। वसुन्धरे! तूँ फट क्यों नहीं जाती? (मूर्छित हो पृथ्वीपर गिर पड़ते हैं।)

औरङ्गज़ेब—(साश्चर्य) यह क्या मामला है रामसिंह?

रामसिंह—जहाँपनाह! शेर जङ्गली है, जिससे इसे यहाँ बहुत गर्मी मालूम पड़ती है, इसीसे यह कुछ बीमार हो गया है, फिर भी भी घबरानेकी कोई ज़रूरत नहीं हैं।

औरङ्गज़ेब—इसके रङ्ग-ढङ्गसे कुछ और ही नज़र आ रहा है रामसिंह!

रामसिंह—इसे माफ़ी अता फ़रमाई जाय ज़िल्ले इलाही!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जानूबी आबो हवामें पले होनेसे इसे शाही रस्मोरिवाज़-का बिल्कुल इल्म नहीं है, लिहाज़ा यहाँकी तड़क-भड़कको देख इसका बेहोश हो जाना ग़ैर मुमकिन न समझा जाय।

औरङ्गज़ेब—इसे इसके ठहरनेकी जगह ले जाकर इसके मुँहपर आबे गुलाब व इत्रका छिड़काव किया जाय। दर-बारकी बर्ख़ास्तगीसे पहले ही दिमाग़दुरुस्तीकी ख़ातिर इसे रुख़्सत दी जाती है।

शिवाजी—(उठाये जानेपर) विश्वासघात, यहाँ आनेपर मुझे अपने प्रति इस प्रकारके घोर दुर्व्यवहारकी स्वप्नमें भी आशङ्का न थी। अपने ऊपर किये गये इस वज्रप्रहार-का बदला मैं दक्षिणसे मुग़ल-साम्राज्यको उखाड़कर लूँगा। ऐ मुग़लोंके अत्याचारसे पिसनेवाले हतवीर्य पुरुषो! इसे कान खोलकर सुन लो, वीरत्वके उन्मेषसे उद्भासित सीसौ दियोंके सम्मानका जहाज लोहूके लहरोंमें तैरता है!

औरङ्गज़ेब—(आग उगलती आंखोंसे दरबारको देखतेहुये) यह मराठा सरदार क्या बड़बड़ा रहा है, क्या इसे सल्तनते मुग़लियाकी हैरतअंगेज़ ताक़तकी वाक़फ़ियत नहीं है? सारा दरबार इसे सुनले कि तैमूरी नस्ल बेअदबी नहीं बर्दाश्त किया करती!

ज़फ़र ख़ाँ—पाग़लोंके दिमाग़ी फ़ितूर सनसनीखेज न समझे जाने चाहिए आलीजाह!

औरङ्गज़ेब—इसे जल्द दरबारसे हटा इसकी दिमाग़दुरुस्ती व इसलाहका मुक़म्मल इन्तज़ाम किया जाय। (गुप्तचर-द्वारा शिवाजीका निश्चित स्थानपर पहुँचना जान) सल-तनते मुग़लिया न किसी की चुनौती बर्दाश्त कर सकती है, न बाबरी औलाद किसीके ज़रिये की गई अपनी तौहीन-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को ही ग़वारा करना जानती है। लिहाज़ा अगर उस पहाड़ी चूहेको यों ही छोड़ दिया गया, तो दुनियाँ समझ लेगी, कि यह ख़ुदादाद सल्तनत महज़ चन्द अमीरो उमरा व राजा-नवाबोंके हाथोंकी कठपुतली है। ख़ैर, आजकी दास्तान तो जनूबमें मिर्ज़ा जयसिहको बादमें भेजी जायगी, मगर शहरफ़ौजदार यहाँ हाज़िर है ?

फ़ौलाद ख़ाँ—(घबराहटके साथ ताज़ीम करते सामने आकर) जहाँपनाह ! आगराका फ़ौजदार फ़ौलाद ख़ाँ हुज़ूरे आलाके फ़रमानको तामीलकी ख़ातिर ख़िदमतमें हाज़िर है; इसे शाही हुक्म अता फ़रमा, इसकी क़िस्मतको रोशन किया जाय।

औरङ्गज़ेब—अपने पाँच हज़ार जवानोंकी क़ुमक़के साथ जाकर फ़ौरन् उस पहाड़ी चूहेके ठहरनेका हाता घेर लो और उसे इत्तला करो, कि वमूजिब शाही फ़रमान तुम मय अपने इन्सानों अपनेको क़ैद समझो व बग़ैर शाही हुक्मके न तुम किसीसे मिल-जुल सकते हो, न तुम्हारे इन्सान ही। इसके साथ ही तुम्हारे शाही दरबारमें हाज़िर होनेकी ही नहीं, बल्कि किसीके ज़रिये फ़रियाद करने तककी सख्त मुमानियत की जा रही है।

फ़ौलाद ख़ाँ—जहाँपनाह ! फ़िद्वी तामील इर्शाद फ़र्ज़ समझ रज़ा चाहता है। (सविनय प्रस्थान)

औरङ्गज़ेब—(विचारमग्न रहनेके बाद गम्भीर मुद्रामें) उस पहाड़ी चूहेने समझ रखा है, कि मुग़लदरबार बीजापुर व गोलकुण्डाके शिया नवाबोंकी रस्मी बैठक है। उसे अभी तक पता नहीं; कि यह दरबार भी ताजमहल व तख्ते ताऊसके मानिन्द आलमका एक तिलस्म है। ख़ैर, अब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह इसे खुद ही महसूसकर लेंगे कि इस जाहो हश्मत हुकूमतकी हस्ती सिर्फ़ उनके ऊल-जलूल ख़तोंके बदतरीन जुमलोंको गवारा करने तक ही पावन्द नहीं है, बल्कि इस ख़ामोशीमें भी इसकी ताक़तका करामाती हाथ काम कर रहा है। (इधर-उधर देखते हुए) आजका दरबार बर्ख़ास्त किया जाता है। (अल्लाहो अकबरका नारा लगाते हुए। सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

तृतीय दृश्य

स्थान—आगरामें बन्दीगृहके रूपमें परिवर्तित राजा शिवाजीका निवासस्थान।

(भवनके प्रकोष्ठमें अपने निकट सहयोगियोंसे संयुक्त श्रीमन्त, रघुनाथ पन्तसे बातें कर रहे हैं।)

रघुनाथ पन्त—श्रीमन्त ! शासनसे परिवेष्ठित होते हुए भी कुमार रामसिंह हमारे छुटकारेके लिए सर्वाधिक प्रयत्नशील हैं, किन्तु शाइस्ता ख़ांकी दुरभिसन्धिसे प्रभावित महामात्य ज़फ़र ख़ाँका ही इसमें प्रमुख हाथ है, फिर भी सम्राट्ने हमारी सेनाको तो सहर्ष महाराष्ट्र लौटनेकी आज्ञा दे ही दी है; इसके अतिरिक्त एड़ी-चोटीके पसीने एक करनेके बाद उन्होंने आपकी मुक्तिके लिए दो शर्तें रखी हैं। पहली यह कि आप अपने चिरञ्जीवीको बतौर गिरवीके यहाँ रख दक्षिण जा सकते हैं और दूसरी यह कि आप यशवन्तसिंहके समान साम्राज्यके भृत्य बन शासनाधिकृत अफ़ग़ानी सूबेमें जाकर बस सकते हैं। सम्राट्ने शिवा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सल्तनतोंको परास्त करनेमें साम्राज्यको सहयोग देनेकी बात तो एकदम ही अस्वीकृतकर दी। ऐसी स्थितिमें यद्यपि संघर्षार्थ हमारे पास कुछ राजपुरुषोंकी शक्ति है, पर वह अपर्याप्त है।

शिवाजी—कठिनाइयोंपर विजयप्राप्तर्थ दैवी शक्तिका आश्रय आवश्यक होता हैं। मेरा प्रति बृहस्पतिवारको व्रत रखना तथा एक-एक भृत्येसे बहनयोग्य टोकरोंमें स्थित फल, मेवे व मिठाइयोंका साधु-फ़क़ीरोंमें वितरण इसीका साधन है। इसके अतिरिक्त मानवताकी अन्य उपासनाओंके कार्योंसे शासक ही नहीं, यहाँके पशु-पक्षीतक परम प्रसन्न हैं।

रघुनाथ पन्त—किन्तु श्रीमन्त, आपके यहाँ चिरस्थायी होनेकी बात अपने गुप्तचरोंसे जानते हुए भी तो सम्राट् आपके परिवारको यहाँ आनेकी स्वीकृति नहीं देते।

शिवाजी—फिर भी उसे यह तो ज्ञात है न, कि कान्तार-केशरी कभी कटघरेसे बाहर नहीं हो सकता ?

रघुनाथ पन्त—इसमें उन्हें सन्देह नहीं है श्रीमन्त, किन्तु.....

शिवाजी—फिर किन्तुका व्यवधान कैसा ?

रघुनाथ पन्त—प्राचीरके भी कान हुआ करते हैं।

शिवाजी—उन्हें भवानीकी प्रेरणासे उपराम होना पड़ेगा।

रघुनाथ पन्त—उद्वेलित आगराके घर-घरमें यह अफ़वाह फैली हुई है, कि श्रीमन्त भोंसले ऐसे विभूति-सम्पन्न योगी हैं, जो अपने वायु रूपसे सहसा अदृश्य हो आते हैं। यही नहीं, नृत्य-गीत जैसी ललित कलाओंके प्रेमी व पारखी तो इस ख़ुसठ बादशाहसे प्राप्त दारुण यातनाओंके तिरोधानार्थ आपके आकांक्षी हो चुके हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवाजी–यहाँके नागरिकोंको सूचित किया जाय, कि भवानीके अनन्त प्रेरणास्रोत निर्जीव पार्थिव उपकरणोंमें भी अदृश्य चैतन्त्य प्रकट करनेमें क्षम हैं।

रघुनाथ पन्त—इस घोषणाके प्रसारणके पहलेसे ही आलमग़ीरी महल इसके केन्द्र बन चुके हैं।

शिवाजी—वे कैसे ? क्या मलयानिल उनमें भी प्रविष्ट हो गया है ? क्या पत्र-पुष्प-विवर्जित करीरवृक्ष कुसुमाकरसे प्रभावित होना चाहते हैं ? क्या विद्ध्वंसार्थ उद्यत शास्त्र-सन्धान पारिजातके सम्मुख कुण्ठित हो रहे हैं ?

रघुनाथ पन्त–अवश्य, विश्वस्त सूत्रसे ज्ञात हुआ है कि मुग़ल-दरबारमें आपके उपस्थित होनेपर वहाँ जो वीभत्स काण्ड हुआ, उसे शाही बेग़मोंके बीच अध्यक्षरूपमें बैठी, बड़ी शाहज़ादी ज़ैबुन्निसा बड़े ध्यानसे देख रही थी। अतः उसके कुछ दिनो बाद अर्धरात्रिमें पागलकी भाँति बड़बड़ाते औरङ्गज़ेबको आपपर वार करने की ग़रज़से तलवार भाँजते देख, उसने सामने आ मानवताके नामपर उन्हें ऐसी फटकार बतायी, कि बाध्य होकर उन्हें आपको आजकी तमाम सुविधायें देनी पड़ीं।

शिवाजी—(चौंककर) भगवती अपनी संरक्षिका शक्तिसे कृत्स्न जगत्को प्रोतितकर नभोमण्डलको आलोकित कर रही हैं। गुरुदेवने जो यहाँ आनेसे पूर्व विपत्तिमें सम्पत्तिके बीजके अन्तर्निधानकी चर्चा की थी, वह आक्षरशः सत्य हो रही है। (अन्तर्वृत्तिस्थ श्रीमन्तके मुखसे भागवती च्छन्दके प्रस्फुटनके अनन्तर दैवी वाणी सुनी जाती हैं, इन सभीको हीराजी फर्ज़न्द लिखने लगते हैं।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दैवी गीत

तुम नर-नारायण; प्रकृति-पुरुष, चिन्मय-अणुमय, भू-निरांवर !
हो राम-कृष्ण, वामन-विराट्, नरसिंह-बुद्ध, जिन-ताण्डवीय हर।
तूँ ही माँ-उमा-भवानी-दुर्गा-ईशानी-गिरजा-गीताऽक्षर।
हो इन्द्र-वरुण, सविता-सावित्री, स्कन्ध-गणेश, वायु-वैश्वानर।
जान-युक्त-युञ्जान तुम्हें ही, होते हैं अविकल अविनश्वर।
साधन भिन्न भले ही हों, पर एकमात्र हो साध्य परात्पर।
देश-काल-पात्राऽनुबन्धसे मुक्त अतः श्रुत-देव्य-ऋषीश्वर !
स्वानुभूति-विज्ञेय वेद-पथमें देखूँ मैं क्षत्र वृहत्तर।
ये अष्टमूर्तिके रूप कह रहें हैं तत्त्वाधीश्वर चिल्लाकर;
क्षणमें हम ध्वंसित कर देंगे, ऐहिक विभवोंको हो प्रलयंकर।
श्रुतिकाम्य तुम्हीं करते सब हो; है अज्ञ बना यान्त्रिक चक्कर।
तुमको ढूँढूँ आचरणोंमें, मैं अपने दो वर शिवा-महेश्वर !

निर्बन्ध शिवा ! तूँ अपने जिस लोकोत्तर जीवनके अभिव्यक्त्यर्थ यहाँ उपस्थित है, वह तेरे सांस्कृतिक सम्मानका हेतु है। तत्त्वद्रष्टा भारतका सौभाग्य तुझसे प्रेरणायें ग्रहण करनेके लिए तेरी ओर आकृष्ट हो रहा है। आज राजसूय-यष्टाओंकी उद्गात्री सकच्छपी सरस्वती तुम्हारा गुणगान कर रही है'।

(नेपथ्यसे 'वक़ील साहब' ! की आवाज़ आते ही 'अभी आया फ़ौजदार साहब !' कहते रघुनाथ पन्त बाहर आ जाते हैं।)

फ़ौलाद खां—कहिए वक़ील साहब ! राजा साहब ख़ैरियतसे तो हैं ?

रघुनाथ पन्त—अब उन्हें यहीं आपहीकी निगरानीमें रहना है, फिर भी उल्टे आप ही मुझसे उनकी ख़ैरियत पूछते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं ! ख़ैर, आपसी ताल्लुक़ातमें ऐसा होता ही रहता है। राजा साहब तो बात-बातमें आप लोगोंकी तारीफ़ें किया करते हैं।

फ़ौलाद ख़ां—अजी वक़ील साहब ! राजा साहब हर दिल-अज़ीज़ इन्सान हैं, फिर भी बग़ैर बुलाये मैं ख़ुद भी उनके नज़दीक नहीं जाता; इसीलिये मैं उनके मुतल्लिक़ पूछ रहा था।

रघुनाथ पन्त—फ़ौजदार साहब ! यह आपकी शराफ़त है। जहाँ तक राजा साहबको ग़ौरसे देखनेसे मालूम होता है, मैं महसूस करता हूँ कि उनकी तबियत दिनपर दिन ख़राब होती जा रही है। आज तो बातें करते-करते वे बेहोश तक हो गये थे। इसलिए अगर जल्द-से-जल्द तजुर्बेकार वैद्यों व हक़ीमोंसे उनका माक़ूल इलाज न कराया गया तो उनकी ज़िन्दगी ख़तरेमें पड़ जायगी व उनके प्राण-पखेरू उड़ जायँगे !

फ़ौलाद ख़ां—आख़िर किन-किन हक़ीमों व वैद्य साहबानसे सिफ़ारिशेंकी जाँय ?

रघुनाथ पन्त—फ़ौजदार साहब ! वैद्य तो रोज़मर्रा राजा साहब-के यहाँ आते-जाते रहते हैं, लेकिन इनसे काम चलते नज़र नहीं आता। इसलिए मेरी समझसे तो यही बेहतर होगा कि आगरा व दिल्लीके जिन वैद्यों व हक़ीमोंपर राजा साहबका इतमीनान हो, उन्हें उनके सामने पेश किया जाय।

फ़ौलाद ख़ां—यही तो मैं भी महसूस करता हूँ वकील साहब !

रघुनाथ पन्त—तो बादशाह सलामतसे इसकी सिफ़ारिश कीजियेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फ़ौलाद ख़ां—सोने-जागने, खाना-खाने व पानी-पीने तककी बातोंकी हरवक्त़ बादशाह सलामतसे सिफ़ारिशें करते रहना मैं ज़रूरी नहीं समझता वक़ील साहब !

रघुनाथ पन्त—फ़ौजदार साहब ! राजा साहबकी ज़िम्मेदारी आपपर है सिर्फ़ यही कहतेहुए मैं आपसे रुख़सत चाहता हूँ, नमस्कार।

फ़ौलाद ख़ां—बन्दगी।

(दोनोंका विभिन्न दिशासे प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

चतुर्थ दृश्य

स्थान—आगरामें बन्दीगृहके रूपमें स्थित राजा शिवाजी-का विश्राम-कक्ष।

(कुमार शम्भाजी व हीराजी एवं अपने उन्नीसवर्षीय भृत्यसे घिरी चारपाईपर तकियेके नीचे पगड़ी रखे लेटे श्रीमन्त मन्द-मन्द स्वरमें कराहनेका नाट्य करते, हक़ीम बने भैरोजी तथा वैद्य बने तानाजीको रघुनाथ पन्त व फ़ौलाद ख़ांके साथ आते देखते हैं।)

हक़ीम—(श्रीमन्तके स्वास्थ्यपरीक्षोपरान्त) वैद्य साहब! राजा साहबका मर्ज़ तो कोई ऐसा ख़तरनाक़ नहीं हैं, जिससे आपके कलके कहनेके मुताबिक़ यह क़यास किया जा सके, कि यह सिर्फ़ चन्दरोज़के मेहमान हैं, लेकिन इतनी बात जो ज़रूर है कि क़ैदमें होनेके रञ्जोग़म व आबो हवाकी तब्दीलीका भी इनकी सेहतपर क़ाफ़ी बुरा असर हुआ है और सौ बातकी एक बात तो यह है कि ज़रकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ख़ातिर इन्सानियतको ज़बह करनेवाले वैदो हक़ीमोंने मर्ज़को तिलका ताड़ बना दिया है।

वैद्य—जनाब हक़ीम साहब बिल्कुल सही फ़रमा रहे हैं। मैं भी अभी चन्द रोज़से ही यहाँ आने लगा हूँ, वर्ना इन्सानियतके तकाज़ेकी अनसुनी करनेवाले उन नामा क़ूलोंसे निपटनेका क़ाफ़ी मौक़ा मिलता। (शिवाजीकी छाती ठोंकते हुये) जान पड़ता है, किसी क़मबख़्तने राजा साहबको कोई ऐसी दवा दे दी है, जिससे अँतड़ियोंमें सर्दी घुस जानेसे यह कराह रहे हैं।

हक़ीम—कहिए राजा साहब! आप गायके ताज़े दूधमें मुर्ग़ीके अण्डे मिलाकर उसका इस्तेमाल कर सकते हैं? (शिवाजीको नकारात्मकरूपमें शिर हिलाते देख) इस वक़्त आप धरम-वरमकी बात छोड़ें, क्योंकि इस क़दरको पर-हेज़गारी ज़िन्दगी रहनेपर ही निभ सकती है। कहिये वैद्य व वक़ील साहबान, आप लोगोंने बतौर नियामत ख़ुदाकी ओरसे इन्सानको अताहुई, इस मुफ़ीद दवाका इस्तेमाल हमारी तरह किया है?

वैद्य—हक़ीम साहब! मैं तो वक़्ते ज़रूरत इन्हें अमलमें लाता ही हूँ, लेकिन हमपेशा तो इन्हें सफ़ेद शालग्राम समझ हर अक़्लमन्दसे इसके इस्तेमालमें लानेकी सिफ़ारिशें किया ही करते हैं। दर असल धर्म या मज़हब कोई ऐसा कच्चा धागा नहीं, जो वक़्ते ज़रूरत किन्हीं चीज़ोंके खाने-पीनेसे टूट जाय।

रघुनाथ पन्त—हक़ीम साहब! ग़र्चे हम शरीयतके पाबन्द आलिमोंके मानिन्द हिन्दू धर्म-शास्त्रोंके पाबन्द हैं, फिर भी जीवनका प्रश्न समझ औषधिरूपमें अण्डेको इस्तेमालमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लानेकी सिफ़ारिश राजा साहबसे करते हैं।

हक़ीम—मुझे खुशी है कि हिन्दू भी इस मामलेमें हमारे ही मानिन्द तङ्गदिलीसे ऊपर हैं। इसीलिये तो हम सेमेतिक हिन्दुओंके एहसानमन्द हैं। कहाँ तक कहा जाय; ख़ुद ख़तनाकी वेहतरीन रस्म वज़रिये हिन्दुओं हमें हासिल हुई। मगर असल वात तो यह है कि राजा साहवने क्या तय किया ? (श्रीमन्तको नकारात्मकरूमें शिर हिलाते देख) जान पड़रा है, आपको इस ज़िन्दगीकी वनिस्वत विहिस्त ही ज्यादा पसन्द है!

वैद्य—मेरा भी ऐसा ही ख्याल है।

हक़ीम—वैद्य साहव! हम वज़रिये अपने शागिर्दों हक़ीम नहीं, मसीहुल्मुल्क़ महसूस किये जाते हैं, वह इसलिए कि हम किसीके बदनके वाहरी व अन्दरूनी मर्जोंके इलाजमें अपने वक्त ज़ाया न कर, मरीज़के दिलो दिमाग़के इलाज़ किया करते हैं। मसलन् वह शख्स जो अपनी किसी दिलपसन्द वीवीके वग़ैर वेचैन होकर हमारे यहाँ आवे और हम उसे दवायें खिला-पिलाकर विला मर्ज़ करना चाहें, तो यह हमारा पागलपन समझा जायगा। लिहाज़ा वह वहादुर, जो जङ्गे आज़ादीके मैदानमें दुश्मनोंपर वार करता या तलवारसे उनके वारको रोकतेहुए मरमिटना पसन्द करता है, क़ैदसे वदतर किसी और वलाको समझ ही नहीं सकता। चुनांचे चलकर हमें शाही ख़िदमतमें अर्ज़ करना है कि मरीज़ ला इलाज़ है।

फ़ौलाद ख़ां—हक़ीम साहब! हम वेवस शाही मुलाज़िमान अपनी मज़वूरियोंके मुतल्लिक़ आपसे इससे ज्यादा और अर्ज़ कर ही क्या सकते हैं, कि राहे ख़ुदापर ज़क़ात करने-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाले राजा साहवकी शराफ़तने हमारे दिलो दिमाग़पर क़ब्ज़ाकर लिया था !

शम्भाजी—(चिन्ताका नाट्य करतेहुए) क्या हमलोग फ़िर कभी आप लोगोंके दर्शन न पा सकेंगे ?

वैद्य—क्यों नहीं वेटा ! वे त्रिलोकीनाथ पानीसे पिण्ड सँवारते हैं। जव तक स्वाँसा तब तक आशा रखी जाती है।

हक़ीम—ग़मग़ीन न हो वेटा ! उस ख़ुदाबन्द क़रीमपर यक़ीन करो, जो हक़ीमोंका भी हक़ीम है।

हीराजी—जनाब हक़ीम साहब व वैद्यजी, हमें तो इस कालिन्दी यमुनाके किनारे वसा व संसारकी सातों तिलस्मोंमें वेहतरीन ताज़महलसे रोशन आगराका क़ैदख़ाना भी इतना भला जँचता है, कि अपने झाड़-झंखाड़वाले मुल्ककी कभी ख़्वाबमें भी याद नहीं आती; फिर हमें या राजा साहवको इससे वाहर होनेकी चिन्ता सतावेगी ही काहेको, जिससे श्रीमन्त इस अवस्थाको प्राप्त होंगे ? दर असल यह रोगग्रस्त हैं, वर्ना हमारे वज़नमें तो अपने मुल्ककी वनिस्वत डेढ़गुना इज़ाफ़ा हो गया है।

हक़ीम—अफ़सोस, उस नवीका पैरोकार इसे माननेको तय्यार नहीं है, जिसने इन्सानकी ख़्वाहिशोंके इम्तहानके वाद इसे ज़नासे वचानेकी ख़ातिर एकके वजाय चार वीवियाँ एक साथ रखनेकी हिदायतकर, इसे अहले सुन्नतमें वाइज़्ज़त दाख़िल होनेमें इम्दाद दी। क्या यह भी कहनेकी ज़रूरत हैं कि आज़ादीके साथ डालोंपर फुदकनेवाला पंछी सोनेके पिंजड़ेमें वन्द होकर, उम्दासे उम्दा चारा पाता हुआ भी, उससे वाहर होनेकी कोशिशें किया करता है ?

(आगन्तुकोंके जाने के वाद शिवाजीके समरूप हीराजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमन्तके कानसे सटकर बातें करते हैं, किन्तु साङ्केतिक बातके बीच शम्भाजीके 'रामसिंह' कहते ही अपने हाथसे इसका मुँह बन्द करतेहुये, शिवाजीकी अँगूठी अपने खुले दक्षिण हस्तकी अँगुलीमें डाल, चादर ओढ़ बिस्तरेपर लेट जाते हैं। नित्यप्रतिके समान पहर दिन रहते एक-एक कँहारसे ढोये जाते योग्य मिठाइयोंसे भरे चार टोकरों-मेंसे, दूसरेमें शिवाके वरदपुत्र शिवाजी तथा तीसरेमें शम्भाजीके कुछ विशेषमात्रामें मिष्ठान्नके निकाल लिए जानेके बाद बैठ जानेपर, इनपर भृत्यद्वारा मिठाइयाँ जमाई जातीं व ओहार डाल दिया जाता है। यथावसर रघुनाथ पन्तके साथ चार हिन्दू कँहार आकर उन्हें उठाकर पूर्ववत् पहरेदारोंके सामनेसे चले जाते हैं।)

[पट-परिवर्तन]

पञ्चम दृश्य

स्थान—आगरासे तीन कोसकी दूरीपर स्थित मथुरा जाने वाले राजमार्गका समीपस्थ एक उपासना-गृह।

(राजा शिवाजी तथा कुमार शम्भाजी, नीराजी रावजी एवं रघुनाथ पन्तसे बात-चीत कर रहे हैं।)

शिवाजी—बन्धुओं! जगदंबाके अनुग्रह, आप्तोंके आशीर्वाद एवं आप लोगोंके साथ ही कुमार रामसिंहके अथक परि-श्रमसे मैं एवं शम्भाजी तो सकुशल यहाँ आ पहुँचे, परन्तु कनिष्ठ बन्धु हीराजी अपने भृत्यके साथ हमारी मुक्तिके हेतु कृतान्तके वरणार्थ हमारेरूपमें वहीं पड़े हैं। अतः मैं आप जैसे ब्राह्मणोंसे कामना करता हूँ, कि आजकी तरह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कलके अपराह्नको भी सफलता-प्राप्तिमें अदृश्य तत्त्वोंका आश्रय प्राप्त हो। वस्तुतः हमारे लिये अपने जीवनको तृणवत् समझनेवाले बन्धुओंकी मुक्ति दैवी सम्पत्वत् गरीयसी है।

रघुनाथ पन्त—श्रीमन्त ! धर्म-पताकाके उन्नयनार्थ माया-स्तूपों-से ऊपर उठा सन्त-समाज इसके लिये सदैव सचेष्ट है। अमरकीर्ति सन्त तुकाराम एवं ऊर्ध्वरेता समर्थश्रीके वैभव आगामी अपराह्नको सहज ही उपलब्ध हों।

नीराजी—मैं भी इसका अनुमोदन करते हुये सर्वभूतों में गूढ़ इन्द्रियाधिष्ठात्रीसे प्रार्थी हूँ, कि वहाँ उपस्थित बन्धुओंकी मुक्तिमें अन्तराय भ्रमके व्यूह स्वयं ध्वस्त हो जाँय, एवं जगज्जननीका प्रसाद पान्थोंका पाथेय हो।

शिवाजी—न्यायाधीश महोदय ! हम टोकरोंमें बैठे यह अनुभव करते बाहर आये हैं; मानो भवानी हमें अपनी गोदमें लेकर स्वयं अपनी द्रुतगतिसे हमारा सञ्चालन कर रही हों; फिर भी बिचारका विषय यह है कि रामसिंहसे हम कैसे उतृण हों ?

शम्भाजी—रामसिंहके उपकारसे हम कैसे मुक्त होंगे ?

नीराजी—तुम्हारे चिरञ्जीवी होनेसे सौम्य !

रघुनाथ पन्त—श्रीमन्त, अम्बर-राजकुमारने ऐसा करके कर्तव्य-पालनमात्र किया है, न कि हमारे प्रति कोई उप-कार, क्योंकि उनके अपरिणामदर्शी पिताका आश्वासन ही तो इस बवण्डर का अग्रदूत था !

शिवाजी—तथापि राजकुमारने जागरूक हो औरङ्गजेबके षड्यन्त्रको विफलकर अपनेको प्रस्फुटित पुण्डरीकवत्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निष्कलङ्क सिद्ध कर दिया है, जिससे हमें उनके प्रति कृतज्ञ तो होना ही चाहिये !

नीराजी—श्रीमन्त ! अभीतक तो हम खुद ही खानावदोश हैं !

शिवाजी—सच कहते हैं, क्योंकि निश्चित योजनानुसार उन दोनोंके वहाँसे तिरोहित होतेही, मुग़लसाम्राज्य विशाल हृदमें पाषाण-निक्षिप्त भ्रमीवत् आन्दोलित हो उठेगा और इसका कोना-कोना गुप्तचरोंके जालसे आक्रान्त हो जायगा। अतः अब हमें सन्तोंकी दो टोलियोंमें विभक्त होकर निश्चित मार्गोंसे महाराष्ट्र पहुँचनेको उद्यत हो जाना चाहिये। मेरा तो चिरञ्जीवी शम्भाजीके साथ अंशुमालीके दर्शनसे पूर्व ही मथुराधाम पहुँचना आवश्यक है, ताकि पेशवाके सम्बन्धी श्रीकृष्णाजीके यहाँ इसे छोड़ सकें, इसके अतिरिक्त मार्ग एवं इधरकी तीर्थ-व्यवस्थाओंके मर्मज्ञ श्रीकृष्णाजीका हमारी सन्यासी टोलीके साथ चलना भी तो इस वर्षाकालमें आवश्यक होगा !

रघुनाथ पन्त—श्रीमन्त ! वैखानसोंकी दूसरी टोलीके सम्बन्ध में कौन सी योजना है ?

शिवाजी—पन्तजी ! न्यायाधीश महोदय इससे अवगत हैं। वैष्णव सन्तोंके रूपमें 'रघुपति राघव राजा राम' की ध्वनि करती दूसरी टोली मर्यादा पुरुषोत्तमके प्रसादसे यथावसर महाराष्ट्र पहुँच जायगी। (नीराजीकी अध्यक्षतामें स्थित आत्मीय जनोंके सोल्लास मूक अभिवादनोंको स्वीकार करते श्रीमन्त, शम्भाजीके साथ, रामसिंह-द्वारा प्रेषित तेजस्वी अश्वपर सवार होनेको अग्रसर होते हैं।)

[पट-परिवर्तन]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

षष्ठ दृश्य

स्थान—आगरामें सम्राट् औरङ्गज़ेबका मन्त्रणा-गृह।

(प्रधानमन्त्री ज़फ़र ख़ाँके साथ बैठे बादशाह कुमार राम सिंहसे बातें कर रहे हैं।)

राम सिंह—जहाँपनाह! राजा शिवाजी मेरे बापके मानिन्द हैं और उन्हींके वादेपर शाही ख़िदमतमें हाज़िर भी हुये, लेकिन लगभग तीन महीनेसे बीमार होते हुये भी, उन्हें क़ैदमें रखा जा रहा है; इस लिये अगर उन्हें कुछ हो गया तो इसकी ज़िम्मेवारी किस पर होगी?

औरङ्गज़ेब—मैं अपनी हस्ब मन्शा उसके साथ सलूक़ करूँगा। इसके दरम्यान तुम्हें व तुम्हारे वालिदको दख़ल देनेकी क़तई ज़रूरत नहीं है!

राम सिंह—आलीजाह! उनकी हालत ख़तरनाक है।

(एक सरदारका आकर बादशाहको अभिवादन करना)

औरङ्गज़ेब—क्या है?

सरदार—हुज़ूरे आला! बज़रिये ख़बरनवीस औरङ्गाबादसे पैग़ाम हासिल हुआ है, कि शिया नवाबान इस्लामी मुल्कोंके ठिकानेदारों व क़ाफ़िर मराठोंसे साँठ-गाँठ जोड़कर शाही लश्करसे लोहा लेनेकी फ़िराक़में हैं। ताज्जुब तो यह है कि बज़रिये फ़िरङ्गियों इन्हें मुँहमाँगी गोले-बारूदोंकी इमदाद मिल रही है; इसके सिवा अपनी क़ीमियाँगरीसे चन्द छिपे रुस्तमोंने रियायाको गुमराह करना भी शुरू कर दिया है; यहाँ तक कि इस्लाममें दाख़िलहुये हिन्दुओंको फिर वापस लौटा रहे हैं।

औरङ्गज़ेब—वल्लाह, मुझे अपनी रूहानी ताक़तसे इसका पता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहले ही लग चुका है; लिहाज़ा अपने कारनामोंके अञ्जामसे नावाक़िफ़ उन दुश्मनोंके सर कुचलनेकी ख़ातिर ताज़ी फ़ौज उधर पहुँचना ही चाहती है। (सरदारका सविनय प्रस्थान तथा ग़ुलामका आगमन)

ग़ुलाम—जहाँपनाह शहरफ़ौजदार फ़ौलाद ख़ां साहब शाही ख़िदमतमें हाज़िर होना चाहते हैं।

औरङ्गज़ेब—जाओ, उसे यहाँ भेज दो। (ग़ुलामका प्रस्थान तथा फ़ौजदारका सामने आ ताज़ीमकर खड़ा रहना)

औरङ्गज़ेब—फ़ौजदार! तुम मानिन्द काठ खड़े क्यों हो? जो भी अर्ज़ करना हो बख़ुशी करो।

फ़ौजदार—हुज़ूरे आला.....

औरङ्गज़ेब—डरो मत, तुम्हारे क़सूर माफ़ किये जाँयगे।

फ़ौलाद ख़ां—जहाँपनाह! इतने सख़्त पहरेके बावजूद पता नहीं, वह मूज़ी शिवाजी किस क़दर हिरासतसे निकल भागा।

औरङ्गज़ेब—(उद्विग्नतासे तड़पकर) तुम अपनी इसी अक़्लकी बदौलत आगराकी फ़ौजदारी करने चले हो? तुम्हारी इस बेवक़ूफ़ीसे हुक़ूमतके दस सालके किये करायेपर पानी फिर गया। (विचारमग्न रहनेके बाद) उसके हमराहियोंके मुतल्लिक़ अगर कुछ जानते हो, तो उसकी क़ैफ़ियत अभी-अभी बयान करो, ताकि इससे उस दुश्मनका कोई सूराग़ मिल सके?

फ़ौलाद ख़ां—(थर-थर काँपतेहुए) हुज़ूरे आला! हीराजी व उसके नौकरको यह कहते हुये कि 'राजा साहबकी तबियत बहुत ख़राब है, तुम लोग शोर-ग़ुल न करो' पहरेदारोंने बाहर जाते देखा, लेकिन नियत वक़्त तक़

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उनके लौटकर न आनेपर उन्होंने बड़ी दौड़-धूप की, व उस दुश्मनके रहनेकी जगहकी तलाश की, मगर वहाँ किसी मुरङ्ग वग़ैरहका भी पता न चला। ताज्जुब तोयह है कि मेरे एड़ी-चोटीके पसीने एक करनेपर भी कुछ पता चलना तो दूर, उसके सरो सामानके टुकड़े तक नसीब न हो सके। पाँच सौ जवानोंके मुस्तैद पहरेके बावजूद व रात भर झाड़-फ़ानूस जलते रहनेपर भी, वह कैसे निकल भागा, इसका क़तई इल्म न होनेसे मुझे माफ़ी अता फ़रमाई जाय आलीजाह !

औरङ्गज़ेब—तुम उसके इन्सानोंके बाहर जाते वक्त़ वहाँ हाज़िर थे ?

फ़ौलाद ख़ां—नहीं जहाँपनाह ! नमाज़ पढ़ने गया था।

औरङ्गज़ेब—(रामसिंहकी ओर घूरकर देखतेहुये) मैं अपनी रूहानी ताक़तसे इसे बख़ूबी समझ चुका हूँ कि तुम इस मामलेमें बिल्कुल बेक़सूर हो ! दरअसल गुनाहगार तो यह हैं, जो उसे भगाकर यहाँ सफ़ाई पेश करने चले हैं। रामसिंह ! तुम इसे समझ लो कि इस्लामी रवायस नमक हरामोंको माफ़ करना नहीं जानती। (फ़ौजदारसे) बेक़सूर होनेसे तुन्हें माफ़ी दी जाती है। (फ़ौजदारका सविनय प्रस्थान)

रामसिंह—आलीजाह हमारे मालिक हैं, इसलिये हमारी ज़िन्दगी व मौत तो आपकी मर्ज़ीपर ही मुनहसर है, लेकिन आगरा-के कोने-कोनेमें उसके हवाकी शकलमें तब्दील होकर ग़ायब होनेकी अफ़वाह तो महीनोंसे फैल रही थी, जो सच निकली। जहाँपनाह इसे सच मानें कि इस वाकयामें मेरा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कतई हाथ नहीं है। दरअसल उसकी ज़िम्मेदारी तो मुझसे लेकर फ़ौजदार साहबको ही सुपुर्द की गई थी!

औरङ्गज़ेब—मैं तुम्हारी इन लचर दलीलोंको नहीं मानता। चूँकि उसके भगानेमें तुम्हारा हाथ है, इसलिये तुम्हें क़त्ल कर डालनेमें ही सल्तनत का फ़ायदा है।

ज़फ़र खाँ—बादशाह सलामत! अब इन्हें क़त्ल कर डालनेसे भी तो वह दग़ाबाज़ हुक़ूमतके हाथ लगनेवाला नहीं है; इसलिये इन्हें ऐसी सज़ा देनी चाहिये, जिससे यह अपनी गुस्ताख़ीसे नादिम हो, जल्द से जल्द उस भगोड़ेको गिरफ़्तार करानेमें सल्तनतको मुक़म्मिल इमदाद दे सकें।

औरङ्गज़ेब—जाओ, उस दुश्मनको सल्तनतके हवाले करनेकी ग़रज़से तुम्हें लम्बे अरसेका मौक़ा दिया जाता है। (राम सिंहका सविनय प्रस्थान)

ज़फ़र खाँ—जहाँपनाह! उस ख़तरनाक़ दुश्मनका पता लगानेकी ख़ातिर ख़ोफ़िया महकमेके अहलकारोंको सिर्फ़ शहरके इर्द गिर्दको ही नहीं, बल्कि हिन्दोस्तानके कोने-कोनेको छान डालनेकी ख़ातिर फ़रमानका जारी होना जरूरी है। इसके सिवा साधु और फ़क़ीरों व दरवेशोंकी शकलमें घूमनेवालों और उनके मठों व तक़ियोंकी तलाशी तो हमारा पहला काम होना चाहिये।

औरङ्गज़ेब—इसके साथ ही उसे गिरफ़्तार करानेवालोंको नक़द इनाम व मनसब अता करनेका शाही एलान किया जाना भी ज़रूरी है।

ज़फ़र खाँ—हुज़ूरे आला! इसी सिलसिलेमें हमें इसपर भी ग़ौर करना है, कि उसके क़ैदसे ग़ायब होनेसे जनूबी अमलदारीमें जो बदइन्तज़ामी फैलेगी; उसके मुतल्लिक़ क्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किया जाय ? अफ़सोस; हिन्दुओंको तो वह विरादराने तौरपर रिश्वतें देकर मिला लेता है और बग़ैर उनके इतनी बड़ी सल्तनतका कोई काम चलनेवाला नहीं है।

औरङ्गज़ेब—इसे जानतेहुये भी मुझे जयसिंह व यशवन्तपर वैसा ही भरोसा था, जैसा उस पहाड़ी चूहेको अपने जहाजी बेड़ेके सदर दौलतख़ाँ व इब्राहीम खाँपर; लेकिन कसौटी-पर खरे न उतरनेसे इनकी गद्दारीका पर्दाफ़ाश हो गया। आख़िर क़ाफ़िर ही तो ठहरे ! नालायक़ मुग़ल शाहजादोंमें आरामतलबीके सबबसे इतना माद्दा नहीं, जो जनूबी मसलेको हल कर सकें, लिहाज़ा मिर्ज़ाके मरहूम होते ही फिर भी यशवन्त इस बार मुअज्ज़मके साथ उधर भेजे जाँयगे। ख़ुदाकी फ़ज़लसे हम इस बार कामयाब होंगे।

ज़फ़र ख़ाँ—बादशाह सलामत ! जब इतने सख़्त पहरेको चकमा देकर वह निकल भागा, तो मेरी समझसे तो यही बेहतर होगा कि शियासल्तनतों, इस्लामी मुल्कोंके ठिकानेदारों व सौदागरों और फ़िरङ्गियोंको शिकस्त देनेकी ख़ातिर किसी भी क़दर उसे अपनी ओर मिलाया जाय और अगर मौतसे पहले जयसिंह फिर भी किसी बहाने उससे दोस्ताना तौरपर मिल सकें, तो छिपे तौरपर ऐसा इन्तज़ाम किया जाय, जिससे मुलाक़ातके वक़्त ही उसे क़त्ल कर डालनेमें आसानी हो।

औरङ्गज़ेब—वज़ीरे आज़म, मैं आपकी राय तहेदिलसे पसन्द करता हूँ। फ़ैयाज़ ख़ुदा हमें अपनी मक़सदमें ज़रूर ही क़ामयाबी बख़्शेगा, क्योंकि हम उस पहाड़ी चूहोंसे सताये-गये हज़ारोंकी हिफ़ाज़त व अदले नौशेरवाँको मात करने-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाले जहाँगीरी इन्साफ़की सलामतीकी ख़ातिर ही जनूबमें अपने क़दम बढ़ा रहे हैं।

ज़फ़र ख़ाँ—ख़ुदाकी रहमतसे हमें अपने दीने पनाहकी सदारतमें आगे बढ़ते खल्क़को ख़ुलफ़ाये राशदीनके ज़िरगेमें दाख़िल करनेका सवाल हासिल हो!

औरङ्गज़ेब—(अल्लाहो अकबरकी ध्वनि होते ही ज़फ़र ख़ाँके जानेके बाद खड़े होकर, स्वगत) या ख़ुदा! मैं तेरी रहमतसे इतनी बड़ी सल्तनतका शाहंशाह होते हुये भी ग़रीबोंके मानिन्द क़ुरान शरीफ़की नक़लकर व टोपियाँ सीकर इन्हींकी आमदनीसे अपनी ग़ुजर करके तुम्हारी इबादतमें परहेज़गारीमें फ़क़ीरोंके मानिन्द अपनी ज़िन्दगी बसर करतेहुए भी क्या इस खल्क़में आकर अब तक अँधेरेमें ही टटोलता रहा हूँ। या माबूद! अपनी ख़ाम ख़यालीसे इस बदतरीन अहमक़ इन्सानसे होनेवाली ग़ल्तियों (रुककर) या गुस्ताख़ियोंको जायज मान क़यामतके रोज़ बख़्सनेका क़रम अता फ़रमाना। यार हमतुल्लिल आलमीन! इसकी ख़ातिर इस नाचीज़ इन्सानकी ओरसे अल्लाहतालासे सिफारिश करनेकी मेहनत ग़वारा करना। (निस्तब्धता)

[पट-परिवर्तन]

सप्तम दृश्य

स्थान—राजगढ़में महाराज शिवाजीके विशेष भवनके सामनेका समृद्ध उद्यान!

(श्रीमन्त राजमाता जीजाबाई, राजकुमार शम्भाजी तथा महादेवी सोयराबाईसे बात-चीत कर रहे हैं।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीजाबाई—शिवा ! आज बीजापुर, गोलकुण्डा तथा मुग़ल-साम्राज्यके बीचमें उत्तरमें सूरत तथा दक्षिणमें विदनूर एवं हुबली तक विस्तृत इस नवोदित साम्राज्यको वृद्धिङ्गत देख कौन-सा राष्ट्रवादी हर्षित न होगा ? उसके लिए यह भी कम सौभाग्यकी बात नहीं है, कि दग़ाबाज़ फ़िरङ्गियोंने तो इस शक्तिका लोहा मान ही लिया है, दिल्लीसल्तनतके ताप्तीके दक्षिणी इलाके भी तुम्हें राजा एवं शम्भाको पञ्च-हजारी समझ सरदेशमुखी समर्पित कर रहे हैं।

शिवाजी—किन्तु माँ ! अपने सगे-सम्बन्धियोंके बलिदानो परान्त ! कोण्डणा सिंहगढ़ बना, परन्तु सिंह तानाजी चला गया। प्रतापराव गुर्जर भी न रहे; और तो और, अम्बर-नरेश जयसिंह व बन्धुवर रामसिंह भी मुग़लोंकी भेदनीति-के भक्ष्य हो गये ! क्या चौथ या सरदेशमुखियाँ इन अपूरणीय क्षतियोंकी पूर्तिकर सकेंगी ?

जीजाबाई—(श्रीमन्तको सान्वना देतीहुई) चिंतित न हो शिवा ! कर्म-रज्जुसे अनुस्यूत देहावस्थिति भी जीवनकी पूर्णता है, यदि वह क्षात्रके रक्षार्थ प्रार्थित हुई हो। अमरलोकके सेनानी तानाका आत्मानुसन्धान उसके कनिष्ठ सूर्याके सिंहगढ़ाध्यक्षके रूपमें करो। शक्तिपुत्र ! तुम अपने उस दिनके सार्वजनीन वर्चस्का स्मरणकर प्रकृतिस्थ हो, जिस दिन अमृतलोककी साम्राज्ञी महासती सईबाईको रोग-शय्यापर छोड़कर अत्याचारी अफ़ज़लपर टूट पड़े थे।

शम्भाजी—(वेदनामयी मुद्रामें) माँ ! इस राज्यकी मृणतृष्णामें हमें क्या-क्या नहीं करना पड़ा; यहाँ तक कि ब्राह्मण व सन्यासी तक बनना पड़ा; किन्तु इस अधिकारसुखसङ्कुल साम्राज्यका स्थायित्व कबतक रहनेवाला है ?

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मीनावाई—तभीतक वत्स, जबतक हममें गृहकलहसे दूर रहनेकी क्षमता रहेगी, एवं हमरा विवेकपूर्ण वीरत्व राष्ट्रको प्रभावित करता रहेगा! तुम्हारे पिछले व्यवहारोंसे अवगत होनेके कारण अबसे मैं तुमसे आशा रखती हूँ, कि आसन्न भविष्यमें ही अपने पिताके छत्रपति होनेके साथ ही युवराज होनेके नाते तुम अपने उत्तरदायित्वको समझोगे। अपनी विमाता सोयराबाईको माता एवं चिरञ्जीवी राजारामको औरसबन्धु समझो वत्स! क्योंकि यही हमारे कुलकी संस्मरणीय मर्यादा रही है!

शम्भाजी—माँ! अपनी कुलपरम्पराको निभानेके हेतु दृढ़-प्रतिज्ञ हूँ। हुई ग़ल्तियाँ क्षम्य समझी जाँय।

सोयराबाई—माँ! अबतक कभी भी मैंने चिरञ्जीवी शम्भाजी एवं आयुष्मान् राजारामको दो दृष्टियोंसे नहीं देखा, मेरे दोनों पुत्रोंमेंसे मेरे प्रति कोई अपने मातृत्वके कर्तव्योंका पालन करे अथवा भले ही न करे।

जीजाबाई—इस अग्रगामी साम्राज्यकी महादेवी एवं युवराजके लिए यही उचित भी है। शिवा! अमृतधाम आर्यपुत्रके स्वरूपावस्थानके बाद मैं हिरण्यरेताके सोपानसे उनके सन्निकट पहुँचनेकी अपनी अत्युत्कट आकांक्षाको रोकनेमें इसीलिए समर्थ हो सकी, कि गागाभट्ट-प्रमुख वेदमूर्तियोंके सहयोगसे सम्पन्न होनेवाले तुम्हारे यज्ञोपवीत तथा छत्र-धारणोत्सवोंको इन चिराभिलषित नेत्रोंसे देख सकूँ। इसके पश्चात् मुझे आथर्वणोंके अनुग्रहसे पारिवारिक शान्तिका अनुभव करतेहुए यथाशीघ्र राजमाताका पद इस जीवन यज्ञकी पूर्णाहुतिके रूपमें शतक्रतुको समर्पितकर पतिलोकको प्रयाण करना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवाजी—माँ ! आगेकी बातें आगे देखी जाँयगी। सम्प्रति पार्थित कलेवरसे यहाँ तिरोहित समर्थश्रीका इस संस्थानमें कौनसा स्थान होगा, जिन्होंने मायातीत श्रीरामकी अवतार तिथिमें आविर्भूत हो, धरित्रीको दया-दाक्षिण्यसे आल्पावितकर दिया है, अर्थ जिनकी वाणीके साथ दौड़ते हैं।

जीजाबाई—शिवा ! शाश्वत ब्रह्मामें प्रवृत्त वे आञ्जनेय वैभव प्रत्यक्ष होना ही चाहते हैं। (सहसा एक भृत्यका प्रवेश)

शिवाजी—क्या है ?

भृत्य—देव ! श्रीमन्तके गुप्तचर विभागके प्रमुख भैरोजी अपने चिरकालीन प्रवासके पश्चात् आकर सेवामें उपस्थित होना-चाहते हैं।

शिवाजी—जाकर ससम्मान उन्हें यहीं उपस्थित होनेकी सूचना दो।

भृत्य—आज्ञा शिरोधार्य है प्रभो ! (प्रस्थान)

जीजाबाई—शिवा ! जैसे सारस्वत कलाकारकी तूलिका अतीन्द्रिय तत्त्वोंको भी प्रत्यक्ष करानेमें क्षम होती है, वैसे ही मेघाडंवर सुवृष्टिके माध्यमसे शर्मोपलब्धिका साधन होता है।

शिवाजी—इसमें सन्देह नहीं हो सकता माँ !

(गुप्तचर विभागके अध्यक्ष भैरोजी नायकका आकर शिवा-परिवारको अभिवादन करना)

शिवाजी—आसनस्थ हो भैरोजी ! कहो बीर छत्रसालका क्या हाल है ? हाँ, यह भी बताओ कि उत्तरी भारतका क्या रङ्ग-ढङ्ग है ?

भैरवजी—(यथास्थान स्थित होकर उपस्थितोंको प्रमुदित करते हुये) पुण्यसलिला भीमाके तटपर श्रीमन्तके साक्षात्कारसे भगवान् प्राणनाथके उस शिष्यको तो प्रगल्भ प्रेरणा मिली,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह बुन्देलखण्डकी स्वाधीनताकी आकृतिमें सामने आती दृष्टिगोचर हो रही है। लेकिन पता नहीं, इस्लामके दीने-पनाह कैसी मनहूस घड़ीमें तख़्तेताऊसपर रौनक़ अफ़रोज़ हुये हैं, कि उनकी हुक़ूमतके औलिया-फ़क़ीरतक बाग़ी होते चले जा रहे हैं। यहाँ तक कि अलख जगानेवाले सत-नामियोंके शरारती कारनामोंसे बइक़बाले आज़म (?) को राहत न मिली और जनाब सोढ़ी सुलतान बाग़ी हो गये। अफ़सोसकी बात यह है कि मुल्लये आज़मके फ़तवेतक इसमें कारगर न हो सके। ताज्जुब तो यह है कि इस्लामके ख़लीफ़ासे मिले शाहनशाहके 'वली'के ख़िताब तकका किसीने लिहाज़ न किया।

शिवाजी—मगर उसके उपहास व इसकी उधेड़-बुनसे तुम्हारा क्या प्रयोजन ?

भैरवजी—नाराज़ न हों महाराज ! श्रीमन्तका पितृतीर्थ मेवाड़ भी मारवाड़ी राठौरोंसे साँठ-गाँठकर ज़िन्दापीरसे लोहा लेनेकी ताक़में है। पता चला है कि हिन्दुआने आफ़तावने तो मज्ज़िले मक़सूदपर पहुँचती मुग़ल हस्तीकी मुतलक़ परवाह न कर, उन्हें ज़ज़ियाके नाम न लेने व मन्दिर-मठोंकी ही नहीं, बल्कि हर क़िस्मोंकी, यहाँ तक कि जानदार बुतों-तकके भी तोड़नेके सवाबी कामसे दस्तबरदार हो जानेकी तम्बीह देते हुये उन्हें कोई ख़ततक लिख भेजा है। लेकिन उसके माक़ूल जवाब भेजनेमें जहाँपनाह (?) को देर इस-लिये हो रही हैं, कि बज़रिये मरहूम-मुरादकी रूहके उन्हें ख्वाबमें पता चला है, कि जनूबी सूबेदार मुअज्ज़म, यश-वन्त सिंह वह हम्मीरराव मोहितेकी इमदादसे उन्हें तख़्तेताऊससे हटा उसपर ख़ुद हावी होना चाहता है और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अराकानके किसी अजनबी क़ब्रिस्तानमें छिपे किबला शुजा-की रूहने तो बज़रिये जिन्नातों उनकी गर्दन ही मरोड़नी शुरू कर दी है।

जीजाबाई—तो क्या दाराशिकोहका प्रेत औरङ्गज़ेबके ऊपर फूलों की वर्षा कर रहा है ?

भैरोजी—माँ ! आप इसी वाक़यासे यह समझ सकती हैं, कि दारा औरङ्गज़ेबके सरपर फूल बरस रहा है या धूल ! एक मरतबा क़त्ल करडालनेकी ग़रज़से मरहूम दाराका एक ज़िगरी दोस्त फ़क़ीर, जब दरबारमें औरङ्गज़ेबके सामने पेश किया गया, तो उसपर तानेकशी करते हुये आलमगीरने उससे पूछा, कि 'कहिये शाह साहब ! आपतो अक्सर यह कहा करते थे, कि इन्सानियतका ज़हूर दारा खल्क़े ख़ुदाका वह शाहनशाह होगा, जैसा कि मुग़ल-खान्दानमें अबतक न कोई हुआ है और न कभी आगे होगा; लेकिन वह क़ाफ़िर आज कहाँ हैं ?' इसके जवाबमें फ़क़ीरने कहा, अगर मय अपने दरबारके आँखें बन्द कर लो, तो ख़ुदाकी फ़ज़लसे इसका ज़वाब पा जाओगे। ऐसा करनेपर मय अपने दरबा-रियों औरङ्गज़ेबने देखा कि तख़्तेताऊससे भी कहीं अधिक रौनकवाले तख़्तपर बैठे दाराशिकोहका नूर चमक रहा है व उसके दरबारमें जहाँ सिर्फ़ बड़ेसे बड़े अमीरो उमरा या राजे नवाब ही नहीं, फ़रिश्ते तक हाज़िर हो, उसका मर्तबा बढ़ा रहे हैं; वहीं किसी कोनेमें चिथड़े लपेटे कमर झुकाये औरङ्गज़ेब झाड़ू लगा रहा है। आँखें खुलनेपर उस फ़क़ीर-को दरबारसे ग़ायब देख औरङ्गज़ेब दाँत खीसते रह गया। (सहसा गीतसङ्गीतयुक्त प्रकाशपुञ्जको सामने आते देख सबकी प्रफुल्लित दृष्टियाँ इधर ही केन्द्रित हो जाती हैं।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीराम-नाम आधार जगत्का है सुन लो सौ वार!
त्याग दो निज सङ्कीर्ण विचार, धर्म कहता है वारं वार,
सँभालो खुद अपनी पतवार, पड़ी नैया है जल-निधि-धार,
सुनो गो-ब्राह्मण-तीर्थ-पुकार, तपः स्वाध्याय न टूटें तार,
खुलें संस्कृतियोंके युग-द्वार, करें राष्ट्रियता नव-संस्कार,
न होवें ग्रस्त विवेक विकार, न विकृत हो भावी संसार,
बढ़े हितकर विज्ञान प्रसार, नियति-नियमोंका हो सत्कार,
यही है राष्ट्रधर्मका सार, करो मानवताका विस्तार ॥ श्रीराम० ॥

('जय जय रघुवीर समर्थ' की ध्वनिके साथ समर्थश्रीके पद धरतीपर पड़ने ही भक्ति एवं उल्लासमयी मुद्रामें उपस्थितोंके शिर धरती चूमने लगते हैं।)

(पट-परिवर्तन)

●

अष्टम दृश्य

स्थान—रायगढ़में भारतकी अखण्डताके प्रतीक भगवाध्वज तथा वारुण पूर्णकलश एवं सांस्कृतिक चित्रों व अन्य उपकरणोंसे मण्डित प्रशस्त राज्याभिषेक मण्डप।

(मन्त्रिपरिषद्से आवृत व युवराज शम्भाजीसे समृद्ध बहुमूल्य रत्नोंसे अलंकृत श्रीमन्त शिवाजी महादेवी सोयराबाईके साथ रत्नजटित सिंहासनासीन हो, शशिप्रभछत्रलिये अणाजी दत्तो तथा धवल चमरधारी नीराजी रावजीसे सेवित हो रहे हैं। वन्दीजन-द्वारा होनेवाला प्रतापी भोंसला राजवंशका यशोगान तथा स्नातकों-द्वारा राजदम्पतिपर होनेवाला समन्त्रक अभिषेक एवं माङ्गलिक द्रव्यप्रक्षेपण अनायास चित्तको आकृष्ट कर लेता है। इतनेमें ही तोपोंकी गड़गड़ाहटके पश्चात् शङ्खध्वनि एवं घड़ीघण्टोंके रवके साथ सौभाग्यवती ब्राह्मणियोंको आरती सजाये माङ्गलिक गीत-गाती आती देख, ज्यों ही वैदिकों-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वारा राज्याभिषेकपरक मन्त्रोच्चार होते देख, राजमाता जीजाबाई एवं समर्थश्री सिंहासनके पास आकर राजतिलक-संस्कार करने लगते हैं–'छत्रपति शिवराज सिंहकी जय' की बार-बार गगनभेदी ध्वनि होती हैं। तदनन्तर हिन्दू-पद-पादशाही-द्वारा अन्य औपचारिक विधियोंके सम्पन्न होनेपर अष्टप्रधानके अध्यक्ष मोरो पन्त पिङ्गले शिवा-साम्राज्यकी नीति घोषित करनेके हेतु व्यासपीठपर आते हैं।

मोरो पन्त—भारतमाताके सुपुत्रो, एवं अन्य राज्योंके प्रतिनिधि-के रूपमें यहाँ उपस्थित मित्रो! माता भवानीके अनुग्रहसे 'जीवो और जीने दो' के नैसर्गिक सिद्धान्तपर आधारित एवं पुण्यश्लोक समर्थश्रीद्वारा प्रत्यावर्तित यह नवोदित साम्राज्य आपलोगोंका हार्दिक स्वागत करतेहुये घोषित करता है कि राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं भौगोलिक स्वावलंबन ही इसके प्रधान अंग हैं; जिनकी मानवसंस्कृति-के विकासके लिये आज सर्वाधिक आवश्यकता है। यद्यपि हमारा ध्येय अपने इस राष्ट्रपर एकच्छत्र सांस्कृतिक साम्राज्यकी स्थापना है, तथापि निखिल जगत्के प्राणियोंके एक ही परमपिताकी सन्तान समझनेके कारण उपासना-भेदसे किसीसे अतिरिक्त कर-ग्रहणका तो कोई विधान ही यहाँ नहीं हैं। इसके अतिरिक्त अपनी राष्ट्रिय सुविधाओंको ध्यानमें रखतेहुये हमारा सहृदयताका व्यवहार सभीसे समान रूपसे रहेगा। परमप्रतापी सूर्य-कुलावतीर्ण महाराज शिवराज सिंहके छत्रपतिके रूपमें जगत्के सम्मुख प्रत्यक्ष होनेके इस महामाङ्गलिक अवसर-पर सूक्ष्म रूपमें अवस्थित इस अबाध नीतिका निर्देशन वहाँ उपस्थित सज्जनोंके हृदयङ्गमका विषय है। (भवानीकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयध्वनिके पश्चात् 'जय जय रघुवीर समर्थ' के गगनभेदी नारेके साथ समर्थश्री व्यासपीठपर आते हैं।

समर्थश्री—हम सभी मानव संज्ञाके प्राणी हैं, तथापि जगत्को प्रकाशित करनेवाली आत्माके अवलोकनमें निरन्तर व्यस्त रहनेके कारण मनुष्य-समाजने हमें ब्राह्मण, साधु, फ़क़ीर औलिया और इसी प्रकारकी और भी बहुतसी सम्मानित उपाधियाँ इसलिये दे रखी हैं, कि हम यथाशक्ति वासनाओं-से निर्लिप्त रहकर ईश्वराधनपूर्वक उनके हितचिन्तनमें भी तल्लीन रहें। हमारी यहाँ उपस्थितिमें भी यही मुख्य हेतु है। अतः यहाँ ही नहीं, सर्वत्र व्याप्त आत्मनिग्रहियोंकी ओरसे हम छत्रपतिकी सफलताकी कामना करतेहुये धर्म-गोप्ता श्रीरामसे प्रार्थना करते हैं, कि उन्हींके आदर्श शासनका अनुकरण यहाँ अजस्र होता रहे। ('जय जय रघुवीर समर्थ-' की ध्वनिके बीच रघुनाथ पन्त व्यासपीठपर आते हैं।)

रघुनाथ पन्त—यद्यपि समर्थ भगवान्के प्रवचनके पश्चात् मुझे कुछ कहना नहीं है, तथापि इस अग्रगामी साम्राज्यके पण्डितप्रधानके नाते मेरा पुनीत कर्त्तव्य है, कि मैं वैदिक ब्राह्मणोंके साथ ही इस समष्टिके प्रति आभार प्रदर्शनो-परान्त सूचित करूँ, कि सभीके सांस्कृतिक केन्द्रोंको इस साम्राज्यमें समानरूपसे सर्वदा संरक्षण प्राप्त होता रहेगा। 'इमां सागरपर्यन्तां हिमवन्मौलिमण्डिताम्॥ महीमेका-तपत्रस्थाम्राजसिंहः प्रशास्तु नः॥ (प्रशस्तिके समाप्त होते ही रघुनाथ पन्तको साधुवाद देती, भवानीकी जय, राजमाता-की जय, छत्रपतिकी जय एवं समर्थ श्रीकी जयकी प्रकाश मयी गगनभेदी ध्वनिके साथ यह सांस्कृतिक महोत्सव हर्षातिरेकमें विलीन हो जाता है।)

[यवनिका]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुद्रक
महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी–१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi